CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

9.2

वंदे मातरम्

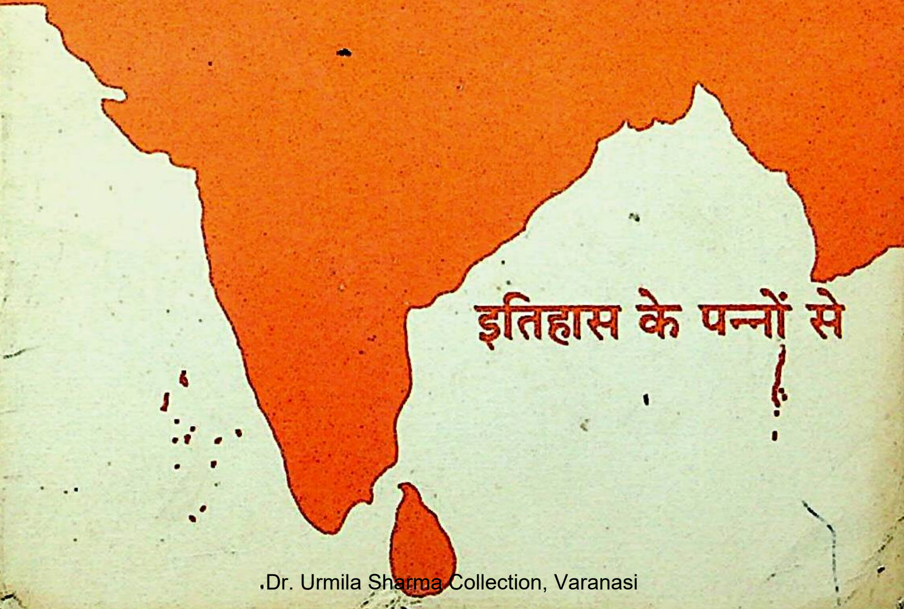

इतिहास के पन्नों से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक :

© सेविका प्रकाशन,
देवी अहल्या मंदिर,
धंतोली, नागपुर-१२.

मुद्रक :

सौरभ प्रिंट प्रोसेस प्रा.लि.
१५७, न्यू रामदासपेठ,
नागपुर-१०.

प्रथम संस्करण :

१९९४ (२१०० प्रति)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

वंदे मातरम्
इतिहास के पन्नों से

सेविका प्रकाशन,
नागपूर

सहयोग शुल्क - २५ रु.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। श्रीः ।।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

(प्रधानकार्यालय-नागपुर)

सरसंघचालक : म.द.देवरस, सरकार्यवाह : हो.वे.शेषाद्रि

दूरभाष : ४३००३/४१५८९ डा. हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर ४४० ००२

पत्र क्र. ४०३/९४ दिनांक ५-३-९४ तिथि माघ कृष्ण ८ शके १९१५

शुभाशिर्वाद

'वंदे मातरम्' यह तो भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध का बीजमंत्र ही है। इसका उद्घोष करते हुए असंख्य देशभक्त क्रांतिवीर, स्वातंत्र्य सैनिक फांसी के तख्त पर हंसते. हंसते चढ़ गये थे। एक दृष्टि से देखा जाए तो 'वंदे मातरम्' का इतिहास यह तो भारतीयों द्वारा परकीय ब्रिटिश अत्याचारी शासन के विरोध में चलाये गये स्वातंत्र्य संग्राम की ही कहानी है। इस देश में वंदेमातरम् का उद्घोष यह देशभक्ति की गर्जना समझी जाती रही। संघ-निर्माता स्व. डॉक्टरजी के जीवन में भी इस मंत्र के उच्चारण से एक तेजस्वी प्रसंग जुड़ा हुआ था।

भारत के राष्ट्रजीवन में श्रीमद्-भगवत्गीता जैसा वंदे मातरम् को एक अनन्यसाधारण महत्त्व व स्थान प्राप्त हुआ है। लेकिन यह देश का दैवदुर्विलास ही कहना होगा कि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी 'वंदेमातरम्' को उचित सन्मान व स्थान प्राप्त नहीं हो सका, किंबहुना उसकी उपेक्षा ही होती रही है।

आज वंदे मातरम् के बारे में अपने देशवासियों को, विशेषतः नवयुवकों को सटीक जानकारी कराने की अतीव आवश्यकता है। वंदे मातरम् की कहानी ज्ञात होने से तथा उसके नित्य गायन से भारत की राष्ट्रीय एकात्मता व अखंडता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का भाव प्रत्येक भारतीय के अंतःकरण में जगेगा। इस दृष्टि से राष्ट्र सेविका समिति की कु. चित्रा जोशी ने अनेक परिश्रम करके 'वंदे मातरम्' से संबंधित बहुत सारे तथ्य, घटनाएँ-प्रसंग पुस्तक के रूप में एकत्रित रूप में उपलब्ध किए हैं। बहुत अध्ययन व संशोधन कर के प्रस्तुत किए गये इस पुस्तक से अपने देश की युवापीढ़ी के लोगों को अपने देश व समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा करने के लिए स्वयं को समर्पित करने की प्रेरणा मिल सकेगी। वंदे मातरम् के रचयिता ऋषि बंकिमचंद्र जी की स्मृति शताब्दि के अवसर पर इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए लेखिका कु. चित्रा जोशी तथा प्रकाशक - सेविका प्रकाशन का मैं मनःपूर्वक अभिनंदन करता हूँ तथा पुस्तक की यश प्राप्ति के लिए मेरी हार्दिक शुभेच्छाएँ भी व्यक्त करता हूँ।

आपका

म. द. देवरस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन की बात

'वंदे मातरम् - इतिहास के पन्नों से' यह पुस्तक बंकिमबाबू की स्मृति शताब्दि वर्ष में प्रसिध्द करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

स्वतंत्रता का मूल्य

वर्तमान हमेशा अतीत के कंधों पर खड़ा रहता है और भविष्य वर्तमान के। हमारी वर्तमान, राजनीतिक स्वतंत्रता १९४७ में हमें सैकडों बलिदानों के कारण ही प्राप्त हुई है। इस स्वाधीनता-प्राप्ति के लिये अनेक माताओं की गोद सूनी हुई। सैंकडों मांगों के सिंदुर मिट गयें। अनेक घर-गृहस्थियाँ उजड गयी। अनेकों को खाने के लाले पडें। यह उन्होंने हंसते हंसते सहन किया, मां के लिये।

'वंदे मातरम्' यह शब्द और गीत दोनों स्वाधीनता-संग्राम में हमारे बलकेन्द्र रहे हैं। परंतु इस गीत का शताधिक वर्षों का इतिहास संघर्षपूर्ण इतिहास है। अंग्रेज, मुस्लिम तथा कुछ भारतीयों की अभारतीय वृत्ति से लडने के बावजूद भी, अमरवेली जैसा वह शाश्वत ऊर्जा केन्द्र है। 'वंदे मातरम्' जैसे मंत्र देश-काल-स्थिति के अनुसार काल के गर्भ से अनायास निर्माण होते हैं। गांधीजी कहते हैं, 'जब तक राष्ट्र है, तब तक यह गीत रहेगा' - परंतु वर्तमान में हमें समाज में उसकी उपेक्षा ही दिखाई देती है। स्वतंत्र भारत में भी संपूर्ण 'वंदेमातरम्' का गायन नही हो रहा है। उसकी संपूर्ण कडियों से समाज और अगली पीढी अपरिचित है। उसका तेजस्वी इतिहास भी हमारी भावी पीढी जानती नही। इतिहास के तथ्य तोड मरोड कर उसके सामने लाये जा रहे हैं। अपने इतिहास की विस्मृति हुआ राष्ट्र पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त करने में असमर्थ रहता है - उसे स्वात्मबोध कदापि नही हो सकता।

अतः 'वंदे मातरम्' के इतिहास से कुछ तथ्य सभी के सामने रखने का प्रयास सेविका प्रकाशन ने किया है। आशा है वाचकों को वह इतिहास उद्बोधक प्रतीत होगा। उनके मन में 'वंदे मातरम्' का भाव जाग्रत होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऋण निर्देश

हमारा यह प्रयास अनेकों की सहायता से सफल हो पाया।

सांसद श्री. राम नाईकजी ने, संसद में उन्होंने किये प्रयासों का विवरण एवं तत्संबंधी उनके निवेदन उपलब्ध करा दियें। सांसद सौ. सुमित्रा महाजन का भी उसमें सहकार्य प्राप्त हुआ।

टिळक स्मारक पुणे ने 'केसरी' तथा 'मराठा' के तत्कालिन अंकों की मायक्रोफिल्म तथा समाचारों को सूचिबध्द किया है। जिससे संदर्भ खोजने में सुविधा रही। उनकी यह व्यवस्था अभ्यासकों के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण देन है।

दिल्ली के 'नेहरू स्मारक और वाचनालय - तीन मूर्ति राष्ट्रीय संग्रहालय' के श्री शर्माजी ने भी हमें कुछ संदर्भ उपलब्ध करायें।

श्री प्रवीण टेंभेकर, सचिव, भाजपा विधिमंडळ कार्यालय, ने मुंबई तथा मद्रास विधानसभा कार्यवाही के दस्तावेज तत्परता से भेजें।

इन सब महानुभावों के हम आभारी हैं।

'वंदे मातरम् का इतिहास' इस पुस्तक के लेखक, श्री विश्वनाथ मुखर्जी से इस विषय पर चर्चा करने का हमें अवसर मिला।

मा. दत्तोपंत ठेंगडीजी ने राष्ट्र सेविका समिति के प्रति सहज स्नेह के कारण ही अपने अत्यंत व्यस्त कार्यक्रमों से और प्रकृति अस्वस्थ होते हुए भी समय निकाल कर पुस्तक की पांडुलिपी पढी, आवश्यक सूचनाएँ की। हम उनके ऋणी है।

प.पू. बालासाहेबजी देवरस का आशिर्वाद इस पुस्तक को प्राप्त हुआ, यह हमारा बडा ही सौभाग्य है।

नागपुर नागरिक सहकारी बैंक के आंशिक आर्थिक सहयोग के लिये हम उनके ऋणी हैं।

मुद्रक - सौरभ प्रिंट प्रोसेस प्रा.लि. के सहयोग से हम आप तक पहुँच पायें। वे भी धन्यवाद के अधिकारी हैं।

स्व. बंकिमबाबू और 'वंदे मातरम्' के लिये सर्वस्व समर्पण करनेवाले ज्ञात-अज्ञात सभी सपूतों को श्रद्धापूर्वक स्मरण कर हम यह कृति लोकार्पण कर रहे हैं।

- संपादिका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारा आग्रह

सभी विद्यालयों में प्रतिदिन संपूर्ण वंदे मातरम् का गायन हो।

सभी सार्वजनिक कार्यक्रमों का समापन 'वंदे-मातरम्' से हो। वंदे-मातरम् गाते समय हम हाथ जोड़कर खड़े रहेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नागपूर नागरिक सहकारी बँक लिमिटेड, नागपूर.

७९, अनाथ विद्यार्थी गृह ले-आऊट, डॉ. आंबेडकर चौक,
सेंट्रल एव्हेन्यू, नागपुर - ४४० ००८.

दूरध्वनी :- ४३५२३, ४०१५६, ४१३८६

भागधारकांच्या, खातेदारांच्या, हितचिंतकांच्या सहकार्याची तीन दशकांतील फलश्रुती.

	३०/६/७३	३०/६/८३	३१/३/९३
१. भाग भांडवल	२७०९२०	१८१८६३०	८३३४१००
२. खेळते भांडवल	५८३७३७८	६७०८४५३१	४२९११३३७५८
३. ठेवी	३४२८४४९	५१३७२६७६	३२०८५८११८
४. ऋण तथा अग्रिम	३३६६३४०	३६०१५४४२	२५६३१८१३२
५. शुध्द नफा	४०३७९	७९८९६३	४९९९९७८

-: शाखा :-

१) इतवारी २) धरमपेठ ३) सीतावर्डी ४) महाल ५) लकडगंज ६) सदर ७) विवेकानंदनगर ८) एम.आय.डी.सी.(हिंगणा रोड) ९) काटोल १०) उमरेड ११) कामठी १२) नरखेड १३) कळमना मार्केट १४) दीनदयालनगर

-: वैशिष्टये :-

१) सहर्ष सहकार्य आणि तत्पर सेवा. २) ठेवीवर राष्ट्रीयकृत बँकापेक्षा अधिक व्याज. ३) बँकेमध्ये असलेल्या रु. १,००,०००/- पर्यंत सर्व ठेवी जमा विमा निगम द्वारा सुरक्षित. ४) विवेकानंदनगर, लकडगंज, महाल, दीनदयालनगर शाखा नागपुर व उमरेड, काटोल शाखांमध्ये सुरक्षित जमा कक्षांची उपलब्धता.

जमनादास शाह — अध्यक्ष

दिवाकर भिकाजी धाक्रस — उपाध्यक्ष

संचालक

सर्वश्री - मनोहर रामचंद्र खोलकुटे, वसंत एकनाथ साल्पेकर, गोविंदलाल बन्सीलालजी सारडा, कैलाशचंद्र अग्रवाल, लाभचंद हस्तीमलजी भुतडा, भालचंद्र आनंदराव उधोजी, प्रमोद नरहर खोलकुटे, मधुकर बाळकृष्ण बडीये, रमेश माणकलालजी मंत्री, डॉ: नंदकिशोर बच्छराजजी व्यास, श्यामबिहारी मनोहरलालजी गोयल, वसंतराय हरिदासजी वोरा, विजयकुमार गोवर्धनदासजी रुठीया, संजय नथ्थूजी भेंडे, दिगंबर रांघोबाजी पराते, डॉ.सौ.शिल्पा श्रीकांत शिलेदार, सौ. मंजूताई प्रभाकरराव लेंडे, रवींद्र त्रिंबकराव सहस्त्रबुध्दे (कर्मचारी प्रतिनिधी)

व. ल. अंबुलकर

सरव्यवस्थापक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम्

वंदे मातरम् !
उन्मत्त दर्प से सप् सप् चली लाठियाँ
फूटें कई सर, चूर-चूर हड्डियाँ-टूटी कलाईयाँ
फिर भी अदम्य रही स्वातंत्र्य की आकांक्षा
युध्दघोष अविराम होता ही रहा
वंदे मातरम् - वंदे मातरम् ।

पाशवी लाठियों की परवाह ही नही
टपकते लहूका ख्याल भी नहीं
मन का क्षितीज क्षणार्ध में आलोकमान हुआ
देशभक्ति की हुंकार मुखरित हुई
वंदे मातरम् - वंदे मातरम् ।

लाठियाँ झेलते-झेलते — घाव सहते-सहते
अभंग मानवसमूह आगे बढ़ता ही रहा
चलते-चलते अगर गिर गया कोई
स्थान उसका लेने तुरंत दौड़ते अनेक
तंतुवाद्य जैसा - घोषवाद्य जैसा एकात्म स्वर से
मन की तह से कंठ झंकारता ही रहा
वंदे मातरम् - वंदे मातरम् ।

स्वाधीनता के लिये सदियों से तरसते
भारत के अबोध मन से
समुद्र की उत्तुंग लहरों पर लहरें
किनारे से टकराती रही, गरजती रही
वंदे मातरम् - वंदे मातरम् ।

पश्चिम बंग के बरिसाल की सड़कों से
उफानती लहरों का दिव्य निनाद
भारत के कणकण से प्रतिध्वनित होता रहा
गुंजायमान हो उठा भरतभू का आसमान
अरिहृदयों को कर गया कंपायमान
कोटि-कोटि कंठों से उभर उठा एकही स्वर
वंदे मातरम् - वंदे मातरम् ।

(शिवरामुलु के अंग्रेजी गद्यकाव्य का स्वैर अनुवाद)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

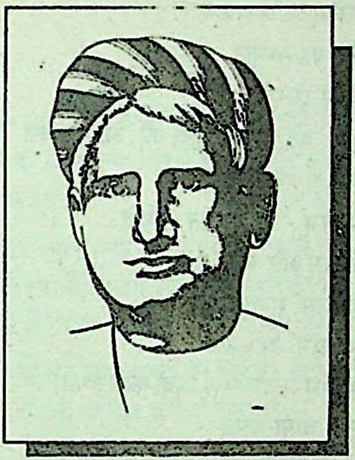

वं. मौसीजी कहती थी - शिक्षक, नेता, वक्ता और लेखक ये समाज के चार आधारस्तंभ है। चाणक्य उत्तम शिक्षक थे - चंद्रगुप्त को तयार कर उन्होंने भारत में सुवर्णयुग लाया। छत्रपति शिवाजी श्रेष्ठ नेता थे - अल्पकाल में उन्होंने हिंदुपदपादशाही स्थापन की। वैसे ही बंकिमजी की लेखनी ने भारतवर्ष में चेतना का युग लाया। उनके 'वंदेमातरम्' ने भारत के इतिहास को नया मोड दिया।

८ अप्रैल १९९४ उनका स्मृतिशताब्दि दिन है। 'वंदेमातरम्' भावजागरण ही उन्हें उचित श्रध्दांजलि है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् - इतिहास के पन्नों से

१) वंदे मातरम् की जन्मकथा
२) राष्ट्रगीत का सम्मान
३) वंगभंग आंदोलन
४) स्वदेशी : वंदे मातरम् तत्त्व की अभिव्यक्ति
५) बरिसाल में प्रथम आघात
६) वंदे मातरम् - अनुशीलन समिति
७) वंदे मातरम् और ध्वज
८) 'वंदे मातरम्' समाचारपत्र
९) 'वंदे मातरम्' अभियोग
१०) वंदे मातरम् आंदोलन में छात्रों का सहभाग
११) गूंज उठा चप्पा-चप्पा
१२) समुद्रपार वंदे मातरम्
१३) सौंप दिया इस जीवन को
१४) संगीत सृष्टि में वंदे मातरम्
१५) विरोध के सूर
१६) राष्ट्रगीत नहीं बन पाया वंदे मातरम्
१७) उपेक्षा ही उपेक्षा
१८) एक ही जयकार वंदे मातरम्

परिशिष्ट

१) ऋषि बंकिमचंद्र - योगी अरविंद
२) वंदे मातरम् में बुतपरस्ती - मौलाना रेजा उल् करीम
३) विदेशों में वंदे मातरम्
४) जनगणमन और रविंद्रबाबू
५) पं. नेहरूजी का वक्तव्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् की जन्मकथा

वंदे मातरम् -

वंदे मातरम्। बकिमचंद्रजी की साहित्यलता पर खिला हुआ सर्वश्रेष्ठ पुष्प। बकिमचंद्रजी की प्रतिभा का संपूर्ण सौंदर्य, सौरभ तथा सुधा की माधुरी इस काव्य में एकत्रित हुई है।

'माँ, इस संकल्पना में क्या नहीं समाया है? इसमें आकाश की विशालता है, धरती की क्षमाशीलता है, स्वर्ग लोक का अमृत है, अमृत की मधुरता है, गंगामैया की शुचिता है, गतिमानता है, निष्काम कर्म का सौरभ है।

माँ की वंदना जैसा अनुपम श्रध्दा का विषय - उसमें बकिमचंद्र जैसों की सात्विक भक्तिपूर्ण लेखनी अर्थात् सोने में सुहाग!

"वंदे मातरम् की जन्मकथा"

"वंदे मातरम्" का जन्म कब और कैसे हुआ इसकी दो-तीन कथाएँ प्रचलित हैं। उनमें सर्वमान्य है कि सन् १८७५ की दुर्गापूजा की छुट्टियों के दिन थे। बकिमचंद्रजी अपने गाँव कांटालपाडा जा रहे थे। गाडी ने कलकत्ता छोडा। बड़े-बड़े मकान, शहर की चहलपहल से वह दूरदूर शहर के बाहर निसर्ग रमणीय प्रदेश से जा रही थी। भारत की, उसमें विशेपकर बंगाल की भूमि महती रमणीय है। "सोनार बांगला" ऐसा उसका वर्णन किया जाता है। बंकिमजी खिड़की से सृष्टिसौंदर्य निहार रहे थे। विस्तीर्ण भूमि, दूर क्षितिज से मिलना चाहती थी, उसका छोर कहीं नजर नहीं आ रहा था। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दृष्टिगोचर हो रही थी। धान के खेत लहलहा रहें थें। तरह-तरह के फूलों से बहरे आये वृक्ष, फलों से लदे हुएँ वृक्ष - धरती माँ के वैभव का दर्शन करा रहे थें। बीच बीच में हरे चराहगाह भी नजर आ रहे थें। कहीं झरने झर झर बह रहे थें। कलकल छलछल करती नदियाँ सागर को मिलने गतिमान थी। तालाव भरे हुए थें। वायु मंद बह रहा था। छोटे छोटे टीले, घाटीयाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

- निसर्ग ने मानो अपना सारा वैभव उन्मुक्तता से बिखेर दिया था। देखते देखते कविहृदय भारत माँ के दर्शन से अभिभूत हो उठा, मन तरल हो गया। भौतिक विश्व का विस्मरण हुआ और उनका व्यक्तित्व माँ के इस अद्भुत रूप से एकाकार हो गया। इस भावविभोर अवस्था में सिंहवाहिनी, त्रिशूलधारिणी, सुवर्णकिरीटिनी माँ का रूप दृग्गोचर हुआ। उसका चेहरा सजीली मुस्कान से आपूरित था। इस दर्शन से उनका रोम रोम पुलकित हो उठा और भावनाओं ने शब्दरुप लिया।

वंदे मातरम्! सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्

और मंत्रोपम, तपःपूत 'वंदे मातरम्' गीत का जन्म हुआ।

दूसरी मान्यता यह है कि 'वंगदर्शन' में रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिये बंकिमचंद्रजी ने यह गीत लिख कर दिया।

कुछ भी हो प्रथम स्वतंत्र रूप से, और तत्पश्चात् 'आनंदमठ' उपन्यास के अभिन्न अंग के रूप में यह गीत संसार के सामने आया। सर्वप्रथम इस गीत एवं उपन्यास को धारावाहिक रूप में प्रकाशित करने का सम्मान 'वंगदर्शन' ने प्राप्त किया।

वंदे मातरम् गीत के समय जो संकल्पना बंकिमचंद्रजी के मन में जाग उठी थी, उसीकी भावनात्मक अभिव्यक्ति है 'आनंदमठ'। 'वंदे मातरम्' यह शब्द, वह संपूर्ण गीत और आनंदमठ का कथानक त्रिदल के रूप में एक आंतरिक संबंध-सूत्रों से बंधे हुएँ हैं - माँ के भक्तिसूत्र से।

'वंदे मातरम्' शब्द में जो भावबीज है वह गीत में प्रस्फुटित हुआ है। अब आगे चल कर आवश्यकता थी कथानक की। बंकिमचंद्रजी की औपन्यासिक प्रतिभा ने यह काम सरलता से कर दिया। 'आनंदमठ' में 'वंदे मातरम्' को केंद्रस्थान में रख कर कथा और तद्नुकूल गतिविधियों का क्रम जोडा गया। 'आनंदमठ' की रचना की - तब यह गीत संतानों का पवित्र मंत्र बन गया।

जिस ढंग से 'आनंदमठ' में इस गीत का उपयोग किया है उससे उनकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलात्मक सूझबूझ का पता चलता है गीत ऊपरसे थोपा हुआ नहीं लगता। भवानंद, महेंद्र आदि व्यक्तिरेखाएँ अत्यंत समर्थ और जीवंत हैं। पढ़ते पढ़ते मन पुलकित होता है, स्तिमित होता है - वीररस का विद्युत्प्रवाह धमनियों में दौड़ने लगता है।

माँ की 'संतान'

'आनंदमठ' में 'वंदे मातरम्' यह 'संतान' संप्रदाय का गीत है। मातृभू की यह संतान कटिबध्द है माँ के लिये . . . . . । जब तक मातृभूमि अत्याचारों और कुशासन से, शोषण और अधार्मिकता से मुक्त नहीं हो जाती तब तक संतान के लिये यह आवश्यक है कि वह अपना समस्त परिवार, पत्नी, और बच्चें, धनदौलत और खुशियों का परित्याग करें। सब इंद्रियों, इच्छाओं का पूरी तरह दमन करें और अपने धर्म के लिये शत्रुओं से युध्द करें, रणक्षेत्र में पीठ दिखाकर न भागें। संतानों की व्यक्तिगत जाति कोई भी हो, आयु कितनी भी हो, उनकी जाति एक ही थी - माँ को गुलामी से मुक्त करने वाली 'संतान'। उसके लिये सर्वस्व समर्पण करने वाली संतान।

प्रेरणा का मूल

श्री. हेमेंद्र घोष के मत से 'वंदे मातरम्' गीत का बीजारोपण चुंचड़ा में हुआ था। यहांके मछुएँ वड़े मधुर गीत गाते थें। चुंचड़ा संबंधी घटना का उल्लेख स्वयं बंकिमचंद्र ने भी किया है - 'एक दिन मैं वर्षाकाल में गंगातीरस्थ किसी भवन में बैठ था। प्रदोपकाल प्रस्फुटित चंद्र-लोक से विशाल विस्तीर्ण भागीरथी लक्षवीची विक्षेपशालिनी मृदु पवन हिल्लोल से तरंग-भंग चंचलचंद्र करमाला लक्ष तारकाओं की तरह प्रस्फुटित हो रही थी। मैं बरामदे में बैठा था और नीचे वर्षा की तीव्रगामी वारिराशि मृदु रव के साथ दौड़ रही थी। आकाश में नक्षत्र और नदीवक्ष पर नौकाओं में प्रकाश, तरंगों पर चंद्ररश्मि। काव्य का राज्य समुपस्थित हुआ। सोचा, कविता पाठ करते हुए मन को तृप्त करूँ, अंग्रेजी कविता से काम नहीं चला। अंग्रेजी-काव्य में भागीरथी के बारे में कुछ नहीं मिलता। कालिदास और भवभूति भी दूर रहें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुसूदन, हेमचंद्र, नवीनचंद्र से तृप्ति नहीं मिली तो फिर चुपचाप बैठा सोचता रहा, ठीक उसी समय गंगा के वक्ष से मधुर संगीत ध्वनि उठी। मछुएँ गा रहे थे -

साधो आछे, माँ, मने।
दुर्गा बले प्राण त्यजिब जान्हवी जीवने।

माँ के लिये प्राण त्यागने की प्रेरणा जो हमें बंकिमजी के साहित्य में मिलती है, जिसका बीज इस लोकगीत में है।

हम सब पार्थ हैं

'वंदे मातरम्' गीत की अपनी एक विशेपता है। उसमें मातृभूमि को माँ के रूप में प्रस्तुत किया है। भारतीय संस्कृति में यह विचार बहुत ही प्राचीन है।

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'

और इसी लिये हर भारतीय पार्थ हैं। महाभारत में अर्जुन के अनेक नाम हैं। उसीमें से एक है पार्थ अर्थात् पृथा का पुत्र। अर्जुन स्वयं को पार्थ कहलाना गौरवास्पद मानता है, वह भले ही उसका विशेप नाम है परंतु प्रत्येक भारतीय पृथ्वी का पुत्र होने के कारण पार्थ है।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी - यह रामप्रभु का वचन! बंकिमचंद्रजी ने इसी भावना को नया परिवेप दिया, भूमि को अपनी श्रध्दाभक्ति का प्रतीक, माता के रूप में देखने का भाव जगाया और विजिगीषु वृत्ति जगाते हुए उसे शक्तिशालिनी दुर्गा अर्थात् अजेय शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया।

यही भाव स्वामी विवेकानंद, ब्रह्मबांधव उपाध्याय और योगी अरविंद आदि तत्त्वचिंतकों के मन को छू गया। इस त्रयी ने उसे समाज के सामने ऐसे रखा कि धीरे धीरे 'वंदे मातरम्' आसेतु हिमालय गूंजने लगा।

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राष्ट्रगीत का सन्मान

वंदे मातरम्! छब्बीस चरणों एवं पाँच कड़ियों का गीत। जीवन्त भाषा भरा गीत। उसके उद्गाता बंकिमचंद्रजी अपने लेखन के कारण काफी लोकप्रिय थे। सन १८८४ में श्री. अधारचंद्र सेन के घर रामकृष्ण परमहंसजी से उनकी भेट हुई। परमहंस रामकृष्णजी ने पूछा, 'बंकिम, तुम किस कारण बंकिम हो?' (बांगला में बंकिम शब्द का अर्थ 'तीर्छा' ऐसा है।)

'ब्रिटिशों की ठोकरों से' - बंकिमजी ने हंसते हंसते उत्तर दिया - अनेक वर्ष वे डिप्टी मैजिस्ट्रेट के पद पर थें। नौकरी के उस कालखंड में प्राप्त अनुभव, अपमान के प्रसंग, अन्याय की कथाएँ, इन सबकी घुटन ही मानों इस उत्तर में प्रकट हुई है।

बंकिमजी ने ठाकुरजी को अपने घर आने का आग्रह किया। ठाकुरजी स्वयं तो नहीं गये - उन्होंने नरेंद्र को भेजा। स्वामी विवेकानंद मातृभू के रूप में शक्ति देवता के उपासक थे। संन्यासियों को, देश-जागरण हेतु उन्होंने प्रेरित भी किया था। उनके भाई तथा श्रेष्ठ क्रांतिकारक भूपेंद्र दत्त के अनुसार "स्वामी विवेकानंदजी का जीवन-ध्येय राष्ट्रीय भावना का निर्माण यही था। निंद्रिस्त भारतीय समाज को जाग्रत करना और उसे योग्य दिशा देना यही उनका जीवनकार्य था। उनका राष्ट्रीय आदर्श बंकिमचंद्रजी के क्रांतिकारी उपन्यास 'आनंदमठ' में चित्रित था।"

एक बार स्वामी विवेकानंद ढाका गये थे। युवकों से बातचीत करते करते एक युवक ने उनको पूछा, 'हमें क्या पढ़ना चाहिये?' तब स्वामीजी ने तुरंत उत्तर दिया 'बंकिम का साहित्य - Read Bankim, Bankim and Bankim बंकिम और बंकिम का ही साहित्य पढ़ो।'

मातृभू के लिये समर्पण का उत्कट और उत्कृष्ट उदाहरण उन्होंने अपनी प्रिय शिष्या निवेदिता को संसार के संमुख रखा। निवेदिता को उन्होंने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बताया - 'माँ की सेवा में जीवन समर्पित करो।' यही उसकी सेवा का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

प्राण त्यागते समय वंदे मातरम्

क्रान्ति के अग्रदूत वासुदेव बळवंत फडकेजी एडन जेल में मृत्यु के अधीन हुए। यमपाश उन्हें जकड रहे थें। क्षणकाल यमदूत भी थर्रा गये। हमेशा वे देखते थे यातना से विव्हल, रोती हुई सूरतें, बचने की व्यर्थ चेष्टाएँ, परंतु वासुदेवजी के चेहरे पर मंद मुस्कान थी - एक आव्हान था, साथ ही कृतकृत्यता के भाव थे और होठों पर मंत्र था 'वंदे मातरम्'।

योगी अरविंद

योगी अरविंदजी भी 'वंदे मातरम्' के भाव से प्रभावित थे। अरविंदजी ने 'वंदे मातरम्' का अनुवाद अंग्रेजी में किया। उन्होंने 'इंदुप्रकाश' में 'वंदे मातरम्' पर लेख लिखें। 'वंदेमातरम्' के संबंध में यह प्रथम दार्शनिक व्याख्या थी। अरविंद कहते हैं - बंकिम ने स्वदेश को माता की संज्ञा दी। 'वंदे मातरम्' संजीवनी मंत्र है। हमारे स्वाधीनता संग्राम का शस्त्र 'वंदे मातरम्' है। उनका 'भवानीमंदिर' पुस्तक भी आनंदमठ पर आधारित था।

कवि का स्वप्न

श्रेष्ठ हृदयहार वन्दे मातरम् गीत अपने जन्मकाल में किसीको पसंद नहीं आया। उसकी रचना के कुछ दिन पश्चात् तत्कालीन सुप्रसिद्ध गायक यदुनाथ भट्टाचार्यजी ने उसे स्वरबध्द किया - मल्हार राग और कव्वाली ताल में। मित्रों की एक बैठक में उन्होंने वह गाया भी। संस्कृत और बंगाली दो भाषाओं से युक्त है यह गीत।

'यह गीत अत्यंत कर्णकटु लगता है,' एक ने कहा। 'के बोले माँ तुमि अबले - अबले का एकार न व्याकरण है, न कुछ' - दूसरे ने अपना अभिमत प्रकट किया।

बंकिमबाबू धैर्य से सब कुछ सुनते रहे। इस गीत की भवितव्यता पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्हें अटल विश्वास था। एक बार उन्होंने अपनी पुत्री से कहा था। 'एक दिन ऐसा आयेगा कि वंगभूमि इस गीत को सुनकर नाचने लगेगी। केवल बंगाल ही क्या सारा हिंदुस्थान इस गीत से प्रेरणा ग्रहण करेगा। सारा देश एक सुर में यह गीत गाने लगेगा।'

बंकिमबाबू की यह वाणी सत्य में परिणत हुई परंतु २५ वर्षों के पश्चात्!

आनंदमठ का नाट्यीकरण

"आनंदमठ" वंग साहित्य.की अपनी परंपरा से हट कर नये परिवेश में क्रांतिकारी उपन्यास के रूप में आने के कारण अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। १८८२ से १८९४ तक बंकिमचंद्रजी के जीवनकाल में ही उसके पाँच संस्करण प्रसिध्द हो चुके थें। इसवी १९०० तक आनंदमठ का हिंदी, अंग्रेजी, तेलगु, कन्नड आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ था। इसवी १८८३ में उसकी लोकप्रियता का लाभ उठाते हुए नॅशनल थिएटर (प्रताप जौहरी द्वारा संचालित) के अध्यक्ष श्री केदारनाथ चौधरी जी ने इसका नाट्य-रुपांतर किया और उसी वर्ष वह मंचस्थ भी हुआ। इसमें श्री देवकंठ बागचीजी ने 'वंदे मातरम्' को सूर दिया। उन्होंने राग तिलक कामोद और ताल झपताल में स्वरलिपि बनायी थी।

'बालक' पत्रिका में अंतर्भाव

इसवी १८८५ में 'बालक' इस रविंद्रनाथ ठाकुर द्वारा संपादित तथा प्रकाशित पत्रिका में 'गायनशिक्षा' इस स्तंभ के अंतर्गत प्रतिभा सुंदरीदेवी ने गीत की स्वरलिपि रागिनी देस, ताल कव्वाली में तैय्यार कर प्रकाशित की। अंतमें उन्होंने निवेदन दिया था - बंकिमचंद्र-रचित 'वंदे मातरम्' नामक विख्यात गीत संपूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं किया जा सका क्यों कि इसका सुर अत्यंत कठिन है।

ठाकुर परिवार की पत्रिका में वंदे मातरम् के लिये 'विख्यात गीत' इस शब्द का प्रयोग उसकी महत्ता एवं लोकप्रियता का परिचायक है।

इसवी १८८५ में सर ह्यूम ने काँग्रेस की स्थापना की 'सेफ्टी वॉल्व' के रुप में। दूसरे ही वर्ष कलकत्ता में काँग्रेस अधिवेशन संपन्न हुआ। अधिवेशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के अगले ही दिन रक्षाबंधन पर्व था। श्री हेमचंद बंदोपाध्यायजी ने "राखी बंधन" नाम की कविता लिखी और संम्मेलन में प्रस्तुत की। अपनी इस रचना में उन्होंने 'वंदे मातरम्' गीत के अनेक शब्द एवं 'वंदे मातरम्' शब्दों का उपयोग किया। पहली बार सार्वजनिक सभा में मंगलाचरण के स्थान पर 'वंदे मातरम्' आंशिक परिवर्तित रूप में गाया गया। गीत के अंश इस प्रकार

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम् सुखदां वरदां मातरम्
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीं, फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीं
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीं, सुखदां वरदां मातरम्
बहुबलधारिणी, नमामि तारिणी, रिपुदलवरिणी
उठिलसे ध्वनि नगरे नगरे
तीर्थ देवालय पूर्ण जयस्वरे भारत जगत मातिल

अर्थ है - प्रेम से विव्हल हो कर गर्व से गले लगा कर सबने मिल कर मधुर स्वर में गाया 'वंदे मातरम्'।

एक कवि कों भी उन शब्दों ने प्रभावित किया इसका अर्थ यही था - कि धीरे धीरे इस गीत ने अपनी मोहिनी फैलाना प्रारंभ किया था।

राष्ट्रगीत का सन्मान

काँग्रेस का अधिवेशन अब प्रतिवर्ष नियमित रूप से होने लगा था। इसवी १८९६ में बीडन उद्यान अर्थात रविंद्र कानन में काँग्रेस का १२ वाँ अधिवेशन हुआ। अध्यक्ष थे श्री. महमद रहीमतुल्ला सयानी। इस संमेलन में श्वेतवस्त्रधारी रविबाबू ने 'वंदे मातरम्' गाया। श्री ज्योतिरिन्द्रनाथ ऑर्गन बजा रहे थे।

कवि की मधुर सशक्त आवाज पूरे मंडप में गूंज उठी। जिसे सुनकर लोगों के हृदय द्रवित हुएँ और वे देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत हो गएँ। इसी अधिवेशन में 'वंदे मातरम्' राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकारा गया। इसके पश्चात् लगातार काँग्रेस के मंच पर मंगलाचरण के रूप में 'वंदे मातरम्' का गायन होता रहा। वहा राष्ट्रीयता का प्रखर बोध जगाता रहा।

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंगभंग आंदोलन

वंदे मातरम् -

वंदे मातरम्! 'आनंदमठ' की अग्नि में छिपी हुई एक चिनगारी, जिसके संसर्गमात्र से भारतीय जनमानस में प्रखर देशभक्ति की ज्वाला धधक उठी।

साहित्य का इतिहास हमें बताता है कि किसी भी कृति की प्रभावशीलता का अपना एक समय होता है। एकाध कृति छपने के तुरंत पश्चात् प्रभावी बनती है तो कभी कभी कोई कृति अपने लिखे और छपने के कुछ समय पश्चात् अनुकूल वातावरण पा कर सहसा लोकप्रिय हो उठती है। और वातावरण को अपने ताप व तपंस्तेज से उत्तप्त करने लगती है। वंदे मातरम् का कुछ ऐसा ही हुआ। योगी अरविंद कहते है - इसवी १९०५ में जब बंगाल की राजनीतिक आत्मा जाग उठी तो राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति के लिये किसी माध्यम की खोज करने लगा और यह एक जीवंत नारा बन गया। क्रांतिकारी गीत के रूप में 'वंदे मातरम्' का सृजन युवा-बंगाल ने किया।

वंगभंग आंदोलन

बंगाल उस समय महान क्रांतिकारक, भारतीय ख्याति के राष्ट्रवादी तथा सामाजिक नेताओं का गढ बन चुका था। महान आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक आंदोलन का मानों नाभिकेंद्र ही था। जिसका संपूर्ण राष्ट्रीय परिवेश पर गहरा प्रभाव पड़ा। लोकमान्य तिलकजी ने कहा था - 'बंगाल जो बात आज करता है वह बात बाकी लोग कल (आनेवाले) सोचते हैं। बंग की इस जागृति से शासन भयकंपित हुआ। उन्हें लगा कि बंगाल में प्रदीप्त यह दावाग्नि आज नहीं बुझाया तो शीघ्र पूरे देश को व्याप्त कर लेगा। और उनके साम्राज्यसूर्य को ग्रहण लगेगा। सिर पर मंडराते संकटों के बादलों को दूर करने की तरकीब उसने खोज निकाली। बंग विच्छेद! ३ दिसम्बर १९०३ को लार्ड

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर्जन ने दुष्ट घोषणा की कि बंग-विच्छेद किया जायेगा। हमारी मातृभूमि खंडित करने का विचार यहीं से प्रारम्भ हुआ। 'फूट डालो और राज्य करो' नीति का यह पहला कदम था। हिन्दू और मुस्लिम दोनों एकजूट हो कर खड़े रहतें तो अंग्रेजों का शासन कैसे चलता? अतः अंग्रेजों ने यह चाल चली। "जातीयता की आग फैलाने की कर्जन की यह कुटिल नीति हैं" इन्हीं शब्दों में विधान सभा के एक सदस्य चौधरीजी ने बंगभंग का अंतस्थ उद्देश जनता के सम्मुख स्पष्ट किया था।

बंगाल प्रांत अर्थात् संपूर्ण बंगाल, असम, बिहार, उड़ीसा। शासन ने दिखाने के लिये कहा कि व्यवस्था की दृष्टि से बहुत बड़ा क्षेत्र है - परंतु विभाजन करते समय हेतुतः असम के साथ चटगांव, ढाका, मैमनसिंग और टिपोरा एकत्र कर- पूर्व बंगाल का निर्माण किया गया। यह मुस्लिम-बहुल क्षेत्र था। स्टेट्समन ने वास्तविकता उजागर कर दी इसका उद्देश्य पूर्वी बंगाल में मुसलमानों की शक्ति पुष्ट करना है जिससे हिन्दू जाति की तेजी से बढती हुई शक्ति पर अंकुश लग सकेगा।

ढाका में एक विशेष बैठक बुला कर कर्जन ने अंतस्थ हेतु प्रकट किया पूर्वी बंगाल एक मुस्लिम प्रांत होगा। ढाका एक नये और आत्मनिर्भर प्रांत का केन्द्र और सम्भवतः राजधानी बन जायेगा। इस प्रकार नव-गठित प्रांत में संख्या और उच्चतर संस्कृति के कारण इन जिलों के लोगों का शक्तिशाली केन्द्र बनेगा।

१९ जुलाई १९०५ को बंगभंग योजना का पूरा विवरण प्रकाशित हुआ और बंगाल ने ही नहीं अपि तु पूरे भारतवर्ष ने ही बंगभंग का विरोध किया। लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति उस समय आंदोलकों के सामर्थ्य का स्रोत थी। स्वदेशी और बहिष्कार ये बंगभंग आंदोलन के दो शस्त्र थें। अब बंगाल एक ही स्वर से निनादित था 'वंदे मातरम्'।

स्वदेशी और बहिष्कार

बंगभंग का विवरण प्रकाशित होने के दो तीन दिन पूर्व श्री कृष्णकुमार मित्र ने 'संजीवनी' पत्र के संपादकीय में लिखा 'बंगभंग होने पर बंगाली चिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अशौच पालन करेंगे . . . विदेशी वस्तुओं को स्पर्श नहीं करेंगे। कूड़ा भले ही खाना पड़े नमक नहीं खायेंगे, गुड़ - चीनी नहीं खायेंगे। बंगाली व्यक्ति म्युनसिपल कमिश्नर, जिलाबोर्ड के सदस्य, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट नहीं बनेंगे आदि आदि।'

भारत सचिव द्वारा बंगभंग प्रस्ताव स्वीकारने के १० वें दिन श्री. कृष्णकुमार मित्र ने फिर से विदेशी के बहिष्कार का आवाहन किया जिससे कि बंगाल की जनता को दिशाबोध प्राप्त हुआ। बंगभंग की सरकारी घोषणा हुई। उसी दिन चंद घंटों में लोग 'कॉलेज मैदान' पर एकत्रित हुएँ। उन्होंने स्वदेशी की शपथ ली। उसकी पध्दति भी अभिनव थी। अग्नि प्रज्वलित की गई। उसमें विदेशी वस्तुओं की आहुतियां समर्पित की गईं। बिना मंत्रघोष आहुति कैसी? माता के मुक्तियज्ञ आंदोलन का घोष था - 'वंदे मातरम्'। प्रत्येक आहुती देते समय घोष उठता था - 'वंदे मातरम्'। लोग निरंतर मैदान पर आते रहें, उनके परिधान की शाल, विदेशी कुर्ते समर्पित होते रहे, साथ-साथ वे 'वंदे मातरम्' कहते रहें। नवागत कहते थें 'वंदे मातरम्' - अभ्यागत उससे भी जोर की आवाज में प्रतिसाद देते थे 'वंदेमातरम्'। नारों की गूंज से आकाश गुंजायमान हो उठा, उधर अग्नि की लपटें आसमान छू रही थीं। 'वंदे मातरम्' घोष सुनते-सुनते लगता था कि नारों की आवाज अग्निज्वालाओं के कंठों से आ रही है - यह बहिष्कार आंदोलन आग की लपटों जैसा फैल गया।

७ अगस्त १९०५

७ अगस्त १९०५ बंगभंग आंदोलन का विरोधदिन। कलकत्ता के टाऊन हॉल में बडी सभा हुई। निश्चित् ही यह दिन बंगाल के इतिहास में सुवर्णाक्षरों से लिखा गया है। सभी स्तर के लोग इस सभा में उपस्थित थें। यही वह सभा है जिसने भारतवासियों को 'वंदे मातरम्' का नारा दिया। छोटी-छोटी टोलियों में लोग वंदे मातरम् गाते हुएँ वहाँ पहुँच गये। विशाल जनसैलाब उमड़ पड़ा था। कृष्णकुमारजी द्वारा प्रस्तावित 'बायकॉट' प्रस्ताव सर्वसंमति से पारित हुआ। सभा में उपस्थित मजदूर वर्ग ने शपथ ली 'हम विदेशी वस्तु का उपयोग करने वालों के घर काम नहीं करेंगे।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सभा प्रचंड थी। सभा को एक मंच से संबोधित करना कठिन था। चार मंच बनाये गये। श्री. सुरेन्द्रनाथ बॅनर्जी, भूपेंद्र, अंबिकाचरण मुजुमदार, कासीम बजार के महाराजा, चार महानुभावों ने सभा को संबोधित किया। सभा के अंत में हजारों लोगों ने एक साथ गर्जना की 'वंदे मातरम्'। बड़ा अभूतपूर्व दृश्य था यह। वह घोष सुनते सुनते भारत माँ की आँखे सजल हुई होंगी -'खुशी से वह सोचती होगी - 'मेरे सुख के दिन आ रहे हैं।'

१६ अक्टूबर १९०५ को बंगभंग की योजना इसी दिन से लागू होनेवाली थी। बोम्फिल्ड, फुल्लर, इस प्रांत के गवर्नर बनने वाले थे। उसके पूर्व उन्होंने कहा था - 'मेरी दो बीबियाँ हैं। एक हिन्दू और दूसरी मुसलमान। उनमें दूसरी बीबी मेरी चहेती बीबी है।' लोग आगबबूला हो उठें। अभी तक के प्रयास व्यर्थ हुए हैं यह उनके ध्यान में आया। १९०३ से लेकर अब तक लगभग ३००० सभाएँ हुईं थी। फिर नये सिरे से प्रयास प्रारंभ हुएँ। १३ अक्तुबर को एक संस्था का निर्माण हुआ - 'वंदे मातरम् संप्रदाय'। उद्देश्य था राष्ट्रीय चेतना जागृत करना। श्री मन्मथकुमार मित्र, इसके अध्यक्ष थे। इस संस्था के सदस्य प्रत्येक रविवार को 'वंदे मातरम्' गाते हुएँ निकल कर धन एकत्रित करते थें। स्वयं रविन्द्रनाथजी भी रविवार के दिन इसमें सम्मिलित होने लगें। हजारों की संख्या में लोग एकत्रित होते थे। बंकिमचन्द्रजी का जन्मस्थान तो तीर्थस्थल बन गया था।

बंगभंग विरोध दिन

'वंदे मातरम् संप्रदाय' ने निश्चित किया कि १६ अक्तुबर १९०५ बंगभंग विरोध दिन के रूप में मनायेंगे। बंगाल के वयोवृध्द लेखक रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी ने आवाहन किया कि इस दिन प्रत्येक परिवार में 'अरंधन व्रत' (भोजन न बनाने का व्रत) का पालन किया जाय। धर्मघट (सब बंद) रखे जाय।

रविन्द्रजी ने घोषणा की कि बंगाल की एकता कायम रखने के लिये इस दिन राखीबंधन मनायेंगे। आंदोलन के नेता थे सुरेन्द्रनाथ बनर्जी।

भोर में ही सब लोग गंगास्नान करने चल पड़े। कोटि-कोटि कंठों से वंदे मातरम् निनादित हो रहा था। गली-गली इस गीत से मुखरित थी। संकीर्तन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टोलियाँ गीत गा कर लोगों के होसले बुलंद कर रही थी। भीड़ में उच्च-नीच, श्रेष्ठ-कनिष्ठ जाति के भाव नष्ट हो गये थें। आज सब एक थे। माँ की संतान थें। महिलाएँ खील बरसाती रहीं। शंख बजाती रहीं। लोग स्नान के पश्चात् एक दूसरे को राखी बाँधने लगें, ईसाई, मुस्लिम सब इसमें सम्मिलित थें। सब एक साथ रविबाबू का गीत गा रहे थें।

एकसूत्रे बांधियाछी सहस्त्रटि मन
एक कार्यें संपियाछि सहस्त्र जीवन. वंदे मातरम्

विशाल जनसभा

हर स्थान पर हडताल मनायी गई। यातायात बंद था। राखीबंधन उत्सव बीडन और सेन्ट्रल कॉलेज के मैदान में मनाया गया। सभापति थे आनंदमोहन बसु। वे अस्वस्थ थें। ऐसी ही अवस्था में कुर्सी पर बिठा कर उनको सभास्थान पर लाया गया। वे आते ही 'वंदेमातरम्' का घोष अत्युच्च आवाज में हुआ। उनका लिखित भाषण बनर्जी ने पढ़ा। उनके द्वारा हस्ताक्षरित घोषणा पत्र न्यायाधीश आशुतोष चौधरी ने जनसभा में प्रस्तुत किया।

तीसरे पहर अपर सर्क्युलर रोड पर एक विराट सभा हुई। अखंड बंग भवन का शिलान्यास हुआ । सुरेन्द्रनाथजी के साथ अन्य नेता भीं थे। पचास हजार लोग नंगे पैर चल पड़ें। देखते देखते स्वयंस्फूर्ति से ७०,००० की राशि स्वदेशी आंदोलन के लिये प्राप्त हुई। सुरेन्द्रनाथ बोले, '५०० सभाओं में जो साध्य नहीं हुआ वह स्वदेशी आंदोलन से तीन माह में साध्य हुआ।'

प्रांतों के सभी भागों के लोग हजारों की संख्या में निकटवर्ती नदियों में शुध्दि-स्नान के लिये गयें और 'वंदे मातरम्' के नारों के बीच उन्होंने एक दूसरे की कलाई पर एकता और आव्हान की राखी बांधी।

बॅ. अब्दुल रसुल, मौलवी अबुल कासिम, अबुल हुसैन आदि विशिष्ट नेता भी अपने भाषणों द्वारा कर्जन के वक्तव्यों को नापाक बना कर बंगभंग-आंदोलन में सहभाग लेने के लिये लोगों को आवाहन करते रहें।

'कांग्रेस का इतिहास' इस पुस्तक में पट्टाभि सीतारामय्याजी ने इस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आंदोलन का अतीव सुंदर वर्णन किया है - वे लिखते हैं "लेकिन जैसे गेंद को जितनी जोर से जमीन पर फेंको, वह उतनी तेजी से ऊंची उठती है और ढोल जितना पीटो, उतना ही अधिक आवाज करता है, ठीक उसी प्रकार सरकार की उत्तरोत्तर उग्र और नग्नरूप धारण करने वाली दमन नीति के कारण नवजागृत चेतना भी सचमुच व्यापक, विस्तृत और गहरी होती गई। देश के एक कोने में जो घटनाएँ होती थीं, वे सारे देश में फैल जाती थी। सरकार का प्रत्येक दमनकार्य उलटा असर करता था। संपूर्ण भारत ने बंगाल के सवाल को अपना सवाल बना लिया। प्रत्येक प्रांत ने बंगाल के साथ अपनी समस्याओं को जोड़ कर आंदोलन को और जादा गहरा रंग दे दिया।

*****

वंदे मातरम् की तुलना मार्सेलिस से कैसी ?

हैद्राबाद से प्रकाशित डेक्कन पोस्ट के संपादक श्री. सिध्दमोहन भट ने लंडन टाइम्स में लिखा कि वंदे मातरम् फ्रांसीसी राष्ट्रीय गीत मार्सेलिस का बंगाली संस्करण है। इस विधान का प्रतिवाद, अंग्रेजों द्वारा संचालित 'पायोनियर' ने किया यह विशेष !'

'कविता की दृष्टि से तथा रचना के सौष्ठव से वन्दे मातरम् गीत फ्रांसीसी राष्ट्रीय गीत से कहीं अधिक ऊंचा है। मार्सेलिस में कवि का हृदय नहीं है, पर वन्दे मातरम् में कवि ने आत्मा को इस कदर ढाल दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति की हृदयतंत्री झनझना उठती है। फ्रांसीसी और भारत के राष्ट्रीय गीत में यही सबसे बड़ा अंतर है। वन्दे मातरम् प्रार्थना है। आद्यशक्ति को स्वदेश के आधार में प्रतिष्ठित कर उसे मां कहा गया है। अपनी जन्मभूमि को न केवल मां कहा गया है बल्कि मां की तरह प्यार और श्रध्दा करने का निर्देश दिया गया है। जो गीत किसी भी देशवासी को अपनी जन्मभूमि के प्रति मां की तरह प्रेम करना सिखाए, उस गीत की तुलना भला मार्सेलिस से कैसे की जा सकती है?

(पायोनियर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वदेशी - वंदे मातरम् तत्त्व की अभिव्यक्ति

वंदेमातरम्! वंदेमातरम् की विस्फोटक-उत्तेजन-क्षमता का परिचय बंग-विच्छेदन के समय हो गया। ७ अगस्त १९०५ की सभा में यह शब्द स्वाधीनता - आंदोलन का मानों संकेत-शब्द बन गया। इस आंदोलन में तीन सिध्दान्तों का विस्तार हुआ। वंदे मातरम्, बहिष्कार एवं स्वदेशी।

स्थान-स्थान पर विदेशी वस्तुओं की होली जलायी जाती थी। विलायती कपडों का मोह छोडकर 'माँ ने दिये हुएँ वस्त्र लोग अपनाने लगें। बंगाल के ८ जिलों में वस्त्रों की विक्री जो १९०४ में ७७,०००/- रु. की थी वह १९०५ में घटकर १०,०००/- हो गयी। मुंबई और कर्णावती (अहमदाबाद) में कपड़ों की २० नयी मीलें प्रारंभ की गयी। बँक खोले गयें और ५ नौवहन कंपनियाँ स्थापित हुई।

स्वदेशी का प्रचार धूमधाम से होने लगा। अवनींद्रनाथ लिखते है कि - "मातृभंडार" शब्द लिखी हुई पतरे की पेटी एक घोडागाडी पर रख कर दिनभर हम उसमें रखीं स्वदेशी वस्तुओं की विक्री हेतु गली गली घूमते थें। सामान्य नागरिक ही नहीं अपितु अंग्रेज भी खड़े होकर देखतें और टोपियाँ उठाकर कहते, 'वंदे मातरम्!'

मायेर् वस्त्र

'मायेर् वस्त्र', 'मातृभंडार' स्वदेशी के लिये कितने यथार्थ, अर्थ-गर्भ सुंदर शब्द। माँ का वात्सल्य, प्रेम, ममत्व, उसका आश्वासक स्पर्श सभी उसमें समाहित है। शायद स्वदेशी वस्तुएँ ऊबडखाबड होंगी परंतु वे मेरी अपनी हैं, मेरी माँ द्वारा निर्मित हैं यह विचार सुखकारक है। साहित्यकारों ने अपनी कविताएँ तथा लेखों के द्वारा इसका जोरदार प्रसार किया - उस समय रजनीकांत जी का गीत था . . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मायेर देवा मोटा कापड
माथाए तुले नेरे भाई,
दीनदुखिनी मा जे तोदेर
तार बेशी आर साध्य नाई

माँ के दिये हुए मोटे वस्त्र सिर बिछा कर ले ले। तुम्हारी माँ गरीब और दुखी है। इससे अधिक उसके वश में नहीं है।

स्वदेशी के लिये 'माँ' इस शब्द का उपयोग यह वंदे मातरम् का ही प्रभाव था। स्वदेशी यह देशप्रेम का दृश्य रूप था। वह एक आर्थिक, राजकीय, आध्यात्मिक मार्ग था। Swadeshi was Vande Mataram in action!

यही भावना व्यक्त करते हुएँ रविन्द्रनाथजी लिखते हैं, "The Soul of Swadeshi discovered itself in the form of Vande Mataram".

रविन्द्रजी द्वारा व्यक्त यह भावना समूचे भारत में फैली थी। बंगाल में श्री. अरविंद, बिपिनचंद्र पाल और उनका 'वंदे मातरम्', महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक और उनके 'मराठा', 'केसरी', पंजाब में श्री लाला लजपतराय और उनका 'पंजाबी', स्वदेशी तथा बहिष्कार का अभियान तेज करते जा रहे थें। वंगभग के साथ प्रत्येक ने अपनी प्रान्तीय समस्या जोड़ दी थी। स्वदेशी का व्रत, 'विभाजन समाप्त करवाने तक' सीमित नही रहा उसे अब अधिक व्यापक रूप दिया गया था। वंदे मातरम् और 'स्वदेशी' एक सिक्के की दो बाजू जैसे थे। वंदे मातरम् अर्थात् माँ की वंदना, स्वदेशी अर्थात् माँ की अर्चना। अर्चना के बिना वंदना हो ही नही सकती और केवल वंदना से भक्ति सफलता की ओर नहीं जा सकती। लो. तिलकजी ने कहा 'बहिष्कार यह स्वदेशी का नकारात्मक अंग है। स्वदेशी प्रेम विदेशी वस्तुओं की घृणा के बिना पूर्ण नहीं हो सकता।' Boy cott is the negative side of Swadeshi and love of Swadeshi goods is not complete without hatred of foreign goods and advise the people not to take Swadeshi propoganda boldly as the only weopan for self help.

विदेशी चीजों की बिक्री करनेवाली दुकानों के सामने निदर्शन किये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाते थें। स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री से प्राप्त लाभ देश-कार्य के लिये दिया जाता था। घर-घर में चरखा चलने लगा। चाय पीने के विदेशी प्याले घर से अंतर्धान हुएँ, उस स्थान पर नारियल की खोपड़ी का प्रयोग होने लगा।

शपथ लेना तो सरल है।

शपथ तो अनेक लोग लेते हैं। परंतु उसका कठोरता से पालन करने वाले कम ही होते है। परंतु उस समय का परिवेश कुछ और था! 'आनंदमठ' का प्रभाव जनमानस पर था।

राष्ट्रीयता के वातावरण से शिशु भी प्रभावित हुएँ। सुरेन्दबाबू की छोटी पोती को किसी रिश्तेदार ने अच्छी सी चप्पल भेंट की, परन्तु वह विदेशी है इस लिये उसने नही ली।

बालिका ने विदेशी औषधी नकारी

अस्पताल में रुग्ण भी औषधी लेते समय वह स्वदेशी है यह परख लेते थे। एक डॉ. ने कहा कि उसके अस्पताल में एक बालिका का औषधोपचार चल रहा था। अर्ध बेहोश अवस्था में वह बड़वड़ाती थी, - "नहीं-नहीं! मैं विदेशी औषधी नहीं लूंगी!" माँ की संतानों ने अपने जीवन का मोह त्याग दिया था। जीना है तो माँ की दवा से अन्यथा मरना ही श्रेयस्कर है। दाई की दवा भी नही चाहिये, दास्यत्व भी नही चाहिये।

छात्र और स्वदेशी

विदेशी कागज़ पर छपी प्रश्नपत्रिका विद्यापीठ छात्रों ने स्वीकारी नहीं। अंततः परीक्षासंचालकों को स्वदेशी कागज़ पर प्रश्नपत्रिका छपवा कर देने के लिये बाध्य होना पड़ा। उत्तर पत्रिका भी स्वदेशी कागज़ की ही थी।

विद्यालय - महाविद्यालय का वातावरण भी इससे निराला नही था। सुरेन्द्रनाथ बँनर्जी लिखते हैं, - 'विद्यालयों, महाविद्यालयों में विदेशी कपड़े पहन कर जाना मुश्किल था।'

छात्रों को इस आंदोलन से दूर रखने के लिये सरकार ने काफी प्रयास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किये। 'स्वदेशी सभा में भाग लेने वालों तथा 'वंदे मातरम्' का नारा लगाने वालों को विद्यालय से निष्कासित किया जायेगा' - इस धमकी ने तो आग में घी ड़ालने का काम किया। छात्रों नें और अत्यधिक उत्साह से आंदोलन में भाग लेने की ठान ली।

भवन किराये से देना है

श्री. अश्विनीकुमार दत्त के आव्हान पर कलकत्ता विद्यापीठ के छात्रों ने पढ़ाई बंद कर दी। इतना ही नहीं तो विद्यापीठ-भवन की सभी दीवारों पर पत्रक चिपकायें, 'यह भवन किराये पर देना है।'

विद्यार्थियों का निष्कासन देख कर नये राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की गई। कलकत्ता में राष्ट्रीय विद्यालय स्थापन करने के लिये सुबोधचंद्रजीनें एक लाख रुपये दियें।

स्वदेशी आंदोलन से संबंधित होने के संदेह से बाबू महानंद गुप्त जी को १२००/- रुपये वेतन वाले पद से पदावनत कर ४००/- वेतन के स्थान पर लाया गया। वे कलेक्टर थे उन्हें डेप्युटी मॅजिस्ट्रेट बनाया गया। स्वदेशी व्रत निभाने के लिये उन्होंने पदावनति की आपत्ति सह ली। ऐसे कई उदाहरण हैं। इस पृष्ठभूमि पर स्वाधीन भारत में आज स्वदेशी की स्थिति क्या है?

महिलाओं का सहभाग

स्वदेशी आंदोलन में महिलाएँ अग्रेसर रहीं। भगिनी निवेदिता स्वयं हाथगाड़ी पर स्वदेशी वस्तुएँ रखकर घर-घर जाती थी। उनकी दृष्टि में विदेशी वस्तुओं का उपयोग गोहत्या जैसा पाप था। स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ भारतीय युवकों को आधुनिक तंत्र-शिक्षा कें लिये उन्होंने जापान, अमरिका जैसे देशों में भी भेजने की योजना बनायी।

रामेंद्रसुंदर त्रिवेदी द्वारा लिखित 'बंगलक्ष्मीर व्रत कथा' घर-घर में पढ़ी जाती थी।-व्रत की प्रतिज्ञा थी - "माता लक्ष्मी, कृपा करो। कांचन दे कर कांच नही खरीदूँगी। घर का मिलेगा तो बाहर का नहीं पहनूंगी। दूसरे के द्वार पर भीख नही मांगूंगी। मोटा वस्त्र पहनूंगी, सादे गहने पहनूंगी, पोषाक सादी होगी। पडोसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को खिला कर ही खाऊंगी। मोटा अन्न अक्षय हो, मोटा वस्त्र अक्षय हो।"

अनेक कवियों ने स्त्रियों को संबोधित कर बहुत से गाने लिखें। उनमें प्रधान थे चारण मुकुंददास। चारण मुकुंददास एक दुकानदार थें - उनका नाम था यज्ञेश्वर। एक दिन अश्विनीबाबू ने उन्हें बुलाया, गेरुए वस्त्र पहिनाएँ, कुछ क्रांतिकारी भजन कंठस्थ करवाएँ और बताया, "आज से आप यज्ञेश्वर नहीं, चारण मुकुंददास है। ग्राम-ग्राम जा कर अलख जगाना है, निद्रित बंगाल को जगाना है। माँ के चरणों में समर्पित होना है। आदेश मिलते ही मुकुंददास चल पड़ें। क्रांति की मशाल ले कर अखंड भ्रमण करने लगे। वंदे मातरम् के माध्यम से जागृति लाने के प्रयास में वे जुट गयें। फलतः नदी के तट पर पनघट पर एक ही विषय चर्चा में रहने लगा 'वंदे मातरम्'! ऐसे मुकुंददासजी की विशेष रचना थी....

"छेडे दाओ कांचेर चूडी बंग नारी
कभु हाथे परो ना
तोमरा जे गृहलक्ष्मी धर्मसाक्षी
जगते भरे आधा जाना
कांचेर माया ते भूले, शंख पेले
कलंक हाथे परो ना!"

'शंख चूडियों की जगह कांच की विदेशी चूडियाँ पहनकर अपने हाथ कलंकित न करें' ऐसा आवाहन वंग नारियों को किया जाता था।

महाराष्ट्र में भी स्वदेशी का ज्वर था। सुहागन स्त्री कांच की चूडियाँ पहिने बिना पानी भी नहीं पीती थी। स्वदेशी चूडियाँ उपलब्ध न होने पर मंगलसूत्र के कांच के मणियों से ही चूडियाँ बनाती थी और अपने धर्म का निर्वाह करती थी। परंतु विदेशी चूडियाँ उन्होंने नहीं पहनी और चीनी विदेशी है इसलिये घर-घर में चीनी आने नही देती थी। तिलक देव ने बताया है वैसा करने का उनका व्रत था।

स्वदेशी की इस हवा से गणिकाएँ भी अछूती नही रहीं। बरिसाल में एक व्यक्ति एक गणिका के घर विदेशी शराब की बोतल लेकर गया। वह उसको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घसीट कर अश्विनीबाबू के पास ले गयी और कहा, "विदेशी चीज मैं क्यों स्वीकार करूं? यह विदेशी चीज मुझे देने की इसकी हिम्मत कैसे हुई?"

दुकानदारों ने विदेशी वस्तु रखना बंद कर दिया। बरिसाल का ही और एक प्रसंग! अश्विनीकुमार दत्त के आव्हान पर दो दिन में विदेशी वस्तुएँ गायब हो गईं। कलेक्टर बाजार गये। उनको विदेशी चीजें नहीं मिलने पर दुकानदार को पुछा -

"क्यों सब चीजे बिक गयी?"

'जी नही, दत्त बाबू ने मना किया' -

'कब तक नहीं बेचेंगे?' - कलेक्टर ने पूछा -

'जब तक दत्त बाबू हुक्म नहीं देंगे तब तक हम नही बेचेंगे।'

स्वदेशी के लिये संगठन

स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने हेतु प्रचार के लिये अनेकानेक समितियों का गठन हुआ।

चित्तरंजनदास जी के घर स्थापित हुवा स्वदेशी मंडल, मनोरंजन गुह ठाकुरदा की कृतिसमिति। सुरेशचंद्र समाजपति का वंदे मातरम् संप्रदाय, भवनीपुर का संतान संप्रदाय, कलकत्ता की फील्ड अकादमी क्लब, बरिसाल की स्वदेशी बांधव समिति, मैमनसिंह की सुहृत् समिति, कितने नाम गिनायें?

महाराष्ट्र में बाबाराव सावरकरजी नें 'स्वदेशी का ही उपयोग करें' ऐसी एक हजार तक्तियाँ स्वयं लिखकर नासिक में घर घर लटकायी। यह सब एक रात में हुआ। यह चमत्कार देख कर लोग आश्चर्यचकित हुएँ।

सुदूर तुतीकोरन् में 'स्वदेशी स्टीम नेविगेशन् कंपनी' की स्थापना इसी आंदोलन का एक भाग था।

मद्रास में स्वदेशी - वस्तुओं के प्रचार और विक्री के लिये ठोस, प्रतीकात्मक रूप में 'भारत भंडार' नामक दुकान खोली गयी। इसीसे जुडी हुई एक महत्त्वपूर्ण घटना तामिलनाडू में घटी। तामिलनाडू के लोग प्राचीन काल से ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यात्रा, खोज, एवं व्यापार के लिये - दूर - पूर्वदेश में जाया करते थें। उन दिनों ब्रह्मदेश भारत का अंग था। वर्तमान आंध्र प्रदेश तथा तामिलनाडू के हजारों मजदूर कृषि के लिये रंगून जाते थें। और बीज बोने से फसल काटने तक का सारा काम करने के बाद घर लौट आते थें। तब ब्रह्मदेश से लकड़ी और उत्तम प्रति का चावल ले आते थें। यह सारा व्यापार और मजदूरों के आवागमन की पूर्ण व्यवस्था कुछ अंग्रेज व्यापारियों के एकाधिकार में थी। इन सभाओं में ब्रिटिशों का यह क्रूर रूप लोगों के सामने तुतीकोरम् के प्रसिध्द वकील चिदम्बरम् पिल्लै ने रखा।

"भाईयों . . . . मैं आपको यह कहने के लिये खड़ा हूँ कि यदि हम लोग संगठित नहीं हुएँ तो ये अंग्रेज लोग हमारा शोषण करते रहेंगे। हमारे द्म पर मज़ा उड़ाते रहेंगें। हमारे देश का सारा धन विलायत भेजते रहेंगें और हमें भूखों मरने के लिये कुलीगिरी करने के लिये विवश करते रहेंगें। स्वदेशी स्वीकार करने की आवश्यकता बताते हुएँ उन्होंने तीन प्रश्न पूछे - क्या आपको मालुम नही है कि इनकी 'ब्रिटिश नेविगेशन कंपनी' हम लोगों से कितना अंधाधुंद किराया वसूल करती है? और किसी भी प्रकार की मानवीय सुविधाएँ नहीं देती और अपने जहाज़ों में हमें भेड़बकरियों की तरह ठूँस देती है। हम लोगों का कर्तव्य है कि इनको मुँहतोड़ उत्तर देने के लिये हम भी जहाज़ यात्रा के लिये कोई कंपनी बनायें और संकल्प करें कि हम अपनी कंपनी के जहाज़ों से ही यात्रा करेंगे।" और इस तरह 'स्वदेशी स्टीम नेविगेशन्' का जन्म हुआ। सागरी यातायात के लिये यह प्रमुख भारतीय कंपनी थी।

अंग्रेजी शासन के लिये यह बड़ी कठिन चुनौती थी। सभी अंग्रेज मॅजिस्ट्रेट मि. वाल्टर के नेतृत्व में एकत्रित हुए। उन्होंने भारतीयों को आकर्षित करने के लिये जहाज़ों का किराया कम कर दिया। परंतु जागृत भारतीय लोग भारी किराया दे कर भी भारतीय जहाज़ों में ही यात्रा करते थें। अंग्रेजों ने बात-बात में कानूनी अड़ंगेबाजी प्रारंभ कर दी।

हमारे प्राण - स्वदेशी

लोकमान्य तिलकजी बताते थे, 'स्वदेशी का तत्त्व आपको मानना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहिये। ऐसा नही हुआ तो आपको 'प्राण' प्रिय नही हैं ऐसा कहना पडेगा'। आगे चलकर कहते हैं . . . 'विदेशी चीनी को जानवरों की अस्थिरक्त का स्पर्श तो रहता ही है परंतु उससे भी भयंकर अपने स्वदेशी लोगों के रक्त का मिश्रण उसमें रहता है। मन-मन में जाग्रत इस प्रकार के राष्ट्रीय बोध से अंग्रेजों के पैरोतले की भूमि खिसकने लगी। वे सिहर उठें परंतु निश्चय किया इस ज्वाला को यथासंभव शीघ्र बुझायेंगे - परंतु ज्वाला कभी बुझती नहीं - ऊपर-ऊपर उठते जाना यही उसकी प्रकृति है। वह कैसे बदलेगी? असंभव है यह! राष्ट्रीयता की इस प्रखर ज्योति से भारत भू जगमगा उठी।

*****

भारत के सभी क्षेत्रों में वंदे मातरम् गीत अत्यंत लोकप्रिय हुआ है और वह बार-बार गाया जा रहा है। इस पर श्री. अरबिंदो ने आनंद प्रकट किया। उन्होने कहा कि यह राष्ट्रगीत के अपने भाषण का विषय बनायेंगे। उन्होंने कहा कि युरोपीअन राष्ट्र अपने राष्ट्रगीत की ओर जिस दृष्टि से देखते है उस दृष्टि से हम राष्ट्रगीत को नही देखते है। हम तो उसको वह एक मंत्र होने के कारण अमित शक्ति से ओतप्रोत मानते है। आनंदमठ के लेखक ने हमे यह स्पष्ट किया है। अतः उनको 'ऋषि' संज्ञा से संबोधित करना चाहिये।

इस गीत का अर्थ उस समय लोग समझ नही पाये, कारण देशभक्ति का अभाव था। भारत, इंग्लैंड और अन्य देशों की छाया रूप मे प्रस्तुत करने का प्रयत्न इसलिये था कि भारत माता की संतानों के तेज का दर्शन भी उन्हे चकाचौंध कर देता था। तत्कालिन तथाकथित देशभक्त भारत के हितैषी हो सकते है परंतु वे भारतमाता से प्रेम नही करते थे। जो माँ से प्यार करता है वह कभी उसके दोष (त्रुटियाँ) नही देखता है वह कभी उसको अज्ञानी, अंधश्रध्द, पतित, जीर्ण, पंगू स्त्री नही मानता है।

योगी अरविंद, अमरावती
२१-१-१९०८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बरिसाल में प्रथम आघात

वंदे मातरम्। वंदे मातरम् इन शब्दों में सारंगी की नजाकत है वैसी ही नगाडे की पडघम सी वह एक ईश्वरीय ललकार है - देशभक्तों की अंतर्बाह्य शक्तियों को आवाहन करने वाली। १४ अप्रैल १९०६ को इसकी प्रचंड क्रान्तिकारी शक्ति का अनुभव हुआ।

काँग्रेस का बरिसाल अधिवेशन

काँग्रेस का बंगाल प्रांत का अधिवेशन १४ अप्रैल १९०६ को आयोजित किया हुआ था। बंगाल के प्रभावी नेता अश्विनीकुमार दत्त के नेतृत्व में, लोग उसकी तैयारी में जूट गये थें। अश्विनीबाबू एक अच्छे कवि थे। सभी वंगवासियों को अधिवेशन में सम्मिलित होने का आवाहन करते हुए उन्होंने लिखा -

आय रे आय, सब, भारतवासी, आय सब मिले
प्रणामि भारतमातार् चरण कमले
आय रे आय, मुसलमान भाई
एई धूलिते श्रीराम मोदेर
एई धूलिते अकबर तोदेर

(भारत के मुस्लिम बंधुओं के मन में यह भावना आज भी स्फुरित होती तो?)

वंगवासियों के साथ साथ फुल्लर भी शासन की ओर से तैयार कर रहा था। हिंदु मुस्लिम एकजूट उसे खलती थी। बंगाल के कौमिल्ला, ढांका आदि स्थानों पर दंगे करवायें गये। वहाँ के नबाबों और जमींदारों को उकसाया। परंतु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बरिसाल अश्विनीबाबू के कारण शांत था। उत्साह की आंधी तेजी से चल रही थी। बरिसाल नगरी, अभ्यागतों के स्वागत के लिये नववधू जैसी सजधज रही थी।

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे

बरिसाल का ऊफान देख कर फुल्लर क्रोधित हो उठता था। उसने शस्त्र बंदी जारी की। गैर सरकारी लोगों से बंदूकें छीन ली गयी। एक इंच से मोटी लाठी ले कर रास्ते से जाने पर प्रतिबंध लगाया गया। ६०० गुरखाओं को तैनात किया गया। शासन सोच रहा था कि जनता आतंकित होगी। अधिवेशन स्थगित किया जायेगा। परंतु 'माँ' की संतान कायर थोडी होती है? प्रतिबंध के बावजूद भी उत्साह बढता ही रहा। रविंद्रबाबू की प्रतिभा को तो पूनम का ज्वार आया था। नित्य नूतन कविताएँ वे दे रहे थें। उस सप्ताह में घर-घर गीत चल रहा था - 'आमार सोनार बांगला' ।

नहले पर दहला

अभी संमेलन को दो दिन बाकी थें। राज्यपाल बहादुर ने फर्माया 'जुलुस में वंदे मातरम् नही गाया जायेगा। इतनाही नहीं तो रास्तों पर या स्टीमर घाट पर वंदेमातरम् के नारे नही लगेंगे। अन्यथा सभा पर रोक लगायी जायेगी। बरिसाल की जनता इस गीत की दीवानी थी। क्या करें? क्षणमात्र अश्विनीबाबू असंमजस में पडें। परंतु वे चतुर थे, उन्होंने भी कृष्णनीति अपनायी। शासन भूल गया कि नहले पर दहला भी चढता है। उन्होंने सरकार को सूचित किया कि स्टीमर घाट से निकलने वाले जुलुस में वंदे मातरम् का नारा नही लगेगा।

स्टीमर घाट का नजारा

१६ अप्रैल को जलमार्ग से खुलना और नारायणगंज से प्रतिनिधि पहुंचने लगें। (बरिसाल वर्तमान में बंगला देश में है और पद्मा, मेघना नदियों से जुड़ा है) स्वयं अश्विनीबाबू हजारों लोगों के साथ अध्यक्ष एवं प्रतिनिधियों के स्वागत के लिये स्टीमर घाट पर उपस्थित थे। जैसे ही नौकाओं ने घाट को स्पर्श किया, सभी अभ्यागतों ने 'वंदे मातरम्' के नारों से आकाश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गूंजा दिया। बरिसाल के लोगों ने उसको प्रतिसाद नहीं दिया। आनेवाले प्रतिनिधि असमंजस में पड़े। 'वंदे मातरम्' की घोषणा पर लगाये हुए प्रतिबंध के बारे में उनको जानकारी देने पर वे संतप्त ही गये। क्या मतलब है ऐसे अधिवेशन का? ध्वज बिना युध्द थोडेही लड़ा जाता है? क्या वापस लौटना ठीक रहेगा? परंतु सुरेंद्रनाथ बॅनर्जी से मिलने के बाद ही लौटेंगे। ऐसा सोच कर अधिवेशन के प्रतिनिधि अपनी नौकाओं में बैठे रहें। अब वहाँ जलप्रवाह के स्थान पर नौकाप्रवाह दृष्टिगोचर हो रहा था। उसमें मानव मस्तिष्क कमल जैसे शोभायमान हो रहे थें। संध्या वेला में सुरेंद्रनाथ, बिपिनचंद्र, कृष्णकुमार मित्र, अब्दुल रसूल वहाँ पहुंचे। यह दृश्य देख कर सब अचंभित हुएँ। अश्विनीबाबू ने उन्हें परिस्थिति अवगत करायी। शचींद्रनाथ बसु नाराज हुएँ।

"वंदे मातरम्' पर प्रतिबंध रहेगा तो मैं संमेलन में भाग नही लूंगा।' कृष्णकुमार मित्र ने प्रतिक्रिया प्रकट की। उन्हें समझाना बहुत कठिन था। बहुत समझाने पर भी वे माने नही।

'मैं तो वंदे मातरम् बोले बिना नहीं रहूंगा। भले ही सिर फूट जाये या गंवाना पडे। सिर का इतना कोई मूल्य नही है।' मोतीलाल घोष गरज उठें।

सुरेंद्रनाथ बॅनर्जी ने उन्हें शांत किया। 'स्थानीय नेताओं ने शासन को वचन दिया है। उसका पालन करना ही चाहिये।' उन्होंने काफी संतुलन रखा। यदि अश्विनीबाबू ऐसा आश्वासन नही देते तो सभा ही नही हो पाती। यह वे समझ गये और प्रतिनिधियों को निवास स्थानोंपर भेजा गया।

बिपिनचंद्र पाल, ब्रह्मबांधव उपाध्याय, रविंद्रनाथ ठाकूर अरविंद घोष, आनंदचंद्र रॉय आदि नेताओं का जमघट वहाँ था। अभी तक हमने शासन के नियमों का कडाई से पालन किया है। अभी जो निर्णय होगा उसका हम सानंद स्वागत करेंगे। अश्विनीबाबू ने जनता का मानस व्यक्त किया। रात्री के उस कृष्ण समय में वंदे मातरम् गाने का निर्णय हुआ। शूरता, वीरता की उषा प्रकट हुई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कफन बांधा सैलाब

दूसरे दिन दोपहर दो बजे रायबहादुर हवेली से सभास्थल तक जुलूस निकलने वाला था। प्रतिनिधियों ने 'वंदे मातरम्' बिल्ले लगाये हुए थें। कुछ प्रतिनिधियों ने 'वंदे मातरम्' अंकित उत्तरीय यज्ञोपवीत जैसे धारण किये थें। अनेकों के हाथों में 'वंदे मातरम्' के फलक थें। तीन-तीन की तति बनाकर शांतिपूर्वक वंदे मातरम् गाते हुए सभास्थान पर पहुंचने की योजना थी।

सबसे आगे अध्यक्ष अब्दुल रसूल अपनी अँग्लो इंडियन पत्नी के साथ गाड़ी में थे। उनके पीछे सुरेंद्रनाथ, मोतीलाल घोष, भूपेंद्र बसु, बिपिनचंद्र, अरविंद आदि मान्यवर चल रहे थे। उनके चलने में एक अलग ही शान थी. माँ के प्रती अनुभूत गर्व से मस्तक उन्नत था।

जुलुस की रचना पूर्ण हो कर जुलुस प्रारंभ होने वाला ही था। सब लोग बाहर निकले भी नहीं थे तो पुलिसने बिना पूर्वसूचना के निर्ममता से लाठियाँ चलाना प्रारंभ किया। कुछ आव देखा ना ताव। आडे हाथ पिटाई शुरू की। उनकी 'रेग्युलेशन' लाठी ६ फीट लंबी और १" से मोटी थी। उसके हर प्रकार के साथ युध्दघोष, जयघोष निनादित होता था - वंदे मातरम्। कई लोगों के सर फुटे। उन्होंने अपने रक्त का माँ को अभिषेक किया। कुछ लोगों को पुलिस के बूटोंका प्रसाद मिला। प्रतिनिधिओं के बिल्ले नोचें गयें। और उनके टुकडे इतस्ततः बिखर गयें। उनके सीने पर अब 'वंदे मातरम् के बिल्लों के स्थान पर थे रक्त के निशान - उनके घावों से झरने वाले रक्त के निशान - वीरोचित भूषण। परंतु मन में थी अखंड धधकती देशप्रीति की ज्वाला!

जुलुस में गश्ती चिठ्ठी विरोधी सभा के भी लोक थें। इस सभा की स्थापना वंदेमातरम् प्रतिबंध परिपत्रक के विरोध में हुई थी। ये लोग पूरे बंगाल में अपना जाल बिछाये हुए थे। वे नित्य वंदे मातरम् के बिल्ले लगाते थे। भूपेन्द्र दत्त, बारिंद्र घोष, भगिनी निवेदिता उनके प्रेरणास्रोत थे। वे नारे लगाते रास्ते पर आयें और पुलिसों का एक भयानक तूफान उनसे आ टकरा। लाठियों के प्रहार की आवाज और वंदेमातरम् घोष से वातावरण भर गया। मानो, श्वास लेते समय वंदे मातरम् शरीर के अंदर प्रवेश करता था और दुगुने जोर से,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्तिभाव से, वीरत्व की बोध से बाहर पडता था। इस हाथापायी में कुछ लोग पासके तालाब में गिर गये।

बरिसाल का लाठीमार ब्रिटिश शासन के द्वारा किया हुआ प्रथम लाठीमार। निःशस्त्र, निरपराध नागरिकों पर सशस्त्र, अर्धसैनिक दल ने क्रूरता से लाठियाँ चलाने की परंपरा यहींसे प्रारंभ हुई। जैसे वंगभंग आंदोलन यह प्रथम जनआंदोलन है, वैसे बरिसाल अपने आपमें अनेक बातों में प्रथम और अद्वितीय रहा।

'लाठी नहीं, मैंने तो माँ का वरदान प्राप्त किया।'

पुलिस ने चित्तरंजन गुह ठाकूर को बूरी तरह पीट कर तालाब में फेंक दिया। जब तक उसे होश था तब तक वह वंदे मातरम् का उद्‌घोष करता रहा। किसीने उसे बाहर निकाला, मलमपट्टी की। उनका उस समय का वक्तव्य आज भी हमें रोमांचित करता है। "जब मैने पहली बार वंदे मातरम् का नारा लगाया, तो मैं सोच रहा था कि कोई सैनिक मुझे गोली से उडा देगा। पर उसकी बजाय तूफान की तरह मेरे शरीर पर लाठियाँ बरसने लगी। ज्यों ही मैंने वंदे मातरम् का नारा लगाया, मुझे ऐसा लगा कि मेरी धमनियों में महान् शक्ति का संचार हो रहा है। लाठियों की जो वर्षा मेरे शरीर पर जारी थी वह मातृभूमि के शुभाशिष जैसे साफ कर लिये थें। पुलिस ने ना किसीकी आयु का ख्याल किया न किसी की प्रतिष्ठा का।

पुलिस अधिकारी केंप ने शचींद्रबाबू के चेहरे पर घूंसा मारा। उनके मूँह से खून निकलने लगा। तभी सुभेदार बाबूरामसिंह की आवाज गूंज उठी - 'मारो सालों को - हुक्म हो गया है।' आज भी हमारे देश में स्वदेशभक्तों पर टूट पडने वाले बाबू रामसिंह अनेक हैं।

लोगों को पीटते हुए नृशंस हाथ थक गयें परंतु उनके मन में उभरा देशभक्ति का ज्वार शांत नही हुआ। शासन पर खून सवार था और वंगवासी रक्त की होली खेलने की खुशियाँ मनाने पर सवार थें।

तोरणद्वार पर लगी लाल-टेनों को पुलिस ने लाठियों से तोड डाला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परंतु देशभक्ति के प्रकाश से आलोकित हृदयों को हतोत्साह करना उन्हें संभव नही हुआ। वह अत्याचारी दृश्य देख कर कृष्णकुमार व्यथित हो उठे। बॅरिस्टर चौधरी जी ने कॅंप को चेतावनी दी - 'आपके पुलिस को रोकिये वरना बडी परेशानियों का सामना करना पडेगा।

दो सौ रुपये दंड

केम्प क्रुध्द हो उठा पर उसने बिगुल बजाया - लाठीमार रुक गया। जैसे ही आग बढे सभापति को चित्तरंजन गुह, फणींद्रनाथ बॅनर्जी, बेचाराम लाहिडी, वृजेंद्र गंगोपाध्याय, के घायल होने का समाचार मिला, सुरेंद्रनाथ पीछे लौट आये। सभापति को लेकर बाकी लोग सभास्थान की ओर चल पडें। पुलिस के पास पहुंच कर उन्होंने कहा - आप निहत्थे लोगों पर क्यों अत्याचार कर रहे हो? अपराध किया होगा तो आप उन्हे गिरफ्तार कर सकते हैं। मैं ही एकमेव जिम्मेदार हूं इस उद्रेक के लिये। आप मुझे गिरफ्तार कर सकते हैं।

'आपको गिरफ्तार किया जा रहा है।' केम्प ने कहा। 'हमें भी गिरफ्तार कीजिये।' कह कर अश्विनी बाबू आगे वढे।

'नही - और किसीको नही।' कॅंप झल्लाया। और उन्हें लेकर कलेक्टर के बंगले की ओर चल पडा। अश्विनीबाबू भी अपने नेता के साथ चल दिये।

सुरेन्द्रनाथ बॅनर्जी केम्प के साथ जिला कलेक्टर के सम्मुख उपस्थित हुए। कोर्ट बंद थी। अतः उनके निवासस्थान जाना पडा। इमर्सन ने उन्हें २००/- रुपये दण्ड भरने का आदेश देते हुए पूछा - 'क्यों, मि. बॅनर्जी, आपको यह लज्जास्पद नही लग रहा है?"

'जी, नही - आपका यह कहना अनुचित एवं आक्षेपार्ह है। मुझे इस कथन पर आपत्ति है।' उद्वेग से सुरेन्द्रबाबू ने कहा। यह स्पष्टोक्ति सहन करना इमर्सन के बस की बात नही थी। मन्मथनाथ गुप्त के अनुसार सुरेंद्रनाथजी ने अदालत में एक कुर्सी पर बैठने की चेष्टा की, इस पर अदालत की अमर्यादा करने के अपराध में उनको और २००/- रु. दण्ड दिया गया।

'मेरा कोईअपराध नहीं है। आप जो चाहे करें' तपाक से सुरेंद्रबाबू ने कहा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परंतु दूसरे ही क्षण वह सम्भल गये। बरिसाल में उमड़ पड़ा जन सैलाब उनकी आँखों के सामने नाचने लगा। उन पर होने वाले संभावित अत्याचार उसे बेचैन करने लगे। 'मैं नही पहुचूंगा तो वे और क्रोधित होंगे जनज्वार का पता नही वह क्या-क्या उथल पुथल मचा देगा। मुझे सभास्थान् पहुंचना चाहिये। तो ही सभा की कार्यवाही सुचारु रूप से चलेगी।' इस विचार के साथ दण्ड राशी जमा कर के वे बाहर आयें।

देशहितार्थ हर कोई कार्य करें

इधर सभा प्रारंभ हुई। मंगलाचरण के रूप में 'वन्दे मातरम्' गाया गया। अपने प्रिय नेता सुरेन्द्र बाबू तथा सभापति अश्विनीबाबू की अनुपस्थिति का दुःख कलेजे पर पत्थर रख कर सभा प्रारंभ हुई। अश्विनीबाबू के भाषण का कार्य चंद्रदास गुप्त बाबू ने किया।

अब्दुल रसूल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा 'हिंदु मुस्लिम, ईसाई स्वाधीनता की लड़ाई में सहभाग लें - देशहितार्थ हर कोई कार्य करें।'

मोतीलाल घोष ने दोपहर के रोमहर्षक लड़ाई का आँखों देखा हाल सब के सामने प्रस्तुत किया। उनकी धाराप्रवाही वाणीने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

अभी भाषण चल ही रहे थें कि प्रवेशद्वार की ओरसे वंदे मातरम् का मल्हार गाना प्रारंभ हुआ। गरज-गरज कर लोग वंदे मातरम् बोल रहे थें। सभा की कार्यवाही रुक गयी। सभी पीछे मुड़ कर देखने लगें। शरद पूर्णिमा की रात उबलते दूध जैसा ही मानो, आनंद का ऊफान आया था और प्रत्येक जयकार से वह दूसरे के मन में भी आनंदलहरें निर्माण कर रहा था। 'क्या हुआ' प्रत्येक की उत्सुकता परमोच्चता पर पहुंची थी। यह जल्लोष था - सुरेन्द्रबाबू की मुक्तता का। वे सभा मंडप में प्रवेश कर रहे थे। उस समय का वर्णन उन्होंने स्वयं किया है - 'सभा मंडप में मैंने एक अद्‌भुत दृश्य देखा। प्रतिनिधि पंक्ति में खड़े होकर वंदे मातरम् का गगनभेदी नारा मुक्त कंठ से लगाने लगे, जब मैं मंच पर पहुंचा तो ऐसा लगा - जैसे सभीके चैहरे पर अपूर्व तेज प्रस्फुटित हो रहा था। लोग भूल गये थें कि अभी कुछ देर पहले यहाँ अमानुष अत्याचार हो चुका है। न जाने कितने बंधु घायल हो गये। कितनों के रक्त से यह भूमि सन गयी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोग उत्सुक थे कलेक्टर के साथ हुई भेंटवार्ता सुनने के लिये। वह भी सुरेंद्रबाबू के मुख से। जनमन का अनादर वे कैसे कर सकते?

बिपिनचंद्र पाल मार्गदर्शन कर रहे थे उसी बीच मनरंजन गुह ठाकुर उस दिन का छोटा नायक चित्तरंजन गुह ठाकुर को लेकर मंच पर उपस्थित हुएँ। उसकी स्थिति देख कर लोग आगबबूला हो उठें। मनरंजनबाबू प्रभावी वक्ता थे - आज विषय भी था निर्मम लाठीहल्ले का जिसका अत्यधिक शिकार उनका प्रिय बेटा था। स्वाभाविक उनके वक्तृत्व में एक अनोखी धार सी आयी जिसका जनमानस पर गहरा प्रभाव हुआ। उसको प्रकट करने का एकही बलिष्ठ माध्यम उनके पास था - वंदे मातरम् का जयघोष।

कहानी अत्याचारों की

उस दिन शासन पर मानों, हिरण्यकश्यपु ही सवार था। उसके जैसे ही उन्हें जल-स्थल-काष्ठ-पाषाण सभी ओर वंदे मातरम् दिखाई दे रहा था। उसके घोष ने शासन की नींद हराम की थी। फुल्लर-कर्झन की युति की दमन-नीति हिरण्यकशिपु को भी लज्जित करनेवाली थी।

कृष्णकुमार मित्र एक ग्न्थकार थे। बड़ी सजगता से उन्होंने उस दिन कि घटनाएँ शब्दबध्द की है। 'एक घर के खंभे पर 'वंदे मातरम्' शब्द अंकित थे। पुलिस को वह देख कर भनक चढ़ गयी। उन्होंने उस घर को मिट्टी में मिला दिया। देशभक्त की दृष्टि से क्या हुआ? मिट्टी में मिट्टी मिल गयी।

मेरा कसूर क्या है ?

एक छोटा बालक अपने रसोईघर में बैठा था। बैठे-बैठें अचानक 'वंदे मातरम्' के स्वर होठों पर आयें। गाते-गाते वह भावविभोर हो उठा। गश्ती पुलिसों ने वह देखा-सुना। उनका खून खौल गया - इतनी गुस्ताखी! उस बालक को क्रूरता से घसीट कर कोर्ट के सामने वह ले गये, उसे कोड़े लगाये। वह समझ नही पाया कि उसका अपराध क्या है। वह न सभा प्रतिनिधि था न सभा स्थान पर उपस्थित था। वह तो अपने घर में माँ की वंदना कर रहा था। क्या, माँ की वंदना भी अपराध है? उसका मन व्याकुल हो उठा परंतु बड़ी शान से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फटके खाता रहा - बोलता भी रहा 'वंदे मातरम् - वंदे मातरम्।'

दो हलवाईयों की दूकान पर 'वंदे मातरम्' अंकित था। जाते-जाते किसी पुलिस ने देख लिया - वे गुस्से से लाल हो गये - तत्काल वह दुकान भी तोड़ी, दूकान दारों के सर भी फोडें। अंधेर नगरी - चौपट राजा ऐसा ही कारोबार चल रहा था। न्याय किससे मांगे ?

महिलाओं का योगदान

इस अधिवेशन में तीन सौ महिलाएँ भी उपस्थित थी। उनके सामने दो ही पर्याय थे - एक तो वाहन की राह देखते हुए मंडप में रुकना (क्योंकि घोड़ा-गाड़ी बग्गी, पालकी वापिस लौटा दिये थे। अब उन्हें शाम को ही बुलाया था), दुसरा था कि कड़कती धूप में बिना संरक्षण घर लौटना। उन्होंने पहला पर्याय पसंद किया। तनावपूर्ण वातावरण में भी सभा होते तक वे डंटकर बैठी रही। उस समय की महिलाओंकी आदतें तत्कालीन रुढ़ियाँ, मानसिकता ध्यान में लेते हुए कहना पड़ेगा कि यह उनका बहुत बड़ा साहस था।

अधिवेशन का द्वितीय चरण

१५ अप्रैल १९०६ को प्रातः सभा की कार्यवाही प्रारंभ हुई। विपिनचंद्र पाल भविष्य की नीति, कर्तव्य के बारे में उद्‌बोधन कर रहे थें। अचानक काषायवस्त्रधारी ब्रह्नबांधव मंच पर उपस्थित हुए। जनता को अभिवादन करते हुएँ उन्होंने दमदार आवाज में घोष किया - 'वंदे मातरम्'। जनता ने भी उतने ही शक्तिशाली स्वर में प्रतिसाद दिया - 'वंदे मातरम्'।

'मा गो जाय जेन जीवन चलें' इस गीत से सभा प्रारंभ हुई। यह वही गीत था - जो गाने पर कल लाठियाँ बरसी थी। ब्रह्नबांधवजी ने वृषकेतु की कथा बताते हुए प्रतिनिधियों का गौरव किया। बंगाली युवकों ने अपना रक्त बहा कर स्वदेश - स्वदेशी के लिये ईश्वरीय वरदान प्राप्त किया है।

स्मारक भव्य बनायेंगे।

कुछ समय पश्चात् अश्विनीबाबू उठे। अपने कार्य क्षेत्र से आये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रतिनिधियों पर लाठीहल्ला हुआ, अपने नेताको बंदी बनाया गया, उन्हें दण्ड हुआ, उनका अपमान हुआ इससे उनका कलेजा छलनी हुआ था। वे भावुक हो उठे उन्होने प्रस्ताव रखा जिस स्थान पर पुलिसों का नृशंस तांडव हुआ, हमारे बंधुओंने लाठियाँ झेली, हमारे प्राणप्रिय नेताओं की गिरफ्तारी हुई उसकी स्मृति चिरंतन करने हेतु प्रेरणास्त्रोत बनाने हेतु - वहाँ एक स्मृतिस्तंभ बनाया जाय। वह यह वीरगाथा युग-युग कहता रहेगा। अश्विनीबाबू का यह प्रस्ताव जनता ने सिरमाथे पर लिया। वंदे मातरम् घोषणा से उसका स्वागत करते हुए लोगोंने स्वयंप्रेरणा से धन-समर्पण करना प्रारंभ किया। होडसी लगी थी - नगद रुपये, अंगूठी, कंगन, माला जो भी हो इस पवित्र कार्य के लिये देने की।

तब तक सुवर्ण कंगन नही पहनुंगी

श्रीमती सरोजिनी देवी नरोत्तमपुर की निवासी थी। दान का सिलसिला प्रारंभ होते ही उन्होंने अपने सुवर्णकंगन समर्पित करते हुए प्रतिज्ञा की - जब तक बारिसाल की सड़कों पर 'वंदे मातरम्' बोलने पर प्रतिबंध रहेगा, तब तक मैं सुवर्णकंगन नही पहनूंगी। वंदे मातरम् की गूंज यही मेरा अलंकार है, सौभाग्य है। जिस दिन यह प्रतिवंध हटेगा वह स्वर्णदिन रहेगा।

यज्ञस्थल पर जाकर उसका विध्वंस करना असुरों की परंपरा ही है। बरिसाल का अधिवेन एक यज्ञ ही था, माँ की मुक्ति का, माँ की अखंडता के लिये। उसकी याचनायें थी इन नेताओं के भक्तिभावपूर्ण भाषण। उसी बीच राक्षस जैसा उपस्थित हुआ - पुलिस अफसर कॅम्प।

उसको वहाँ देखकर ही लोगों की आँखों में खून उतर आया। उनकी निगाहों से कैम्प की अंतरात्मा कांप उठी। शीघ्र ही वह सुरेन्द्रबाबू के पास पहुंच गया और उसने कहा 'मैं आपके निकट स्वयंको सुरक्षित समझता हूं।' सुरेंद्रबाबू ने अपनी दृष्टि से ही उसको आश्वस्त किया। कैम्प तो एक दूत था - उसने बताया - 'सभा समाप्ति के पश्चात् रास्ते से गुजरते हुए 'वंदे मातरम्' के नारे नही लगेंगे। ऐसा मान लेंगे तो ही यह सभा चल सकती है। अन्यथा सभाकी कार्यवाही यहीं समाप्त की जायेगी। इस पर किसीने भी हाँ नही भरी। नारा नहीं लगाने का वायदा करनेकी किसीकी भी तैयारी नही थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'तो फिर यह सभा यहीं समाप्त होगी। लोग यहाँ से तुरन्त, चले जायें अन्यथा मुझे जबरन सभा भंग करनी पड़ेगी।' इस वक्तव्य से लोग क्षुब्ध हो गये। मानों उनके घाव पर ही नमक छिड़क गया। वंदे मातरम् की गूंज से बरिसाल गूंजने लगा।

सभी नेताओं ने विचार किया - कल ही काफी रक्तपात हो चुका है। आज उसकी पुनरावृत्ति करना व्यर्थ है। श्री.बी.सी. चॅटर्जी ने कहा - 'हम सभा समाप्त करेंगे - पुलिस गोली चलाने से पूर्व'।

अलख जगाये

बिपिनबाबू ने स्थिति सम्भलते हुए संयत स्वर मे कहा - 'अब हम लोग घर जायेंगे। गांव-गांव में सभा करेंगे - अलख जगायेंगे - क्रांति की आग जला देंगे। आज दुःख का नही आनंद का दिन है।'

सभा विसर्जित हुई। प्रतिनिधि घर लौटे। उनका बलिदान व्यर्थ न गया। बंगाल के कोने-कोने मे वायुगति से यह वार्ता पहुंची। हर स्थान पर प्रतिनिधियों का स्वागत हुआ। वंदे मातरम् के इस दृश्य रूप से भगिनी निवेदिता गद्गद् हो उठी। बड़ी ममता से बोली। देश की स्वाधीनता के लिये आपने खून बहाया है। इस त्याग से आप और बंगाल की भूमि पवित्र हुई है।

आगे चलकर दिसंबर में अ.भा.कांग्रेस के अधिवेशन में बरिसाल की घटना का उल्लेख करते हुए रासबिहारी घोष ने कहा - बरिसाल में शांति बनाये रखने के लिये पुलिस ने शांति की हत्या कर डाली। हम सब शांतिप्रिय लोग है। वह सहजता से ढलती नहीं है। क्योंकि हम दृढ आधारशिला पर स्थित है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नही कि उस दिन की शोकान्तिका की स्मृतियाँ हमेशा के लिये अप्रतिष्ठा अपमान - मान खंडना की स्मृतियाँ है। उसे हम भूल गयें तो मनुष्य कहलाने के पात्र ही नही।

सत् संकल्प का दाता नारायण

वंदे मातरम् का सितारा बुलंद हो गया। एक मास के पश्चात् शासन ने वंदे मातरम् पर लगी पाबंदी हटायी। बरिसाल खुशी से झूमने लगा। दस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हजार लोगों ने जुलुस निकाला - जुलुस का गीत था -

बल सिंहनादे जय जय रवे वंदे मातरम्
उठुक भवे शुनुक सबे मंत्र गंभीरतम्
वंदे मातरम् - वंदे मातरम् ।

सिंह की तरह दहाड़ते हुए जय जय स्वर में वंदे मातरम्। विश्व गुंजायमान हो। सब सुने लोग गंभीरतम मंत्र वंदे मातरम् ।

*****

त्रिमूर्ति वंदे मातरम्

मेरी माँ सृजन (ब्रह्मा), पालन (विष्णु), संहार (महेश) की त्रयी है। स्रष्टा के रूप में वह हमें जल, फल, वायु, आहार, विश्रामदायिनी ज्योत्स्ना भरी रातें और आनंदवर्धक पुष्प तथा हरितमा प्रदान करती है, नानाविध सुख देती है, वर देती है।

पालनकर्त्री माँ ने हमें विद्या प्रदान की है। धर्मपथ दिखाया है, प्यार भरा हृदय दिया है सुख-दुःख के मर्म समझाये है, यही माँ सर्वदा हमारे शरीर में प्राण बनाकर हमें जीवनशक्ति, प्रभु की भक्ति प्रदान करती है। जहाँ देखते है - सर्वत्र माँ की ही छवि दिखाई देती है।

वहीं दुर्गा बनकर दुर्गति से रक्षा करती है, वहीं कमला बनकर धनसंपत्ति प्रदान करती है, वहीं वाणीरूप धारण कर ज्ञान, विज्ञान सिखाती है, माँ की तुलना किस से करें, उसी से हमें आधार प्राप्त होता है वही धरणी है, वही भरणी है, उसी के सरल स्मित से सारे सुफल प्राप्त होते है।

माँ का एक संहारक रूप भी है। अपनी संतति पर जब-जब विपत्ति आती है तो माँ अपने कोटि-कोटि कंठ से हुंकारती, कोटि-कोटि हाथों में शस्त्र धारण कर, बहुबल वाली बनकर, रिपुदल का विनाश कर, विपत्ति सागर से तार देती है। ऐसी त्रिमूर्तिरूपिणी माँ की वंदना - वंदे मातरम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् - अनुशीलन समिति

वंदे मातरम् ! वंदे मातरम् बीसवी शताब्दि के भारत की राष्ट्रीय अभीप्सा का यथार्थ उद्घोष था। वह राजनीतिक मेधा की अभिव्यक्ति नही, भारतीय साहित्यिक प्रतिभा की महान उपलब्धि थी। कारण साहित्य, समाचारपत्र, शिवजयंती उत्सव, रक्षाबंधन जैसे सांस्कृतिक अनुष्ठानों की प्रेरणा का भी यही मंत्र था। उसी शृखंला की एक कड़ी थी अनुशीलन समिति।

अनुशीलन समिति -

ईसवी १९०१ के आसपास 'ठाकुर भवन' में एक क्रान्तिकारी समिति का जन्म हुआ। सभापति थे बॅ. प्रमथनाथ मित्र, उपसभापति थे अरविंद और चित्तरंजन दास, सुरेन्द्रनाथ ठाकुर कोषाध्यक्ष बने। व्यायामशाला का अध्यक्षपद दिया गया यतीन्द्रनाथ बॅनर्जी को।

ईसवी १९०२ की बसंतपूर्णिमा के दिन उस गुप्त समिति का नामकरण हुआ अनुशीलन समिति। आगे चल कर १९०६ में जब ढाका में इसी प्रकार की समिति की स्थापना करने का निश्चय हुआ तब श्री प्रमथनाथजी ने अपना मन्तव्य प्रकट किया, 'मैंने कलकत्ते की समिति का नाम 'अनुशीलन समिति' रखा है। आप भी यही नाम रखियें, तभी पूरे बंगाल में एक ही नाम की शक्तिशाली समितियाँ गठित होगी। बंकिमचंद्र के 'अनुशीलन' नामक लेख से मैंने यह नाम लिया है - अनुशींलन शद्ब का अर्थ है 'अभ्यास'।

सेडीशन कमेटी लिखती है, "उन्होंने अनुशीलन समिति नामक एक संस्था की स्थापना की थी। इस संस्था का उद्देश्य संस्कृतिसंवर्धन और लोकशिक्षण ही था। इस समिति की एक शाखा कलकत्ता में और दुसरी ढाका में काम करती थी। अपने कार्य का विस्तार करने हेतु उन्होंने प्रांत भर में शाखाएँ बनाई। ढाका अनुशीलन समिति की ५०० शाखाएँ थी। इस समिति के अलावा उसी पद्धति से पर भिन्न भिन्न प्रकार के संघ स्थापित हो रहे थे। तथापि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजद्रोह का प्रसार इन संगठनों का उद्देश्य था। अपने धर्म के अनुकूल वातावरण निर्माण करने हेतु साधन रूप अखबार, राष्ट्रगीत, पुस्तकें, गुप्त सभा मंडल की स्थापना आदि कार्य वे कर रहे थे। कोने कोने में असंतोष निर्माण करना ही इसका ध्येय था। जहां कहीं भी असंतोष को ऐतिहासिक नाम 'विद्रोह' मिला, कि उसके स्वागत की तैयारी शासन व्दारा प्रारभं हो जाती थी।

महाराष्ट्र में 'अभिनव भारत' और कही 'गदर' इस नाम से संस्थाएँ कार्यरत हुई।

ढाका अनुशीलन समिति के संस्थापक थे पुलिनबिहारी दास। वे अपनी असाधारण संगठन-क्षमता के लिये प्रसिद्ध थें। उन्होंने ढाका में एक छात्रावास भी प्रारंभ किया था। दो सौ छात्र वहाँ रहते थें। ये सभी क्रांतिकारी थें। माँ की मुक्तता यह उनका लक्ष्य था - गुप्त समिति की दीक्षा यहं उनकी दीक्षा थी। और शस्त्रास्त्र शिक्षा उनकी शिक्षा थीं। माया-ममता-मोह-त्याग मातृभूरक्षणार्थ उनकी 'साधना' थी।

दीक्षा समारोह - दीक्षा स्वयं पुलिनविहारी देते थें। जिसें दीक्षा दी जाती उसे प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी। काली माँ के मंदिर में विधिपूर्वक दीक्षा दी जाती थी। -'त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणीं'- यह रुप दीक्षार्थी के हृदय पटल पर अंकित करते हुए हवन कराया जाता था। हवन, पूजन स्वयं पुलिनदासजी ही कराते थे। काली के चरणों के पास दो रिवाल्वर रखें जातें थें। हमेशा के पुजारी को भी वहाँ उपस्थित रहने की अनुमति नहीं थी। शपथविधि के पूर्व सदस्यों को व्रत रखने के लिये कहा जाता था।

समिति के. सदस्यों की आयु और योग्यता के आधार पर वर्गीकरण होता था।

प्रथम वर्ग - अल्पवयस्क बालक, द्वितीय वर्ग - किशोरावस्था, तृतीय वर्ग - विवाहित युवक, चतुर्थ वर्ग - प्रौढ़ एवं गृहस्थ व्यक्ति।

समितिं के प्रत्येक सदस्य को प्रतिज्ञापत्र दिया जाता था। वह प्रत्यालीड़ासन में बैठ कर मस्तक पर तलवार और गीता धारण कर के पढ़ना था। प्रत्यालीडासन सिंह की आक्रमक स्थिति का प्रतीक है। प्रतिज्ञा इस प्रकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की थी। प्रथम विशेष प्रतिज्ञा - 'परमेश्वर माँ, पिताजी, अभिभावक, नेता और शक्तिदेवता को साक्षी रख कर प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक समिति का कार्य पूर्ण नही होता, तब तक कार्यक्षेत्र छोड कर मैं नही जाऊंगा। मैं माँ, पिताजी, भाई, बहन, प्रपंच, घर इत्यादि के मोहपाश में भी लिप्त नही होऊंगा, और कोई भी कारण न बताते हुए नेता ने दिए हुए केन्द्र में कार्य करूंगा। मुझे सौंपे गये सभी कार्य दृढचित्त से, स्थिरता से व गंभीरता से करूंगा। यदि मैंने इस प्रतिज्ञा का पालन नही किया तो ब्राह्मण, माता, पिता और सभी देशभक्तों के शाप से मै जल कर भस्म हो जाऊंगा - 'ओम् वंदे मातरम्'।

दीक्षा के उपरान्त उन्हें शुध्द घी एवं चीनी मिश्रित कच्चा दूध पर्याप्त मात्रा में पीने को दिया जाता था। दल का अनुशासन बहुत कठोर होता था, गलत आचरण के लिये दंड हुआ करता था और वह था प्राणदंड।

आनंदमठ का प्रत्यक्षीकरण

अनुशीलन समिति - समिति का यह नाम, सदस्यों को दी जानेवाली प्रतिज्ञा, उससे वातावरण निर्मिति, अंत में नियमबाह्य आचरण होने पर प्राणदंड का घोष, इन सभी पर बंकिमचंद्र के साहित्य का तथा आनंदमठ का गहरा प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

'वंदे मातरम्' मंत्र को साकार रूप देने एवं उस रूप को भारतीय जनता के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए बंकिमचंद्रजी ने आनंदमठ का सृजन किया। उस गीत का उद्देश्य प्रस्तुत करने का कार्य 'आनंदमठ' ने किया। आनंदमठ अर्थात् वंदे मातरम् का चित्रांकन और अनुशीलन समिति अर्थात् उसको प्रत्यक्षीकरण था। कभी कभी यह प्रतिज्ञा का कार्यक्रम स्मशान में लिया जाता था। काली माँ की प्रतिमा रखी जाती थी। प्रतिज्ञा ग्रहण के पश्चात् सदस्य का गुप्त नाम रखा जाता था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक प. पू. डॉ. हेडगेवारजी भी अनुशीलन समिति के सदस्य थे। उनका गुप्त नाम था 'कोकेन'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रह्मबांधव उपाध्याय

सामान्य जनता की क्रान्तिकार्य के अनुकूल मानसिकता बनाने का कार्य अन्य अन्य वृत्तपत्रों ने किया है। श्री अरविंदो के कारण वंदे मातरम् समृध्द अवश्य हुआ परंतु जनसामान्यों में 'संध्या' पत्रिका के द्वारा क्रांति का बिगुल बजाया उपाध्यायजी ने ही। संन्यासी ब्रह्मबांधव उपाध्याय पर आनंदमठ एवं वंदे मातरम् का काफी प्रभाव था। वे कहते थे - 'प्रथम माँ को दास्यशृंखला से मुक्त करो, बाद में अपनी मुक्ति के बारे में सोचो।' उनका आग्रह था कि हर घर से, कम से कंम एक व्यक्ति राष्ट्र के लिए समर्पित होना चाहिए। आगे चल कर क्रांतिकारियों की एक अखंड शृंखला बनी। जिसने हँसते हँसते लाठी के प्रहार झेलें, फांसी के फंदे को आभूषण माना. उनके आव्हान को प्रतिसाद दिया।

वंदे मातरम् से प्रभावित हो कर उन्होंने 'संध्या' नियतकालिक प्रारंभ किया। उनके लेख तेजस्वी होते थे। विरला ही पत्रकार ऐसा होता है। अंग्रेजों के विरुध्द संघर्ष करने की मानसिकता बनाते हुए उन्होंने लिखा, "देह और आत्मा को क्रमशः नश्वर और अविनाशी मानने वालों को शारीरिक यातनाओं का क्या? एक चिथडे के समान सब कुछ तुच्छ मानने वालों को कौन दबा सकता है? जो लोग देह को ही सब कुछ मानते हैं उनको मृत्यु का डर है।"

इसी कालखंड में भूपेन्द्र दत्त एवं बारिन्द्र घोष द्वारा एक नया समाचार पत्र जन जन में क्रान्ति की ज्वाला भडकाने आ पहुंचा था 'युगान्तर' के रुप में।

युगांतर

'युगांतर' बारिन्द्र घोष द्वारा प्रारम्भ किया गया पत्र क्रान्तिकारक विचार-प्रणालि प्रचारित प्रसारित करने वाला था। भूपेन्द्रजी कहते हैं, 'युगांतर' नाम मेरा पसंद किया हुआ है। देवव्रत बसु से काफी विचार विमर्ष करने के बाद यह चुना गया था। यह नाम पं. शिवनाथ शास्त्री के 'युगांतर' नामक उपन्यास से लिया गया था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'युगांतर' अर्थात् एक युग से दूसरे युग में प्रवेश। अनुशीलन समिति क्रान्ति के माध्यम से जो नया स्वाधीनता का युग प्रवर्तित करना चाहती थी। उसका परिचायक था यह नाम।

श्री. पट्टाभि सीतारामय्या लिखते हैं - 'युगांतर' के कालमों में हिंसावाद का खुल्लमखुल्ला प्रचार किया जाता था।'

प्रारंभ में इसकी १४ प्रतियाँ बेची गयी - परंतु लोगों को जब इसका उद्देश्य समझ में आया तब तेजी से बिक्री बढ गयी। १९०७ में ग्राहकों की संख्या सात सहस्र थी। १९०८ में बीस सहस्र तक पहुंच गई। उसकी बिक्री खुदीराम बोस जैसे कुछ लोगों के चरितार्थ का साधन था।

तुम्हारे देश में खच्चर होते हैं

भूपेन्द्र, स्वामी विवेकानंदजी के भाई थे। वही तेजस्वी खून उनकी रगों में प्रवाहित था। ब्रिटिश स्वयं को सिंह कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। भूपेन्द्र दत्त ने उस सिंह पर ही हमला किया "तुम्हें सिंह कह कर कौन पुकारता है? हम तुम्हें ब्रिटिश सिंह क्यों कहें? तुम्हारे देश में न तो बाघ होते है ना सिंह। तुम्हारे देश में सिर्फ खच्चर गीदड और कुत्ते होते है। 'बचपन में जब हम तुम्हारे देश विषयक पुस्तकें पढते थें तब उसमें जिन जानवरों के बारे में पढा करते थे, राजनीति के क्षेत्र में भी इन्हीं जानवरों के स्वरूप से पाला पड रहा है। यह बोलते हुए शायद उनके सामने "दुर्गा दशप्रहरणधारिणी" सिंहवाहिनी आविर्भूत थी। वह दानवों को पैरों तले कुचल रही थी। हाँ वह जनसिंह को निमंत्रित कर रही थी। भूपेन्द्र दत्त का वक्तव्य याद दिलाता है कि हम भारत के पुत्र हैं। हम भरत के वंशज हैं - जो भरत बचपन में भी निर्भयता से सिंह के दांत गिनता था। तुम्हारे देश में खच्चर हैं। गीदड हैं। अर्थात् तुम भी खच्चार जैसे हो। ऐसा ब्रिटिशों का कहना कितना साहस और निर्भीकता का था! कहाँ से पायी थी यह शक्ति, इस संतान ने? माँ के लिए सर्वस्व समर्पण यह भाव ही उनका संबल था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूपेन्द्र पकडे गये। एक बार भगिनी निवेदिता ने बीस हजार की जमानत दे कर उन्हें छुड़ाया। वे जब भूपेन्द्र की माताजी को मिलने गयी तो भावावेग में सहजता से कह गयी "माँ, आपने दो दो नररत्न दिये हैं, भारत माँ को।"

महिलाएँ अभिनंदन करने गयी

भूपेन्द्र दत्त की वृध्द मानाजी ने - माँ भुवनेश्वरी ने अपने पुत्र की मातृभूमि की सेवा पर हर्ष प्रगट किया - हाँ, वे प्रसन्न थी क्यों कि आज उनकी भी 'वंदे मातरम्' माँ की सेवासाधना पूर्ण हुई थी। उन्होंने अपनी कोख से जन्में पुत्र माँ के चरणों पर लुटा दिये थें। एक कवि कहते हैं कि परमेश्वर स्त्री को लोकोत्तर रूप तेज किस लिए देता है? इस लिए कि उसने तेजस्वी संतान निर्माण कर समाज को समर्पित करना है। यह तेज, शक्ति, निसर्ग ने दान के रूप नही दी है। धन उसने ऋण के रूप में दिया है और तेजस्वी संतती निर्माण कर ही स्त्री उस ऋण से मुक्त हो सकती है। आज उन्होंने वह ऋण चुकाया था वह कृतार्थ थी। भुवनेश्वरी देवी और भूपेन्द्र दोनों ने अपने जीवन की पूंजी उंडेल दी - दोनों का ध्येय विषय एक ही था - भारत माता। बंगाल की ५०० महिलाएँ भुवनेश्वरी देवी का अभिनन्दन करने उनके घर पहुँच गयी। महिलाओं में उत्पन्न यह जागृति ही - 'युगातर' की यशस्विता स्पष्ट करती है।

भूपेन्द्र दत्त ने सिंहगर्जना करते हुए न्यायालय को जताया "मैं भूपेन्द्र दत्त घोषित करता हूँ कि मैं 'युगांतर' का सम्पादक हूँ और जितने भी लेख इस पत्र में प्रकाशित हुए हैं। उन सबके लिए मैं अकेला ही उत्तरदायी हूँ। मैंने वही किया है जो अपने देश के हित में मुझे करना चाहिये था।"

३० करोड जनता है

भूपेन्द्रजी के ज्वालाग्राही लेख का प्रकाशन 'वंदे मातरम्' को भी महंगा पडा था। 'संध्या', 'वंदे मातरम्' और 'युगांतर' तीनों पत्र सरकार ने अल्पावधि में जप्त किए। समाचारपत्र का प्रकाशन बंद कर अथवा उसकी प्रतियाँ जलाकर राष्ट्र-जागरण कार्य रोका नही जाता। हमारे इस नवयुवक ने अदालत में घोषणा की - 'मुझे बंद किया तो क्या हुआ? मेरे पीछे अखबार का काम संभालने के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिए ३० करोड़ जनता है।'

इसी विश्वास के कारण यह आंदोलन इतना फला फुला कि राजद्रोह या दंड का भय जनता के मन से ऊठ गया - क्यों कि जन जन में राष्ट्रीयता का प्रखर बोध जग गया था। हमारी माँ 'रिपुदलवारिणी' है यह विश्वास उन्हें हुआ था - अतः वे अब प्रश्न कर रहे थें -

अवला केनु माँ एतो बले?

*****

वं. मौसीजी का कुछ बातों का आग्रह रहता था - चैत्र शु. १ अपना नववर्षदिन है, यह हमारा राष्ट्रीय विजयदिन है अतः उस दिन घर-घर पर राष्ट्रीय पताका फहरानी चाहिये। संपूर्ण वंदे मातरम् का गायन समिति के कार्यक्रमों के अंत में होना चाहिये। इसीके परिणाम स्वरूप १९७६ में वंदे मातरम् गीत की शताब्दि समिति ने मनायी। वंदे मातरम् के प्लॉस्टिक के बिल्ले तैयार कर अनेक विद्यालयों से संपर्क किया, विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित कर 'वंदे मातरम्' का परिचय कराया। वे दिन थे आपातकाल के कितने निर्बंध, कितने अडंगे, कितनी पूछताछ - फिर भी सभी कार्यक्रम बहुत दर्जेदार ढंग से संपन्न हुए।

वंदे मातरम् स्वदेशी आंदोलन का मानों प्राण ही था। श्री. सतीशचंद्रजी लिखते है -

स्वदेशी संग्रामे जाई आत्मदान।
वंदे मातरम् गाओ रे भाई ।

स्वदेशी आंदोलन में आत्मदान करिएँ और भाईयों वंदे मातरम् गाईये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् और ध्वज

वंदे मातरम्! वंदे मातरम् शिवत्व का भाव निर्माण करनेवाला ज्योति से आसमंत आलोकित करनेवाला एक अनोखा काव्य। शालिवाहन की कथा हम सुनते हैं कि उसने मिट्टी के पुतलों में प्राण भर कर उनके द्वारा विजय प्राप्त की। 'वंदे मातरम्' ने भी मन से अचेतन भारतीय जनता की चिति जागृत कर स्वाधीनता का शंखनाद प्रारंभ किया। युध्द कोई भी हो ध्वज के बिना वह कैसा होगा? आश्चर्य की बात है . . . . काँग्रेस के अधिवेशन में युनियन जॅक ही फहरता था। आखिर "सेफ्टी व्हाल्व" के रूप में ही उसकी निर्मिति हुई थी न?

भगिनी निवेदिता की कल्पना में राष्ट्रध्वज

आधुनिक काल में हमारा राष्ट्र-ध्वज कैसा हो इसका सर्वप्रथम विचार किया भगिनी निवेदिता ने। खिलाडी संघ, राजनैतिक दल आदि की ध्वजा तैयार की जाती है। परंतु इस पध्दति से राष्ट्रध्वज तैयार नही हो सकता - वरन् राष्ट्र के इतिहास, परंपरा के अनुकूल जनता के हृदय में से प्रस्फुरित होता है। राष्ट्र की आत्मानुभूति ध्वज के माध्यम से प्रकट होती है।

ध्वज यह कोई कपडे का टुकडा नही, वह हमारी अस्मिता का प्रतीक, राष्ट्र का प्रतिनिधि होता है - वह शत्रु के हाथ में न जावे इस लिये सैकडों को प्राण देना पडता है। हमारी भक्ति, समर्पणभाव में परिवर्तित होती है परंतु वह अपना ही ध्वज हो तब। सदियों से जो विचारधारा राष्ट्र में चली आ रही है, उनकी भावना, कल्पनाओं का वह उद्‌गाता होना चाहिये।

निवेदिता की कल्पना में

भगिनी निवेदिता अर्थात् हिंदुत्व का जाज्वल्य अभिमान। एवं जागृत अभ्यासक। वह अपनी सहेली मॅक्लिऑड को लिखती है - 'हिन्दुओं की मानसिकता को लाल रंग से कोई प्रेरणा मिलेगी नही, यह ध्यान में आने के कारण मैंने भगवा ही पसंद किया।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनके द्वारा कल्पित ध्वज पर अंकित था वज्र। दधीचि ऋषि ने समाज कल्याण के लिये स्वयं का ज्ञान, तपस्या, संपूर्ण जीवन समर्पित किया था। उन्होंने अपनी अस्थियाँ तक समाजहित के लिये समर्पित की। उससे ही वज्र बना। दधीचि की इस त्याग भावना ने ही वज्र को अजिंक्य बनाया। निवेदिता कहती है - 'वज्रधारी अजिंक्य होता है। हे माँ, तू हमारा स्वार्थ ले जा। हमें कीर्ति, धन, सुख कुछ भी नही चाहिये। हे माता, तू सूर्यकिरण है और उस सूर्य किरण की आंच में स्वयं की आहुति देने वाले हम हैं, ओस के बिंदु जैसे!'

भगिनी निवेदिता

यह ध्वज आयताकार था। गेरुवे वस्त्र के मध्य में गोलाकार घेरे में वज्र - यह गुणाकार चिन्ह में है। और उस गोलाकार के बाहर उन्होंने दो घोष बुने थे। एक 'वंदे मातरम्' और दुसरा 'यतो धर्मस्ततो जयः'।

यह ध्वज विद्यालय की छात्राओं द्वारा उन्होंने बनवाया, कशीदाकारी करवा ली। दि. २६-१२-१९०६ को कलकत्ता में काँग्रेस अधिवेशन हुआ - उस समय लगाई गई स्वदेशी प्रदर्शनी में यह ध्वज उन्होंने रखा थां।

मॅडम कामा ने ध्वज फहराया

दूसरी बार ध्वज तैयार किया मॅडम भिकाजी कामा ने। २२ अगस्त १९०७ में सर्वप्रथम वह विश्व के सम्मुख आया। जर्मनी में स्टुगार्ट में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समाजवादी विचारधारा के लोगों का एक अंतर्राष्ट्रीय जागतिक सम्मेलन था। इस सम्मेलन में प्रतिनिधि अपने अपने देश का झंडा लेकर आये थे। मॅडम भिकाजी कामा और सरदार सिंह राणा दोनों इस सम्मेलन में उपस्थित थें।

समय मिलने पर मॅडम कामा ने अत्यंत ओजस्वी भाषा में भारत में अंग्रेजों द्वारा किये जानेवाले अत्याचारों की कहानी सुनाई। उनके भाषण मे अन्य देशों

मॅडम कामा व ध्वज का चित्र

के प्रतिनिधि भी व्यथित हुएं। अपने भाषण के पूर्व उन्होंने संपूर्ण वंदे मातरम् गाया। इससे प्रतिनिधि उत्तेजित हुएँ। भाषण के अंत में उन्होंने आवेश से ध्वज फहराते हुए कहा "यह देखिये, भारत का राष्ट्रध्वज, भारतीय देशभक्तों के रक्त से यह पवित्र हो चुका है। सदस्यगण, मैं आपसे अनुरोध करती हूँ कि आप लोग इसका सम्मान और वंदन करें।" कैसा था यह ध्वज? इसमें हरा केशरी और लाल रंग की आडी पट्टियाँ थी। हरी पट्टी पर भारत के राष्ट्रीय पुष्प-कमल थे उनकी संख्या ८ थी। केसरी पट्टी पर थे सूरज और चांद, हिन्दू और मुसलमानों के प्रतिकों के रूप में। परंतु इस ध्वज का भारत में प्रचार नहीं हुआ।

श्री. ग.वि. केतकरजी ने, "स्वतंत्र भारत का आद्य राष्ट्रध्वज "ऐसा इसका वर्णन किया है। इस ध्वज का मूल चित्र आज भी 'केसरी' कार्यालय पुणे के ग्रंथालय में फ्रेम कर रखा है। ध्वज लिये हुए मॅडम कामा का छायाचित्र मुंबई के सावरकर सभागृह में है। ध्वज और छायाचित्र पं. श्यामकृष्ण वर्माजी के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कार्यालय में श्री इंदुलाल याज्ञिक को प्राप्त हुआ और उन्होंने ये चीजें केत... ओं को सौंप दी।

इस प्रकार का एक ध्वज हेमचन्द्रदास कानुनगोजी ने बनाया था। आप चित्रकला में निपुण थे। आपको विप्लव मंत्र की दीक्षा योगी अरविंदजी ने दी थी। पॅरिस मे आप बम बनाने की प्रक्रिया सीखने गये थे। वापस आकर क्रांतिकारियों के साथ बम बनाते रहें। एक मान्यता है कि इन्होंने भी ध्वज बनाया था, वह हूबहू इसी ध्वज जैसा-दोनों में उपरवाली पट्टी लाल रंग की थी। नीचे की पट्टी में सूरज और चांद की आकृति थी। आकार भी एक जैसा। दोनों की बीचवाली पट्टी में "वंदे मातरम्" देवनागरी लिपि में अंकित था।

दूसरी भी मान्यता इस विषय में है कि अरविंद के छोटे मौसाजी कृष्णकुमार मित्र ने भारत का ध्वज बनाया था। और ७ अगस्त १९०९ में सुरेन्द्रनाथजी की अध्यक्षता में एक विशेष समारोह में वह फहराया गया। संभव है कि कृष्णकुमार मित्र और हेमचन्द्रजी ने मिल कर ध्वज बनाया हो और वही मॅडम कामा को दिया गया हो। परंतु वंदे मातरम् का प्रभाव जनमानस पर इतना गहरा था कि बंगाल या पॅरिस में कल्पनाएँ उभर आयी वह वंदे मातरम् की ही।

काश! इन तीनों में से एक भी ध्वज राष्ट्रध्वज के रूप में सामने आता तो "वंदे मातरम्"इस जादू भरे मंत्र का प्रभाव जनमानस पर कायम रहता आज की जैसी देश की स्थिति न होती।

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् समाचार पत्र

वंदे मातरम्! वंदेमातरम् अंग्रेजी साम्राज्य-शक्ति को चुनौती देने वाला, निःशस्त्र जनता की आवाज को प्रकट करनेवाला सामर्थ्यशाली शब्द। जिस गीत से यह शब्द प्राप्त हुएँ वह गीत और भारत का स्वाधीनता संग्राम, कभी एक दूसरे से अलग नही हो सकतें। इतनी अभिन्नता इन दोनों में हुई है। १९०५ से ले कर कुछ समय तक यह गीत अपने यशोवैभव के परम शिखरपर था।

अभिवादन, जप, पत्रलेखन के समय 'श्रीं' कार के स्थान पर वंदे मातरम् लिखना प्रारंभ हो गया। वैसे ही आगे चल कर 'वंदे मातरम्' इस नाम से कई समाचार पत्र भी प्रारंभ हुएँ। और उन्होंने अत्यंत सराहनीय कार्य किया है।

६ अप्रैल १९०६ बंगाल में ही 'वंदे मातरम्' इस नाम से समाचार पत्र प्रकाशन आरंभ हुआ। प्रेरणा थी ब्रह्मबांधवजी की। सर्वप्रथम आर्थिक सहाय्यकर्ता थे श्री हरिदास हलदार। उन्होंने ५०० रु. दिये थे। बाद में सुबोधचंद्र मल्लिक आर्थिक भार वहन करते थे। इस पत्र का ध्येयवाक्य था भारत भारतीयों के लिये।

हिंसा का हिंसा से सामना करना, अन्याय की पोल खोलना और उसका विरोध करना, अत्याचार के आगे सिर झुकाने से इन्कार करना - छल कपट और विश्वासघात के गढों को दूर करना, बहिष्कार और स्वदेशी को प्रोत्साहन देना ये वंदे मातरम् की नीति के मुख्य फलक थे।

तलवार से तीखी लेखनी

'वंदे मातरम्' का आकार का एक पूरे पृष्ठ होता था। हरे कागज पर बहुत सफाई से छपा संपादकीय तथा अन्य विशेष लेखों से भरा रहता।

आज भी त्रिमूर्ति भवन में इसका छायाचित्र विद्यमान है। 'वंदे मातरम्' के संपादकीय और निबंध ऐसे ओजस्वी अंग्रेजी में लिखें जाते - जिन की झनझनाहट भारतीय जगत् के लिये तब तक बिल्कुल अनजानी थी। वह उग्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राष्ट्रीयता का पत्र था।

वंदे मातरम् के लेखन ने थोडे ही समय में यह प्रमाणित कर दिया कि लेखनी तलवार से तीखी होती है और उसकी ज्वाला में क्रूर शासन भी भस्मीभूत हो सकता है। श्री. अरविंदजी ने अपना काम इतनी निपुणता से किया कि उनके दुश्मनों को भी सराहना पड़ा। अँग्लो इंडियन एक्सप्रेस का अभिप्राय लक्षणीय है। उनके लेख राजद्रोह की दुर्गंध से भरे होते थें फिर भी उनकी वाक्य रचना इतनी होशियारी से की जाती थी कि वे कानून की सीमा के अंदर रहते थे।

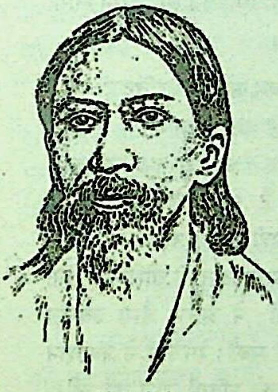

Sri Aurobindo

प्रारंभ में बिपिनचंद्र पाल संपादक थे। दिसंबर में योगी अरविंदजी संपादक बने। 'वंदे मातरम्' के संस्थापक बडे प्रतिभाशाली थें। 'वंदे मातरम्' एक क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी पत्र था। भारतीय पत्रकारिता में एक नया गूंजता हुआ स्वर उभरा। जे.एल. बॅनर्जी वर्णन करते हैं 'वंदे मातरम् का असली लेखक कोई क्यों न हो लेखनी श्यामसुंदर की हो या किसी और की, लेकिन स्वर अरविंद घोष का ही होता था।

आंदोलन का प्रेरणापत्र

'वंदे मातरम्' यह उग्रपंथियों का, क्रांतिकारी आंदोलन का मुखपत्र था। वंदे मातरम् यह युध्दघोष था और संपूर्ण देश में इसने उग्र कांतिकारी लहर उत्पन्न की। मातृभू के लिये रक्त बहाना और मृत्यु को आलिंगन देना, जिनका मुक्ति का मार्ग था - ऐसे एक दो नही असंख्य हुतात्मा 'वंदे मातरम्' के लेखों से तैयार हुएँ। वंगभंग घोषणा के कारण फैली हुई आंदोलन की आग में निरंतर घी डालते रहने का काम यह पत्र कर रहा था। Doctorine of Passive Resistance इस नाम से सुविचारित, भविष्योन्मुखी, प्रभावकारी निबंध प्रकाशित हुएँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वे तत्कालिन रणनीति के सिध्दान्त थे। लोग बडे चाव से उसे पढते। इस पत्र की साहसपूर्ण वृत्ति, सशक्त विचारधारा, उसके स्पष्ट भाव, उसका शुध्द और सबल शब्दचयन, उसका झुलसता हुआ व्यंग, उसका परिष्कृत मजाक, ये ऐसी चीजें थीं जिन्हे भारतीय या एंग्लोइंडियन कोई भी पत्र न छू सकता था। रोज सुबह होते ही केवल कलकत्ता के नही, भारत के सभी भागों के पढे लिखे लोग तात्कालिक, उत्तेजक प्रश्नों पर उसकी सशक्त घोषणाओं की प्रतीक्षा करते थें।

भारत की पत्रकारिता के इतिहास में इसने एक नया ही पर्व प्रारंभ किया। यह समाचार पत्रों के इतिहास में एक एकमेवाद्वितीय ऐसा पत्र था जिसने लोगों का मन क्रांति के लिये तैयार किया।

इसकी कमी एक ही थी। धन की। अलिपुर बम कांड में अरविंदजी पकडे गये। तत्पश्चात् उसे चलाना और भी कठीन हो रहा था। क्या करें - लिखना तो कोई कठिन बात न थी पर छपवाने के लिये पैसा? आखिर उन क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं ने विचार किया इसका अंत तो अटल है, पर हम इसे बंद कर रहें हैं इस तरह की मजबूरी की सामान्य मृत्यु उचित नही होगी। उसका नाम और कार्य आज तक जैसा वीर वृत्ति का था वैसा ही उसका अंत भी वीरोचित होना चाहिये। बस! योजना बन गयी। विजय चॅटर्जी ने अग्नि जैसा ज्वलंत संपादकीय लेख लिखा। सरकार उसे सहन न कर सकी। सरकार ने प्रकाशन प्रतिबंधित किया और दि. २९ अक्तुबर १९०८ को प्रतियाँ जप्त कर ली।

उसके दो दिन पूर्व ही उन्होंने एक संदेश दिया था। हमारे लोग जानते हैं कि 'वंदे मातरम्' ने हमें हत्या के लिये प्रवृत्त किया है या हममें पवित्र और उदात्त भावना उद्दीपित की है। हरा पत्र (हरे कागज पर छपने के कारण प्राप्त संज्ञा) भविष्य में उन्हें प्रेरित करेगा या नहीं, पता नही परंतु उसने यथार्थता से उनकी प्रिय मातृभू के अतुलनीय हरेभरे वैभव की प्रेरणा जाग्रत की है। अब वे तृण के पत्ते से भी स्फूर्ति प्राप्त कर सकते हैं। भारत के दैदीप्यमान सुपुत्र जो किसी जप्ती के परे है ऐसे लोगों की कहानियों से उनका रक्त खौल सकता है। हमारा क्या होगा? हमपर क्या बीतेगी? इसका विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'वंदे मातरम्' का यह भविष्य यथार्थ ही हुआ। तृण का प्रत्येक तिनका, इस धरती का कणकण, भारतीयों को प्रेरणा देता रहा।

सी सॉं एक ओर दबाने से दूसरी ओर से ऊपर ऊठता है वैसे ही 'वंदे मातरम्' का हुआ। भारत में उसपर प्रतिबंध लगा, पर रोस्टरडॅम में मॅडम कामा और अन्य क्रांतिकारिओं ने 'वंदे मातरम्' नियतकालिक लाला हरदयाल के संपादकत्व में प्रारंभ किया। भारत में हो रही यह क्रांति अंग्रेजों को शैतान जैसी प्रतीत होती थी अतः वे उसको दूर रखना चाहते थें परंतु अब वह उनके देहली पर आ खडी हो गई। अपने प्रथम अंक में उन्होंने लिखा 'विदेशियों के विरोध में जो युध्द बंगाल के शूर और बुध्दिमान् नेताओं ने 'वंदे मातरम्' के माध्यम से प्रारंभ किया वह युध्द हम अपनी पूरी शक्ति से जारी रखेंगे।'

'वंदे मातरम्' के मुखपृष्ठ पर दो चित्र रहते थे। एक भारत के संकल्पित राष्ट्रध्वज का, दूसरा, कोश से तलवार निकाल रही भारत माता का। चरणों में भगवद्‌गीता का - अर्जुन को युध्द के लिये प्रेरित करनेवाला श्लोक, देवनागरी में छपता था।

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यासि।।

ऊपर के हिस्से के बीच में चौकोर ध्वज था। उस पर तीन पट्टियाँ, तीन रंगों का प्रतिनिधिन्त्र करती थी। पहली पट्टी पर आठ कमल, दूसरी पर देवनागरी में 'वंदे मानरम्' और तीसरी पर सूर्य और चंद्र अंकित थें। झंडे के नींचे लिखा रहता था "भारतीय संस्कृति का मासिक मुखपत्र" उसके नीचे उध्दरण रहता था - अतः हे आनंद, अपने लिये तुम स्वयं दीप बनो। बाहर के किसी आश्रय की खोज मत करो, अपना निर्वाण परिश्रम से प्राप्त करो।

उसके पश्चात् अंक का विवरण रहतां बाँयी और जिल्द संख्या बीच में प्रकाशन स्थान - जिनेवा तथा दिनांक और दाँयी ओर पत्र की क्रम संख्या। नीचे पत्रव्यवहार का पता - मॅडम कामा, डाक जिनेव्हा, स्विझर्लण्ड। तथा पत्र स्वैच्छिक दान की सहायता से चलता है इसका कोई निश्चित चंदा नही हैं। १० सितम्बर १९०९ को प्रथम अंक प्रकाशित हुआ जिनेव्हा से। उसके पश्चात्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रॉटर्डम से प्रकाशित होने लगा।

'वंदे मातरम्' शीर्षक की रचना इस प्रकार की थी - ध्वज के ऊपर छपा रहता था 'दिं' उसके नीचे दाँयी ओर वंदे और बाँयी ओर मातरम्।

थोडे ही समय में वंदे मातरम् काफी लोकप्रिय हुआ। वंदे मातरम् का सर्वत्र बहुत सम्मान होता था। सरकार घबडा गयी। सिमला के केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के निदेशक ने भारत सरकार के नाम ३० मई १९१३ को एक पत्र लिखा जिस में मार्च १९१३ के अंक में छपे - 'हम क्या?' को विद्रोही बताया गया। अंत में वे यह सुझाव रखते है कि वे डच सरकार से इस विषय में विरोध प्रदर्शन करे परंतु भारत सरकार ने अपने को इस मामले में असहाय पाया।

वंदे मातरम् खालसा

सन्फ्रान्सिस्को में भारतीय क्रांतिकारिओं ने 'भारत माता संघ' स्थापन किया और गुप्त रूप से प्रकाशन भी। वंदे मातरम् खालसा - यह उसका नाम। खालसा - अर्थात् - भारत माता के हाथ में दी हुई तरवार, जो देशधर्म के रक्षण के लिये है, न कि विश्वासघात के लिये।

वर्तमान में हमारी मातृभू का शरीर हिमालय से केपकामोरिन आसन्न मरणावस्था में है। उसका जीवनरस - चूसा जा रहा है। अतः हे खालसा! जागो हम कभी पदच्युत न हो। सत् श्री अकाल।

सन्फ्रान्सिस्को से निकलनेवाला यह पत्र भारत में पहुंचता था। शासन ने पोस्ट और टेलिग्राफ जनरल को सूचना दी थी कि इस तरह के पत्र जप्त कर, केन्द्रीय गुप्तचर विभाग की ओर सौंपे जाँय।

१९२० में लाला लजपतरायजी ने पंजाब अखबारान अॅन्ड प्रेस कंपनी लि. रजिस्टर करवा ली। इसके माध्यम से 'वंदे मातरम्' यह समाचार पत्र प्रारंभ किया। वंदे मातरम यह बहुत महत्त्वपूर्ण समाचारपत्र था। उर्दू पत्रकारिता के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह थोडे ही समय में प्रमुख उर्दू दैनिक बन गया, जिसका प्रभाव पंजाब में किसी भी अन्य दैनिक समाचारपत्र से अधिक था और इसने उर्दू पत्रकारिता का स्तर सुधारने में सर्वतोमुखी योगदान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिया। इस योगदान में विविधता, जोरदार और विचार से भरपूर टिप्पणियां तथा उच्च नैतिक मूल्यों के साथ उच्च कोटि के निष्पादन और कर्मचारियों को उदार वेतन देने के रूप में था।

वंदे मातरम् नें महात्मा गांधी के नेतृत्व में आरंभ किये गये महान सामूहिक आंदोलन का नीडर और सुसमाचार प्रचारक बन कर शीघ्र ही प्रचलन, प्रसिध्दी तथा शक्ति प्राप्त कर ली।

लाला हरदयालजी ने और एक बात मन में ठान ली थी कि कारागृह के सुधार के लिये यथासंभव प्रयत्न करना और वंदे मातरम् में कारागार की स्थिति का रहस्योद्घाटन भी किया। परिणामस्वरुप वह अंग्रेजों की मानहानि का एक मामला बन गया था। उसके कारण और कुछ अन्य रहस्योद्घाटन हुएँ। फिर एक समिति नियुक्त हुई और इसकी सिफारिशों पर एक कानून बना। जिस पर लार्ड ओलिवर - सेक्रेटरी ऑफ स्टेट्स फॉर इंडिया ने वंदे मातरम् की शानदार प्रशंसा की।

१९४१ में बंबई से गुजराथी में एक दैनिक लोगों को प्रबोधित करने लगा, उनको भी नाम भाया वंदे मातरम्।

उर्दू, अंग्रेजी, हिन्दी इन सभी भापाओं पर 'वंदे मातरम्' का जबरदस्त संमोहन हमें दिखाई देता है।

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् अभियोग

वंदे मातरम्! वंदे मातरम् अपने आप में कस्तुरी की सुगंध समाये हुएँ शब्द! सुगंध के साथ उन्हें मधुर नाद है और त्रिभुवनमोहिनी का मनभावन रूप भी! इसी लिये वह भारत के सुदूर कोने कोने में अपनी मोहिनी फैला सका।

वंदे मातरम् गीत को संसार में प्रसिध्द करने का संपूर्ण श्रेय 'वंदे मातरम्' समाचारपत्र तथा श्री. अरविंद को ही है।

मातृभूमि के लिये बलिदान देने के लिये उत्साह ने ज्वार का रूप ले लिया। श्री. अरविदजी ने ९ अप्रैल १९०७ से २३ अप्रैल १९०७ तक 'निष्क्रिय प्रतिरोध' इस विषय पर लेखमाला लिखी। २३ अप्रैल को लेखमाला समाप्त हुई और २४ को पुलिस ने वंदे मातरम् के विरुध्द मुकदमा दायर किया। श्री. अरविंद, बिपिनचंद्र पाल और कुछ अन्य लोग अभियुक्त माने गयें। २७ जून १९०७ के संस्करण में 'हिंदुस्थानियों के लिये राजनीति' इस शीर्षक से संपादक के नाम एक पत्र प्रसिद्ध हुआ। उसने भी खलबली मचा दी। आखिर ३० जुलाई १९०७ को वंदे मातरम् के कार्यालय की तलाशी ली गयी। और राजद्रोह के आरोप में मुकदमा चलाया गया। वही मुकदमा 'वंदे मातरम् मुकदमा' इस नाम से भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में प्रसिध्द है।

श्री. अरविंद को बंदी बनाने के लिये १६ अगस्त को वारंट जारी हुआ। वे स्वयं ही थाने में जा कर उपस्थित हो गये। परंतु उन्हें जमानत पर छोड दिया गया। मुकदमा चलता रहा। मुख्य साक्षीदार थे बिपिनचंद्र पाल। उन्होंने गवाही देने से इन्कार कर दिया। इस अतुलनीय साहस के लिये ब्रिटिश शासन ने उनको पुरस्कार दिया - कारावास।

अरविंद, रविंद्रेर लहो नमस्कार

अरविन्दजी की गिरफ्तारी ने सारे राष्ट्र में हलचल मच गयी। शासन सोच रहा था कि अरविंद को पकडने के बाद लोगों का जोश ठंडा हो जायेगा - ऊफानना ज्वार थम जायेगा - परंतु हुआ ठीक उलटा 'केसरी' 'मराठा' जैसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समाचारपत्रों को तो चटपटा मसालाही प्राप्त हुआ। रविंद्रबाबू अत्यंत व्यथित हुए। हृदय की असीम वेदना ने पचपन पंक्तियों के काव्य की निर्मिति की।

'अरविंद, रविंद्रेर लहो नमस्कार।
देवतार दीपहस्ते जे असित भवे।
सेई रुद्रदूते, बले कोण राजा कवे
पारं शास्ते दिते?

देवता का दीपक ले कर जो रुद्रदूत आया है कौनसा राजा भला उसको दंड दे सकता है? हे अरविंद! रविंद्र का नमस्कार स्वीकार करो।

अरविंद जी रिहा होने के बाद रविंद्रबाबू उन्हें मिलने के लिये गये। अरविंद को गले लगाते हुए रविंद्र बोले "आपने हमें ठग लिया।"

"आपको जादा दिन इंतजार न करना होगा। और थोडे ही दिनों में आपकी इच्छा पूर्ण होगी।" हंसते-हंसते अरविंदजी ने उत्तर दिया।

अरविंदजी की वाणी सत्य हुई। १९०८ में माणिकतल्ला बम केस में वे फिरसे पकडे गये। वंदे मातरम् मुकदमे में उन्हें कुछ भी सजा नही हुई।

वास्तव में अरविंद 'वंदे मातरम्' के मुख्य संपादक थे यह सूर्यप्रकाश जैसा ही स्पष्ट था परंतु शासन उसे प्रमाणित न कर सकी। अतः इस पत्र के मुद्रक अपूर्व बोस को सजा दी गयी। अपूर्व बोस को अंग्रेजी न लिखना आती थी न पढ़ना। वे बेचारे यह भी न जानते थे कि पत्र में क्या छप रहा है।

वंदे मातरम् अभियोग का परिपाक.

आज तक श्री. अरविंद पर्दे के पीछे रह कर कार्य करते थे। वे मितभाषी, संकोची वृत्ति के थे। इस मुकदमे ने उन्हें राष्ट्रीय मंच पर अग्रिम पंक्ति में ला कर खडा किया। देश का प्रबुध्द वर्ग उन्हें आंदोलन का नेता मानने लगा।

सुशील कुमार सेन

यह मुकदमा चल रहा था उस समय सुशीलकुमार के साहस ने भारत के वीरत्व का विश्व को विश्वास कराया और किंग्जफोर्ड को कसाईकाजी किंग्जफूर्द बनाया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लालबजार में चीफ प्रेसिडन्सी मॅजिस्ट्रेट किंग्जफोर्ड की अदालत में २६ अगस्त १९०७ को यह मुकदमा चल रहा था। अभियुक्त थे बिपिनचंद्र पाल। हजारों की संख्या में नवयुवक उपस्थित थें। 'वंदे मातरम्' समाचार पत्र के प्रति अपना समर्थन वंदे मातरम् घोष से प्रकट कर रहे थे। ज्योंही बिपिनचंद्र जी को न्यायालय में लाया गया - 'वंदे-मातरम्' के निनाद से वातावरण प्रकंपित हो उठा। परिस्थिति पर नियंत्रण करना असंभव हो गया।

लोगों को अदालत से बाहर खदेडने की आज्ञा पुलिस को दी गयी। उन्होंने अंधाधुंध लाठीयाँ चलाई। लाल मुँहवाला एक दरोगा सिपाहियों को अधिक बलपूर्वक लाठीप्रहार करने के लिये उकसा रहा था। सुशीलकुमार नाम का एक १५ वर्षीय बालक ये सहन न कर सका। वह उस अंग्रेज दरोगा पर कूद पड़ा। मानों वह अपने स्वजनों पर हुए प्रत्येक लाठी प्रहार का हिसाब पूरा करना चाहता था।

फिरंगी की नानी मरी

वह दरोगा विशालकाय था और सुशीलकुमार १५ वर्षीय कोमल बालक! दर्शकों को सुशीलकुमार युवा अभिमन्यु जैसा प्रतीत हो रहा था। सुशील ने जमकर पिंटाई करते हुए उस दरोगा को जमीन पर गिराया। सभी स्तिमित हो गये। फिरसे एक बार वंदे मातरम् घोष का ज्वार उठा और किंग्जफोर्ड का मस्तकशूल भी। किंग्जफोर्ड ने सुशील को पंद्रह बेतों की सजा फर्मायी। उसकी आयु का विचार करते हुए यह दंड अत्यधिक था। बेतों की सजा बडी कठोर सजा मानी जाती थी। उसका नाम लेते ही बड़े-बड़े लोगों के भी होश उड़ने लगते थे। बेतों की सजा होने पर जल्लाद आरोपी की नंगी पीठ पर पूरी ताकत से प्रहार करता। हर बेत का पीठ पर निशान पड़ जाता था। शरीर लहुलुहान होता - चमडी भी उधडती चली जाती। दो-चार बेतों के बाद ही आरोपी बेहोश हो जाता था। वही दंड अब सुशील को मिला। पूरे कलकत्ते में यह समाचार दावाग्नि जैसा फैल गया।

पशु को बलि चढाते समय जैसी तय्यारी की जाती है वैसी ही किंग्जफोर्ड ने भी की। उसने अदालत के बाहर एक तिकोनी मैदान निश्चित किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुशील के हाथ पैर बांधे गयें, और जल्लाद ने जम कर कोडे मारना शुरू किया। दरोगा उतावील था सुशीलकुमार की चीखें सुनने के लिये, परंतु सुशीलकुमार की आंखों के सामने था बरिसाल का चित्तरंजन गुह ठाकुर जिसने कहा था - "लाठियों की जो वर्षा मेरे शरीर पर हुई वह मुझे मातृभूमि वरदान सदृश लग रही थी।"

सुशीलकुमार ने निश्चय किया "मेरी माँ बहुबलधारिणी है। वह अतुलित बलशालिनी है। और उसका पुत्र होने के कारण मैं भी बलशाली हूं। मेरे मूँह से चीख निकलेगी तो मेरी माँ को लज्जित होना पड़ेगा - अतः मैं चीखूंगा नही।"

इसी विचार के साथ निश्चय का वह महामेरू अडिग रहा। हर बेत-प्रहार के साथ मदभरे आवाज में वह 'वंदे मातरम्' कहता गया। बेत खाने के बाद वह मत्त हाथी के समान ऐसा ऐंठता हुआ चला गया कि जैसे कुछ हुआ ही नही।

सुशील का गौरव

'संध्या' ने पौ बारह होकर प्रशंसा के फूल बिखेरते हुए लिखा -

'सुशील ने कुदान भरी
फिरंगी की नानी मरी।'

२८ अगस्त को उसके सन्मानार्थ सभा आयोजित की गयी। कलकत्ता के सभी महाविद्यालय स्वयं प्रेरणा से उसके सम्मान में बंद रहें। नगर के बाजारों से सभास्थान तक एक विशाल जुलुस निकाला गया। लोग शौर्यगीत गा कर सुशील पर फूलों की वर्षा करते रहें। कॉलेज स्क्वेअर में विराट सभा हुई। सुरेंद्रनाथ बॅनर्जी ने उसके लिये स्वर्णपदक भेजा। कलकत्ता में स्वर गूंज रहे थे-

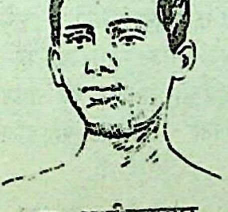

डा सुशीलकुमार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाय जाबे जीवन चले
जगत् माझे तोमार काजे - वंदेमातरम् बले . . .
बेंत मेरे किया भोलाबी
आमरा कि मायेर कोई छेले

"हे माँ, वंदेमातरम् कहते हुए तुम्हारे लिये मेरे जीवन का अंत हो गया तो भी चिंता नही। हे अंग्रेजों! आपको क्या लगता है कि बेतों के कारण आप हमें मातृभू को भूला सकेंगे? हम हमारे माँ के ऐसे कायर पुत्र नही हैं।"

आगे चल कर सुशील 'युगांतर' का सदस्य बन गया। किंग्जफोर्ड को शीघ्र ही यमालय भेजने का निश्चय हुआ।

नासिक - दक्षिण का बरिसाल

वंदे मातरम् अभियोग नाम का एक मुकदमा उसी काल में महाराष्ट्र में भी चल रहा था। अभियुक्त थे - श्री. ग. दा. उपाख्य बाबाराव सावरकर तथा उनके दस सहयोगी।

नासिक के सावरकर परिवार को कौन नही जानता? बाबा, तात्या, नारायण तीनों भाई क्रांति-कार्य में जुटे थे। मित्रमेला, अभिनव भारत, महिलाओं के लिये युवतीसंघ कार्य के प्रेरणास्रोत थे। बंगाल की अनुशीलनसमिति जैसी महाराष्ट्र में 'अभिनव भारत' यह क्रांतिकारी संगठन कार्यरत था। अभिनव भारत के सदस्य शिवाजी महाराज की प्रतिमा के सम्मुख बैठ कर प्रतिज्ञा लेते थे। अंत में जयघोष करते थे 'वंदे मातरम्।'

१९०६ के प्रारंभ में ही नासिक के जिलाधीश ने 'सभाबंदी' का आदेश जारी किया। बाबारावजी ने संक्रांति के दिन इस आदेश का भंग कर यथार्थ 'संक्रमण!' का निश्चय किया। जाहीर सभा के पत्रक वितरित किये गये। परिणामतः उन्हें दस रुपये दंड हुआ। बाबारावजी वरिष्ठ न्यायालय पहुँचे - दंड में सहुलत प्राप्त की। जिलाधीश आगबबुला हुए और सभाबंदी की आवश्यकता बतलाते हुए उन्होंने राज्यपाल को पत्र लिखा - 'नासिक यह दक्षिण का बरिसाल बन रहा हैं।'

'सभाबंदी के लिये यह समय उचित नहीं है। परिस्थिति बिगड़

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जायेगी' राज्यपाल ने उत्तर दिया। बस्! यही से दंडसत्र का होमकुंड धधकने लगा।

सीमोल्लंघन

२७ सितंबर १९०६ विजयादशमी का पावन पर्व था। महाराष्ट्र की परंपरानुसार मित्रमेला तथा अभिनव भारत के युवक सीमोल्लंघन के लिये गये। वे कालिका मंदिर की ओरसे आते समय वंदे मातरम् का जयघोष कर रहे थें। शिवराम नामक पुलिस शराब तथा गुलामी की नशा में था। 'चिल्लाहट वंद करों' - वह झल्लाया और बाबारावजी के सिर पर डंडे से प्रहार किया। पीठ में गुद्दे मारना शुरू किया। वंदे मातरम् के लिये इस प्रकार का अपशब्द सहन करना असंभव था। उन्होंने झेंप कर शिवराम की गर्दन पकड़ कर उसे नीचे गिराया और सभीने अपने हाथ साफ कर लिये। परदेशीजी ने उसके मस्तिष्क पर लाठी से प्रहार किया। अचानक महादू नाम का और एक सिपाही वहाँ पहुँचा। उसे देखते ही सभी युवक अलग-अलग मार्ग से नौ दो ग्यारह हो गये। खरे वकील और बाबाराव, जानबूझ कर ही वहाँ रुके थे। महादू उन्हें पुलिस थाने ले गया। अब तलाशी होगी - बाबाराव विचार कर रहे थे - जेब में कुछ कागज थे। सोंच समझ कर वे महादू से पीछे रहें और रास्ते में मिले अपने बर्वे नामक मित्र से बाते करने लगें और बडी कुशलता से अपने जेब के कागज उसके जेब में डाल दिये। महादू बाबारावजी को रंगे हाथ पकडा इस की खुशी में जा रहा था - पीछे क्या हुआ उसे पता भी न चला। ज्योंही बाबाराव और खरे वकील पुलिस थाना पहुँचे, त्रिंबक दरवाजे से सशस्त्र पुलिस आयी। 'अभिनव भारत' के सदस्यों के लिये ही उनकी योजना थी।

बाबाराव सावरकर

'दो ही लोग?" बाबारावजी और श्री खरे की ओर देखते हुए पुलिस ने पूछा, 'यहाँ तो काला कुत्ता भी नही! क्या, वृक्षों पर गोलियों की बौछार करनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है" युवकों की चपलता ने पुलिस को त्रस्त कर दिया। खरे तथा बाबारावजी की तलाशी ली गयी और उनके पास आपत्तिजनक कुछ भी नही मिलने के कारण उन्हें मुक्त किया गया। विजया दशमी का पर्व तो खुशी से मनाया गया। परंतु दूसरे ही दिन ११ लोगों को पकडा गया। उनमें से कुछ लोग विजयादशमी के लिये नासिक से बाहर गये थे। अंधेर नगरी में यह तो स्वाभाविक ही था। ग्यारह लोगों में से वा.स. खरे, बाबाराव सावरकर, सखाराम दा. गोरे, रा.के. दातार, महादेव गाडगीळ, नरहर दा. केतकर, केळकर, नारायण सावरकर और श्रीधर वर्तक।

रामभाऊ दातारजी ने अपनी बुध्दि की कमाल कर दी। पुलिस ने उन्हें वॉरंट दिखलाते हुए प्रश्न पूछा - 'मुझे पता नहीं!' उन्होंने उत्तर दिया। रामभाऊ अभिनव भारत के सदस्य तो थे, परंतु सरकारी नोकरी के कारण हमेशा पीछे रहकर काम करते थें। अतः पुलिस उन्हें पहचानती नहीं थी। उसका लाभ उठाते हुए ग्यारह हमीदारों के माध्यम से अभिभावकों की रिहाई करवायी।

मालेगांव विभाग के मॅजिस्ट्रेट प्लॅकेट के सामने अभियोग चलाया गया। 'वंदे मातरम्' अभियोग नाम से बहुचर्चित हुआ। यह अभियोग एक ही स्थान पर नही अपितु नासिक जिले के अन्यान्य गावों में भी चलाया गया। अभियुवकों को परेशान करने का यह एक बहाना था। परंतु अभिनव भारत के युवक बडे तेजतर्रार दिमाग के थे। जहाँ अभियोग चलता था वहाँ स्वदेशी, बहिष्कार, स्वराज्य, राष्ट्रीय शिक्षण इस चतुःसूत्री के प्रचार की धूम मचाते। जिस आंदोलन को ब्रिटिश नामशेष करना चाहते थें उनके ही प्रयासों से वह सबल बन गया। ८ मई १९०७ को अभियोग का निर्णय हुआ। २८ सितंबर १९०६ अभियुक्तों को अलग अलग सजाएँ तथा दंड फर्माया गया।

८ मई १९०७ को नासिक का 'वंदे मातरम्' अभियोग समाप्त हुआ और बंगाल में ७ जुलाई से प्रारंभ हुआ। मानों रविंद्रनाथजी के शब्द -

'मराठी साथी आजि हे बंगाली।
एकसाथे चले महोत्सव काजि।।'

मातृ-विमोचनार्थ दोनों प्रांत हाथ में हाथ बांधे ध्येयमार्ग पर चलते रहे थें।

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छात्रों का सहभाग

वंदे मातरम्। वंदें मातरम् एक ऐसा गीत और उद्घोष कि जिसने परवर्ती भारतीय युवा पिढी को स्वातंत्र्य चेतना से अनुप्राणित किया था। इस मंत्र का उच्चारण करते असंख्य लोगों ने फाँसी के फंदे चूमें। मातृमूर्ति के अदृश्य रुप को वंदे मातरम् ने पुनः जगा दिया था। माँ को बंधन मुक्त करने की आकांक्षा से सम्पूर्ण देश आंदोलित हो उठा। वातावरण ही कुछ ऐसा बन गया था कि छोटे-छोटे बच्चों पर भी 'वंदे मातरम्' की मुहर अंकित हुयी थी। स्थान-स्थान पर अनेक निर्बंध लगे हुए थें। महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलकजी की सभा में जाने से रोक दिया गया। वंदे मातरम् गीत पर भी प्रतिबंध था। परंतु लाख छिपाने पर भी स्फुल्लिंग छिप नही सकता। बंगाल में सार्वजनिक 'वंदे मातरम्' गायन पर प्रतिबंध था। वंदे मातरम् का नारा देनेवाले छात्रों को विद्यालय से निष्कासित किया जाता था।

भगिनी निवेदिता के बालिका विद्यालय की प्रार्थना वंदे मातरम् यही थीं।

वंदे मातरम् कहने पर दंड

नवम्बर १९०५ को रंगपूर में एक विद्यालय में २०० छात्रों पर, सार्वजनिक सभा में भाग लेना, सामुहिक वंदे मातरम् गाना इस हेतु पाँच-पाँच रुपये दंड दिया गया था। कुछ छात्रों ने विद्यालय परिसर में नारे लगाए थे अतः उन्हें दंडित किया गया। अन्य विद्यालयों के दरवाजे भी उनके लिये बंद रहें।

शिक्षणाधिकारी की कमाल

१८ जनवरी १९०६ किशनपुर में शिक्षणाधिकारी ने मुख्य अध्यापक को आदेश दिया, "पूरी कक्षा के छात्रों से ५०० बार लिखवां ले कि 'वंदे मातरम् के नारे लगाना मूर्खता है, असभ्यता है, समय की बरबादी हैं"। ५०० बार वंदे मातरम् लिखने से छात्रों को वंदे मातरम् अच्छी तरह से याद हो गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् के दिवाने

वाराणसी सम्मेलन में सुरेन्द्रनाथ बॅनर्जी ने बताया कि वंदे मातरम् गाने के कारण छः लोगों को पुलिस ने पकड़ा, उन्हें कारागार की कोठियों में बंद किया गया। वहाँ भी वे वंदे मातरम् गाते रहें। मानो दीवारें ही गा रही हो। युवकों की यह अदम्य देशभक्ति देख कर जेलर द्रवित हुआ। उसने भोजन की व्यवस्था की परंतु युवकों ने उसका स्वीकार नही किया। वे अपनी देशभक्ति की धुन में ही मस्त थे। इसी श्रृंखला की मुकुटमणि जैसी भूषणभूत एक घटना नागपुर में घटी।

स्वागत का अनोखा प्रकार

भारत का हृदय स्थल है नागपुर। वहाँ एक विद्यालय है नील-सिटी हायस्कुल (जो आज धनंवटे नगर विद्यालय के नाम से विख्यात है।) चौदह वर्ष आयु का केशव हेडगेवार उस विद्यालय में पढ़ता था। यह एँक निराला ही छात्र था। उसके मन में आग धधक रही थी - माँ के पारतंत्र्य की। 'वंदे मातरम्' पर प्रतिबंध मन नही मानता था। प्राणपण से इसके विरोध की योजना उसने अपने मित्रों की सहायता से बनायी। शाला निरीक्षक अधिकारी नित्य के निरीक्षण के लिये विद्यालय में आनेवाले थे। यह सुअवसर था, योजना के क्रियान्वयन के लिये। हर वर्ग के हर छात्र के पास बात गुप्तता से पहुँच गयी। सभी को कल्पना मान्य हुई। हां हम ऐसा ही करेंगे। जोर शोर से स्वागत करेंगे।

शाला निरीक्षक अधिकारी विद्यालय में आये। मुख्याध्यापकजी उन्हें ले कर एक कक्षा में पहुँचे। उनके सम्मानार्थ.सब विद्यार्थी ऊठ कर खड़े हुएँ और एक साथ गरज उठे 'वंदे मातरम्'। वे चौंक गये और दूसरी कक्षा में गये वहाँ भी यही घोष। हर कक्षा में ऐसा ही होता रहा। विद्यालय की दीवारें भी इस जय घोष से पुलकित हो उठी। निरीक्षण कार्य रुक गया। अधिकारी क्रोधित हो उठें। वे मुख्याध्यापक पर बरस पड़ें। "यह कैसा ठिठोलापन? कौन है इसकी जड़ मे? सबको कड़ी से कड़ी सजा दि जाये।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुख्याध्यापक जी ने सबको बहुत डांट लगायी। शिक्षकों ने पिटाई क्री। -डराया, धमकाया, पुचकारा, ललचाया। एक नही अनेक बार पूछा कौन है इसके मूल में? तुम्हें उकसाने वाला कौन है? किसने बताया ऐसे नारे देने के लिये? परंतु सब मौन रहे, किसी ने भी केशव का नाम नही बताया। वंदे मातरम् और भारतमाता की जय के नारे लगाते हुएँ छात्र अपने-अपने घर चले गये।

माता पृथिवी महीयम्

कुछ दिन तक संघर्ष जारी रहा। विद्यालय पुनः प्रारम्भ हो गया। शिक्षकों को विश्वास हो गया कि केशव ही होगा इसकी जड़ मे। केशव को माफी मांगने के लिए कहा गया। "माफी" कदापि नही। जो शासन अपनी माँ को प्रणाम नही करने देता वह अन्यायी है। उसे उखाड़ फेकना चाहिए। केशव की दृढ़ धारणा थी यह। कितना साहस, कितना धैर्य।

जो-जो अधर्म है, जो-जो अन्याय्य है, उसे मिटाना, जड़सहित उखाड़ना यही तो केशव का कार्य है।

माँ बेटे का रिश्ता विश्व का सबसे महन्मधुर मंगल रिश्ता। यह रिश्ता जब-जब हम भूल गयें, उसे केवल भूमि का टुकड़ा मानने लगे तब-तब हमारी दुर्गति हुयी। हम गुलाम बन गयें। कभी मुस्लिमों के, पोर्तुगीजों के कभी अंग्रेजों के। फिर कभी कोई महापुरुष उठता बताता "माता इयं पुत्रोऽहं पृथिव्याः" फिर हमारी तलवार कोश से निकलती थी। घोडों के टापों की आवाज गूंजती थी, तोपों के धमाके होते थें, माँ के लिए जी-जाने लुटायी जाती थी। उसी समय कोई अंभी, सूर्याजी पिसाल, नातू स्वार्थांध लालच के कारण माँ का रिश्ता भूल जाता था, माँ फिर गुलामी की खाई में ढकेल दी जाती। आज भी ऐसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिस्थिति है। देश की अवनति का कारण एकमेव यही है। माँ को, उसके स्नेह, ममता को भूलना। समाजपुरुष की नाड़ी केशव ने अच्छे से पहचान ली बाल्यावस्था में। एक बार नाड़ी परीक्षा हो गयी, कि रोग निवारण की दवाई भी अचूक प्राप्त होती है।

विजयादशमी के पावन पर्व पर

सन १९०७ के अक्तूबर मास में विजया दशमी के पर्व पर केशव ने एक छोटासा भाषण दिया, अपने मित्रों के सामने। वह थोड़े ही दिन पूर्व लोकमान्य तिलकजी का भाषण सुनकर आया था। उनके दर्शन-भाषण से हृदय में एक अनोखी देशभक्ति की लौ अलोकमान हो रही थी। वह चाहता था और भी ऐसे अनेक दीप इस ज्योति से आलोकित हो। परम्परानुसार विजया दशमी के दिन गोधुली बेला में रावण दहन हुआ। केशव ने जोर से जयघोष किया 'वंदे मातरम्'। सबने एक साथ दोहराया 'वंदे मातरम्'।

केशव ने अपने मित्रों कों संबोधित करते हुए कहा 'भाईयों, आज हम आलसी डरपोक और स्वार्थी बन गये हैं। उस सीमा को लांघना ही सीमोल्लंघन है। अंतःकरण मे वीरवृत्ति जगाना ही वास्तविक शमीपूजन है। रावण जलाने का अर्थ है, अन्याय, तानाशाही, जुल्मजबरदस्ती तथा परवशता के बंधनों का नाश करना। आईए-आज के पवित्र दिन हम विचारों का सोना वितरित करें। यही धर्मकार्य है। बोलिए 'वंदे मातरम्।' और माता की जयकार से आकाश गूँज उठा।

केशव के इस भाषण का वृत्त नागपुर तक पहुँचा। नागपुर, विदर्भ मध्य प्रांत की राजधानी थी। मुकदमा चलाया गया। 'आर्मस्ट्रांग' सरकारी अफसर थे। और भंडारा के श्री. पुरुषोत्तम सीताराम देव अभियुक्त के वकील थे। वे कलेक्टर रुस्तमजी से मिले। "वंदे मातरम् कहना यह गुनाह नही हो सकता है"। निर्भिकता से देवजी ने बताया। देवजी का कहना वे मान गए और आर्मस्ट्रांग के " आर्म " निर्बल होकर लटकने लगे।

यही केशव विश्वविख्यात हिंदु संगठन - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माता - पूजनीय डॉ. केशव बळिराम हेडगेवार के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैदराबाद रियासत में वंदेमातरम्

हैदराबाद रियासत मे भी वंदे मातरम् की आग धधक रही थी। हैदराबाद रियासत में तेलंगना, मराठवाडा और कर्नाटक प्रदेश आते थे। सातवाँ निजाम उस्मान अली यह अत्यन्त सत्ताकांक्षी था। साथ-साथ मुस्लिम धर्म के प्रचार और प्रसार का भूत उसपर सवार था। "उस्मानिया विद्यापीठ" का जन्म यही उद्देश्य लेकर हुआ था। विद्यापीठ की शिक्षा का माध्यम उर्दू था, और अरबी, फारसी, उर्दू भाषाओं के स्वतंत्र विभाग और विभाग प्रमुख भी थे। अन्य भाषाएँ उपेक्षित थी। दीनियात यह आवश्यक विषय था। नीति शास्त्र की तासिका में नैतिक आदर्श मुस्लिमों के ही बताए जाते थें। कथा भी उनके ही इतिहास से बतायी जातीं। जिनको नीली या काली, मुस्लिम पध्दति की शेरवानी का गणवेश मान्य नही है तो पढ़ाई छोड़ दो यह एकही रास्ता था। 'दीनियात' विभाग के प्रमुख थे मौलवी मजरुल हरन। पैगम्वर के जन्मदिन पर उन्होने वताया - देश में जवतक २२ करोड़ लोग गोबर परस्त हैं तब तक मुस्लिम युवकों को चैन की नींद नही आयेगी। आज का मुस्लिम युवक उदासीन और आत्मसंतुष्ट है ऐसा ताना भी मारा। हिंदु युवक विद्यापीठ में जाते तो अवश्य थें। परंतु मन में असन्तोष की भावना लावा की तरह उफन रही थी। निमित्त हुआ मात्र प्रार्थना का। मीर उस्मान अली कवि थे। उन्होंने "आसफजाही" - घराना और राज्य परिवार की रक्षा के लिए प्रार्थना करने वाला गीत बनाया था। ब्रिटिशों के God Save the King जैसी ही उनकी रचना थी। यह गीत सभी शैक्षिक संस्थाओ में प्रार्थना के रूप मे हो ऐसा आग्रह रखा गया। फिर क्या? राज्य परिवार का प्रशंसा गीत प्रार्थना के रुप में - मानों यह राजाज्ञा ही थी - वह तुरंत लागू हो गयी। अतः सभी को ही यह प्रार्थना [illegible] आवश्यक हो गया। यह गीत अर्थात् आसफजाही परिवार से एकनिष्ठ रहने की शपथ ही थी। हिन्दु युवकों ने उसे स्वीकारा नहीं। हिंदु युवक प्रार्थना के समय 'वंदे मातरम्' गाते थें। एक दिन उन्होंने आसफजाही गीत गाने को नकार दिया और वंदे मातरम् गाया। यही घटना वसतिगृह और संस्थान के अन्य शिक्षण संस्थाओं में भी हुई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यार्थियों का साहस

अधिकारियों ने यह घटना राजद्रोही मानी। निश्चित ही इसके पीछे कोई नेतृत्व होगा ऐसा उनका विश्वास था। परंतु विद्यार्थियों ने वंदे मातरम् गाना अपना जन्मसिध्द अधिकार समझा। मराठवाडा में एकही इंटरमिजिएट कॉलेज था, औरंगाबाद (संभाजीनगर) में। श्री. गोविन्दभाई श्राफ, प्राध्यापक विद्यार्थियों के लाड़ले थे। उन्होंने त्यागपत्र दिया और वे इस आंदोलन के सूत्राधार बने। विद्यापीठ के निकट ही 'अ' विद्यार्थी गृह है। इस वर्ष महाविद्यालय के प्रारम्भ होने कें पश्चात् और भी विद्यार्थी गृह शुरु हुएँ। पुराने वसतिगृह में ४ वर्ष से विद्यार्थी वंदे मातरम् गाते आ रहे थें, अभी भी २ महिने से यह क्रम सुचारु रूप से चल रहा था। हैदराबाद में कांग्रेस का सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और अधीक्षक ने निवेदन दिया कि मुसलमान विद्यार्थी वंदे मातरम् पर प्रतिबंध लगाए जाने की माँग कर रहे हैं। मुस्लिम युवक तो रोज नमाज पढ़ते थे परंतु वंदे मातरम् राजकीय है, मुस्लिम विरोधी है, ऐसा उनका दावा था। प्रत्येक विद्यार्थी की परिचय पुस्तिका पर वंदे मातरम् न गाया जाए ऐसा आदेश दिया गया। विद्यार्थियों ने इस आदेश पर विचार होने तक गाने की अनुमति मांगी। वसतिगृह के प्रार्थना कक्ष में नित्य जैसी प्रार्थना हुई। इससे नाराज होकर उसमें सहभागी विद्यार्थियों के नामों की सूचि तैयार की गई और अपने स्थान से बाहर निकलने से भी उन्हें मना किया गया। परंतु रात साढ़े तीन बजे कडाके की ठंड में छात्रावास अधीक्षक ने उन्हें बाहर निकाल दिया, तब जैन मंदिर ने उन्हें आश्रय दिया। छात्रों को दिसम्बर अंत तक लिखित क्षमा मांगने के लिये कहा गया।

हिन्दुओं की स्वाधीनता की मनोकामना मुस्लिम बरदाश्त नहीं कर पाये। हिन्दु युवकों ने अन्न सत्याग्रह प्रारम्भ किया। प्राचार्य, प्राध्यापक एवं कुछ बुजुर्गों के कहने पर अन्न सत्याग्रह बंद हुआ। औरंगाबाद के कलेक्टर को सत्याग्रह एवं विद्यार्थियों के दमन कार्य में प्राचार्य की सहायता करने का आदेश दिया गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राध्यापकों की भूमिका

इस आंदोलन में कुछ प्राध्यापकों ने अच्छी भूमिका निभायी। अंग्रेजी के प्रा. वीरभट्ट व पदार्थ विज्ञान के प्राध्यापक डा. रावड़ा के विद्यार्थी तथा व्हाइस चान्सलर से मधुर सम्बध थे। उनकी सहायता से छात्रों को समझाने का प्रयास किया गया। हम छात्रों को वंदे मातरम् गाने से परावृत्त नही करेंगे। हम भी मुहँ नही मोड़ेंगे। यह गीत हमारा भी श्रध्दा का विषय है। उस्मानिया विद्यापीठ के रसायन शास्त्र के प्रा. सय्यद हुसैन थे। आंदोलन काल में छात्रों की दृढ़ निष्ठा देखकर वे क्रोधित हुएँ। उन्होंने छात्रों को गाली गलोज किया और जाने लगे तो छात्र उनकी मोटर के सामने लेट गयें। 'गाडी ले चलों' उन्होंने चालक को फर्माया, पर चालक मुस्लिम होते हुए भी उसने उनकी इस हरकत को तुरंत नकारा।

न्याय्य हक्क के लिए लड़ाई चल रही थी। १९ नवंबर को फिर से अन्न सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। उसी समय रमज़ान की छुट्टियाँ प्रारम्भ हुयी। २२ नवम्बर को महाविद्यालय प्रारम्भ हुए। दामिनी जैसी कडकती थिरकती सूचना आयी "वंदे मातरम् पर प्रतिबंध।" सभी विद्यार्थियों ने कमर कस ली। हिन्दू विद्यार्थियों का प्रार्थनागृह में प्रवेश बन्द हो गया। उन्होंने बरामदे में ही वंदे मातरम् गाया।

महाविद्यालय रिक्त हुएँ

२९ नवम्वर को सूचना प्राप्त हुयी - 'हड़ताल बंद होनी चाहिए। वंदे मातरम् गाया नही जायेगा। सभी छात्र कक्षा मे उपस्थित हो, आदेश भंग होने पर छात्रों को निष्कासित किया जायेगा।' इन्हीं दिनों महबूब कालेज में गांधीजी की प्रतिमा हटा दी गई। हड़ताल की गति और भी तेज हो गई। उस्मानिया विद्यापीठ के छात्रों ने अनिश्चितकालीन हड़ताल प्रारम्भ करते ही महाविद्यालय रिक्त हो गयें।

वंदे मातरम् पर प्रतिबंध और अनुशासन भंग के लिए माफी यह सरकार की नीति थी। विद्यार्थियों का यह स्पष्ट मत था कि हम क्षमा नही मांगेंगे। तथा वंदे मातरम् गीत कहने की अनुमति मिलते तक विद्यालय भी नही जाएगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधीक्षक ने जात्यंन्ध बनकर जो अन्याय किया है उसके लिए वे ही हमारी क्षमा मांगे। शालेय सत्र प्रारम्भ हुआ परंतु वंदे मातरम् हड़ताल वैसी ही थी। नागपूर के मॉरिस कालेज के प्राचार्य सेनगुप्ता, औरंगाबाद के कलेक्टर राव, इनकी शिष्टाई असफल हुई।

वंदे मातरम् औ. विद्यार्थी

वंदे मातरम् पर सरकार और विद्यार्थी दोनों भी अडिग थें। विद्यार्थियों ने अपना भविष्य ही दांव पर लगा दिया था। लगभग १२०० विद्यार्थियों को निष्कासित किया गया। ये विद्यार्थी "वंदे मातरम्" की उपाधि से सम्मानित हुएँ। अन्नामलाई या बनारस विद्यापीठ ने इन्हें नकारा परंतु नागपुर विद्यापीठ ने उन्हें समा लिया।

उन्होने Nagpur University Association for the aid of Hyderabad Students इस नाम की सहायता समिति गठित की। विद्यार्थियों का प्राध्यापक जकातदार ने स्वागत किया। आज के प्रधानमंत्री श्री. नरसिंहराव उन छात्रों मे से एक है। हाईस्कूल के विद्यार्थी, खामगाव, नगर, येवला इत्यादि नगरों मे गयें। उनकी भाषा माध्यम, आर्थिक कठिनाईयाँ अनगिनत थी, पर वंदे मातरम् का नशा कुछ और ही था।

नागपूर विद्यापीठ का यह कार्य अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने छात्रों को प्रवेश दिया इतना ही नहीं, तो कुछ परीक्षाएँ, वर्ष में दुबारा लेने का निर्णय लिया। विद्यार्थियों की, प्रवेश की कुछ तांत्रिक कठिनाईयाँ, अध्यादेशों में दुरुस्तियाँ कर हटा दी गयी। फरवरी से जून १९३९ के बीच अंतिम वर्ष के छात्रों के लिये, वे अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें इस लिये विशेष मार्गदर्शन केंद्र चलायें गए। उनकी पढाई का माध्यम अंग्रेजी रखा गया। उन्हें युनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लॉ, कॉलेज ऑफ सायन्स, राबर्टसन कॉलेज, सिटी कॉलेज गव्हर्मेंट इंजिनिअरिंग स्कूल आदि महाविद्यालयों में प्रवेश दिया गया।*

* परिशिष्ट देखियें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यार्थियों ने कुछ विद्यार्थियों की कृतिसमिति स्थापन की। इस समिति ने रियासत मे तथा रियासत के बाहर भी जनमानस तैयार किया। पूना, सांगली इत्यादि अनेक स्थानों पर सभाएँ हुई।उन्होने छात्रों को मानसिक धैर्य दिया।गुलबर्गा के कैदियों को जब इस आंदोलन का पता चला तो उन्होंने अन्न सत्याग्रह कर छात्रों के पीछे अपना आत्मबल खड़ा किया।

इस आंदोलन ने संपूर्ण हिंदुस्थान में खलबली मचा दी।

पं. नेहरुजी की भूमिका -

वैसे भी वंदे मातरम् पर इस्लाम विरोध की मुहर लगकर उसका नामोनिशान मिटाने के प्रयास जारी थें। ऐसे ही समय में ११ मार्च १९३९ को त्रिपुरा कांग्रेस में "वंदे मातरम् विद्यार्थियों" का अलग से संमेलन हुआ। अध्यक्ष थे उत्तर प्रदेश के हारुन अन्सारी। नरेंद्र दत्त और अन्य विद्यार्थियों के भाषण हुए। पं. नेहरुजी का भी भापण हुआ। उन्होंने इस आंदोलन का पुरस्कार किया। हैदराबाद के शासकों ने - धर्मनिरपेक्ष और राष्ट्रवादी नेता ने ये कैसी भूमिका अपनायी - इसलिये तीखी आलोचना की। नेहरुजी ने निःसंदिग्ध शब्दों में वताया वंदे मातरम् को मेरा पूर्ण समर्थन है।

"वंदे मातरम् विद्यार्थी" और गांधीजी

इस आंदोलन के सिलसिले में विद्यार्थियों का एक शिष्टमंडल गांधीजी को मिलने गया। उन्होंने उनका अभिनंदन करते हुए वंदे मातरम् गीत गाने की अनुमति मिलते तक आंदोलन जारी रखने को कहा। महात्माजी का आशिर्वाद प्राप्त हुआ इसलिये विद्यार्थी खुश हुएँ। कुछ ही दिन पश्चात् गांधीजी का एक वक्तव्य 'हरिजन' में प्रकाशित हुआ -

I would not risk a single quarrel over singing Bande Mataram at a mixed gathering.

हैदर और गांधीजी का पत्र व्यवहार

इसी सिलसिले में गांधीजी और हैदराबाद रियासत के प्रधानमंत्री हैदर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का परस्पर लंबा पत्र व्यवहार हुआ। हैदरने - "राजनैतिक नेता, छात्रों को उकसा रहे हैं। आप भी उसमें से एक हैं" ऐसा गांधीजी पर आरोप लगाया। आपके विद्यार्थी न तो मेरे नेतृत्व में हैं न मैं उनका मार्गदर्शक। परंतु वंदे मातरम् के बारे में राय पूछोगे तो वंदे मातरम् गाने का छात्रों को पूरा अधिकार है।' गांधीजी ने उत्तर दिया।

हैदराबाद का यह आंदोलन सर्वार्थ से अभूतपूर्व रहा। रियासत में प्रचंड जागृति हुई। यही तेजस्वी छात्र आगे चलकर गणमान्य महानुभाव बनें। इसी आंदोलन के द्वारा राजकीय संगठन की नींव डाली गयी।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गूंज ऊठा चप्पा चप्पा

लेखनी या तलवार

वंदे मातरम्! एक श्रेष्ठ साहित्यिक की तपस्या! कोटि कोटि संतानों की उच्चतम आकांक्षा!

एक समय की बात है - जी.जे. लॉरेन्स की लाहोर में सभा थी। उन्होंने हिंदी में भाषण दिया और उपस्थित जनता को एक प्रश्न पूछा, 'तुम कलम से शासित होना चाहते हो या तलवार से?' सभा मौन रही। दोनों भी विकल्प उन्हें पसंद नही थें। परकीयों का शासन उन्हें मान्य नही था। आगे चल कर बंकिमचंद्रजी ने इस प्रश्न का यथार्थ उत्तर दिया - 'मैं कलम सें यो लडूंगा कि मेरे पाठकों के मन में होगी हुंकार, होठों पर ललकार और आवश्यक हो तो हाथों में तलवार!' बंकिमबाबू का आत्मविश्वास प्रचंड था। लेखनी पर पूरा पूरा भरोसा था। उनकी लेखनी तथा वाणी द्वारा चित्रित यह चित्र १९०५ के पश्चात् भारत में सजीव हुआ। उसकी झलक हमें श्री. मोतीलालजी ने अपने पुत्र जवाहर को लिखे हुए पत्र में मिलती है। "हम देश के इतिहास के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण काल से गुजर रहे हैं। इलाहाबाद में भी वंदेमातरम् आम अभिवादन बन गया है। यदि अभियान चलता रहा तो यहाँ लौटने पर भारत को, जब तुम भारत से गये, उससे बहुत बदला हुआ पाओगे।"

सत्ता मद भी हारा था

शामारपुकूर में कुछ युवक एक दूसरों से मिले। बहुत दिनों पश्चात भेट होने के कारण बडा आनंद आया। 'वंदे-मातरम्' बोल कर उन्होने वह व्यक्त किया और हृदय में असीम शांति ले कर एक दूसरेसे विदाई ली। पुलिस को खबर मिली। मैदान में युवक 'वंदे-मातरम्' गा रहे थे। इन्स्पेक्टर साहब अपने दल के साथ दौड पडे परंतु चिड़ियाँ खेत चुग गई थी। क्रोधित होकर वे अड़ोस पड़ोस के घरों में घुस गये - मारपीट की। मस्तिष्क में सत्ता का मद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था, मन में पराभव की निराशा और हाथ में शस्त्र था। बाल, वृध्द तथा, महिला कोई, भी पुलिस के तडाखे से बचा नही। परंतु किसीने भी 'वंदे मातरम्' गाने वाले युवकों के नाम बताएँ नही।

बरिसाल अधिवेशन के पश्चात् बिपिनचंद्रजी ने पूर्व बंगाल का प्रवास किया। सिल्हट में विशाल सभा हुई। पालजी ने कहा - "हम भारतीय अब कारागृह के भय का त्याग करें। 'वंदे मातरम्' कह कर कारागृह में जाने के लिये सज्ज हो जावे।" लोगों को यह विचार बहुत ही भाया। वंदे-मातरम् गीत गा कर उन्होंने उस पर अपनी मुहर अंकित की।

इस वीरगीन ने भारतीयों को प्रखर राष्ट्रीय भाव से ओतप्रोत कर दिया। हजारों भाषण तथा समाचार-पत्र के लेखों से भी इसका प्रभाव काफी बढाया। इस गीत ने माँ की मुक्ति का, राष्ट्र की उन्नति का, शत्रुओं को खदेडने का साहस दिया। उनके हौसले बुलंद हुएँ।

'युगांतर' के कार्यालय की तलाशी लेने पुलिस आई। चंद क्षणों में दंडधारी युवकों की टोलियाँ वहाँ पहुँची। उनका अविर्भाव देख कर पुलिस को हाथ मलने पड़े। दूसरे दिन दि. ७-१०-१९०७ को वंगभंग-विरोध-दिन का द्वितीय वार्षिकोत्सव था। उसी उपलक्ष में विशाल जुलुस निकालने की योजना थी। जुलुस रोकने के लिये पुलिस आयी तो लोगों के संरक्षण के लिये युवक भी कटिबध्द थें। राष्ट्रध्वज की रक्षा के लिये २० घुडस्वार सिध्द थे। उन्हें प्राणों की परवाह नहीं थी। अपने हौतात्म्य को उन्होंने धर्म की चरम सीमापर लाया था। वह धर्म प्रखर और चैतन्ययुक्त था। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्रधर्म से व्याप्त था।

पंचनद भी जाग ऊठा

इसी धर्म का अंकुर बिपिनचंद्रजी ने दक्षिण भारत में और सुरेन्द्रनाथजी ने पंजाब में अंकुरित किया। रावलपिंडी में कुछ लोगों को स्वदेशी आंदोलन में सहभागिता के लिये पकड़ा गया। विद्युत्गति से यह समाचार लाहोर में पहुँचा। 'भारतमाता' कार्यालय के समीप विरोध सभा हुई। जुलुस निकला - [illegible] इस [illegible] अनारकली के पास

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसे रोकना पुलिस ने उचित समझा। पुलिसी अत्याचारों के बावजूद भी लोग तितर बितर नही हुएँ। 'वंदे मातरम्' जयघोष करते हुए वे डटकर वहीं खडे रहें। घुडस्वार और पुलिस के पैरों तले अनेक लोग कुचले गये। लोगों को लातों से और संगिनों के दस्तों से बेरहमी से पीटा गया। ऐसी एक दो नहीं सैकडों घटनाएँ शहरों - देहातों में नित्य घटती थी। पंचनद की लहरें भी गाने लगी 'वंदे-मातरम्, वंदे-मातरम्'।।

इस पर अभिमत प्रकट करते हुए 'ट्रिब्यून' लिखता है - "माता की वंदना - इसमें कुछ भी भयंकर नही है। फिर दमनशाही द्वारा 'वंदे मातरम्' को मनाही क्यों? अब तो पंजाब में भी सुशिक्षित लोग एक दूसरे से मिलने पर 'वंदे-मातरम्' बोल कर अभिवादन करते हैं। सारे हिंदुस्थान में असंख्य मुखों से निरंतर निकलते 'वंदे-मातरम्' को बंद करने के लिये सरकार कों कितने सिपाहियों, अधिकारियों की आवश्यकता होगी?

'वंदे मातरम्' की लपटें जम्मू-कश्मीर में भी पहुँच गयी। जम्मू कश्मीर में राणा प्रतापसिंह नाममात्र राजा थे। हुकमत चलती थी अंग्रेजों की। उन्होंने जम्मू कश्मीर को इस आंदोलन से दूर रखने के भरपूर प्रयास कियें। छापखानों पर पाबंदियाँ लगाई। बाहर से कोई भी - खासकर बंगाली यहाँ आ नही सकता था। परंतु नवयुवकों के अंतर में धधकी क्रांति-ज्वाला नें उन्हें आंदोलन में कूद पडने के लिये बाध्य किया। १९०७ में जम्मू के सरकारी विद्यालय (वर्तमान में रणवीर हायस्कूल) के छात्र सहयोग-राशि एकत्रित कर लाहोर से प्रकाशित 'पंजाबी' मंगवाते थें। कुछ निर्भीक छात्रों ने 'वंदे-मातरम्' के नारे लगाते हुए सडकों से जुलूस निकालें और विद्यालय के दीवारों पर सुवाच्य अक्षरों में 'भारत माँ की जय', 'वंदे-मातरम्' और अंग्रेजों के विरुध्द नारे लिखें। रेसिडेन्सी को पता लगने के बाद चार होनहार छात्र तथा दो अध्यापकों को नौकरी से निकाल दिया गया। राजा अमरसिंह कहते हैं, "ऐसी भडकाऊ घटनाएँ जो छात्रों के कोमल मन पर गहरा प्रभाव डालती हैं - उन्हें प्रारंभ में ही स्पष्ट कर देना चाहिये।"

महाराष्ट्र में 'वंदे मातरम्'

महाराष्ट्र में लोकमान्यजी ने 'आनंदमठ' तथा इस गीत के भावबीज को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जन-जन तक पहुँचाया। पुणे से 'वंदे मातरम्' प्रकाशित होने लगा। १९०८ में शासन ने लोकमान्य जी को चतुर्भुज किया। समूचे देश में विरोध सभाएँ हुईं। २९ जुलै को बंबई पुलिस व जनता की पहली मुठभेड हुई। बात पुलिस कोर्ट में पहुँची। हजारों लोग एकत्रित हुएँ। उन्होंने 'वंदे मातरम्' गाया। उनकी 'तिलक महाराज की जय' की घोषणा से समुद्र की गर्जनाएँ भी लज्जित हुईं। पुलिस ने उन्हें शांत किया।

तिलक जी को छः साल की सजा हुई। १४ सितम्बर को वे जहाज से मंडाला रवाना हुए। भाद्रपद माह था। स्थान स्थान पर गणेशोत्सव मनाया जा रहा था। भगवान गणेशजी के साथ लोकमान्य जी की बडी प्रतिमाएँ भी स्थापित की गयईं। अथर्वशीर्ष के साथ साथ 'वंदे मातरम्' 'भारतमाता' की जयकार से आकाश गूंजायमान हो उठा। 'शिवाजी महाराज की जय', 'लोकमान्य तिलकजी की जय' - ये दो नयी घोषणाएँ उसी समय प्रचलित हुईं। पुलिस में मानों 'जमदग्नि' का संचार हुआ था। उन्होंने उत्सवों में अनेक अडंगे डालने शुरू कियें। बेळगांव में गणेशोत्सव के संयोजक कानून की सीमा संभाल कर ही कार्यक्रम ले रहे थे। अचानक पुलिस ने 'वंदे मातरम्' तथा 'तिलकजी की जय' पर प्रतिबंध आदेश जारी किया। संयोजकों ने उस पर ध्यान नहीं दिया। पुलिस ने घोषणा देनेवालों को नियमभंग के आरोप में पीटना शुरू किया। सतरा लोगों को बंदी बना कर रखा गया। 'गणेश भगवान' तथा तिलकजी की प्रतिमाएँ रखी हुई गाडीयों पर भी रोक लगायी गई। इस परिस्थिति का निरीक्षण करते हुए तिलकजी ने लिखा, "मैं बंदी बनाया गया तब देश वंदे मातरम् के क्रंदन में जी रहा था। अपमान के आवर्तों से ऊपर ऊठ कर लाखों लोग राष्ट्रीय आशावाद पर विश्वास करने लगे थे।"

छः साल की सजा भुगत कर वे वापस आएँ। नरम दल की राजनीति के कारण लोग पुनः निस्तेज हो गये थे। प्रबल ब्रिटिश राजसत्ता से संघर्ष करने हेतु उन्हे तैयार करने के लिये तिलकजी ने इसी सिध्द मंत्र का पुनः प्रयोग किया। रिहाई के पश्चात् हुई स्वागत सभा में 'वंदे मातरम्' की घोषणाएँओं ने ही उनपर स्वस्तिसिंचन किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दक्षिण में वंदे मातरम् की गूंज

लोकमान्यजी के उग्र विचारों का प्रभाव हैदराबाद में भी था। 'चद्दरघाट' वहाँका प्रमुख केंद्र था। अघोरनाथ सभाओं का आयोजन करते थे। बंगाली युवक क्रांति के पाठ देते थे। तिलकजी, बिपीनचंद्र के छायाचित्र के साथ लेख छपवा कर वितरित किये जाते थे।

कर्नाटक की आर्य बालसभा

कर्नाटक में बच्चों की 'आर्य बालसभा' प्रारंभ हुई। 'केसरी' के लेखों का कन्नड अनुवाद वे छापते थे। शालेय छात्र अतीव श्रध्दा से अपने पुस्तकों पर, कॉपियों पर 'वंदेमातरम्' लिखते थें। पत्र के शीर्ष भाग में 'वंदे मातरम्' लिखा जाता था। १९०८ के 'कर्नाटक वैभव' में एक छात्र द्वारा अपने पिताजी को लिखा हुआ पत्र प्रसिध्द हुआ - "पिताजी, हिंदुस्थान का परकीय सत्ता के अधीन रहना मुझे असह्य हो रहा है।" यहीं बालक आगे चलकर कर्मयोगी 'हनुमंतराय' नाम से प्रख्यात हुआ।

'वंदे मातरम्' से प्रेरणा पा कर ही कविराज सुब्रमण्यम् भारती ने तमिल में कविताएँ लिखी। 'जय बांगला', 'वंदे मातरम्', 'नमो भारतम्' आदि।

मद्रास में 'वंदे मातरम्' का कमाल दिखाने वाले जादूगर थे बिपिनचंद्र पाल। उनके मद्रास के साथ भावनिक संबंध थें। सुब्रह्नण्यजी ने 'वंदे मातरम्' गीत को लोकप्रियता दी। १९०६ में विपिनचंद्रजी 'वंदे मातरम्' का संदेश लेकर मद्रास पहुँचे। मद्रास के मरिना ब्रीच पर 'वंदे मातरम्' की गगनभेदी गर्जनाओं से सागर भी कंपायमान हुआ। "यह कौन मेरा प्रतिस्पर्धी है? आजतक तो यहाँ मेरी लहरों की ही आवाज आती थी। उसने भी तीव्र गति और ऊंची आवाज!" सागर ने सोचा होगा -

श्री. नातसेन ने भारतीजी की कविता के त्रिदल की १५००० प्रतियाँ वितरित की। मद्रास से अब तक 'ब्रह्मवादी' नामक अंग्रेजी पत्रिका का तथा 'इंडिया' नामक साप्ताहिक तमिल पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी

हजारों लोगों का जनसमूह, भारी पुलिस व्यवस्था, घुडसँवार ,सैनिकों की टुकडियाँ तैनात - ऐसे वातावरण में विपिनचंद्र पाल का भाषण हुआ। स्वदेशी कार्यकर्ता सुरेंद्रनाथ आर्य की सभाएँ मद्रास के व्यापारी सभागों में हुई। उनके कारण वंदे मातरम् का संदेश फैलता गया। एक विचित्र मादकता पूर्ण प्रभाव सारे मद्रास पर छा गया। स्वदेशी - भारत में निर्मित वस्तुओं के प्रचार और विक्री के लिये एक ठोस प्रतीकात्मक कदम के रूप में 'भारत भंडार' नामक दुकान खोली गई।

V. O. Chidambaram Pillai

यातायात के लिये स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी प्रारंभ की। इस कंपनी ने अंग्रेजी कंपनीयों को चौपट कर दिया। उस से चिढ़कर अंग्रेज हर बात में कानूनी अडंगेबाजी करने लगे। फिर भी उन से लोहा लेते हुए स्वदेशी कंपनी ने अपना अस्तित्व बनाया रखा।

अंग्रेजों को शह देते हुए नयी चाल

चिदम्बरम् पिल्लै और सुब्रह्मण्यम् शिवा ने एक नयी युक्ति अपनाई और एक नया मोर्चा खोला। तूतीकोरन में एक अंग्रेजी मिल थी . . . कोरल मिल्स : . . उसके मजदुरों की सभाएँ उन दोनोंने आयोजित की। स्टीम नेविगेशन कंपनी के मजदूरों की परिस्थिति उनके सम्मुख रखी। वे मजदूर भड़क उठें, परिणाम स्वरूप स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी की सहानुभूति में उन्होंने एक आंदोलन प्रारंभ किया। उसमें उनकी स्वयं की कुछ माँगें और उन पर होने वाले अन्यायों के विरोध में उन्होंने आवाज उठायी। १९०८ की फरवरी में तिन्नेवेल्ली और तूतिकोरम् में वातावरण तनावपूर्ण था। पूरे देश का ध्यान देशभक्तों की भावनाओं के बल पर एकत्रित हुआ था। २७ फरवरी को मजदूरों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने हडताल किया। मिल का कार्य बंद रहा। 'वंदे मातरम्' के नारे लगाते हुए देर रात तक उन्होंने जुलुस निकालें।

ब्रिटिश नागरिकों से वंदे मातरम् कहलवाया

तिन्नेवेल्ली के सडकों में मजदूर बहुत ही उग्र हुए थें। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों को घेर लिया और वंदे मातरम् की त्रिलोकभेदी गर्जनाएँ प्रारम्भ की। स्वयं 'वंदे मातरम्' का घोष कर मजदूरों को समाधान नही मिला। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों को भी नारे लगाने के लिये - अपने स्वर में स्वर मिलाने के लिये बाध्य किया। उनको भी यह भूमि उनकी माँ है यह संस्कार देने का यह एक प्रयास था। शायद ब्रिटिश उसे ग्रहण करते तो जैसे अन्यों कों पचा लिया वैसे यह संस्कृति उन्हें भी आत्मसात् कर लेती। अंततः कारखाने के मालिकों को मजदूरों की मांगे मंजूर करनी पड़ीं।

सरकार ने दमन-नीति का अवलंब कर १२ मार्च को चिदम्बरजी तथा उनके साथियों को पकड़ा। वे नेताओं को पकड़ सकें परंतु आंदोलन को जकड़ना उनके बस कि बात नहीं थी। जनता आंदोलन कों खींचती रही।

बिपिनचंद्रजी को वंदे मातरम् अभियोग में छः महिने सश्रम कारावास की सजा हुई। ९ मार्च १९०८ को वे मुक्त होने वाले थे। सारे देश में उनकी रिहाई की खुशियाँ मनाई गई। तूतीकोरन् में उनके नाम से निःशुल्क विद्यालय और चिकित्सालय खोले गएँ। माँ की मुक्तता की प्रेरणा देने वाले बिपिनचंद्र के प्रति भक्ति और श्रध्दा उन्होंने ऐसी प्रकट की।

ब्रिटिश मॅजिस्ट्रेट फॉक्स ने १५ वर्षीय किशोर को वंदे मातरम् घोषणाओं के कारण बेंत से मारने की सजा दी। लोग आग बबूला हो उठें। ४००० की संख्या में १४/३/१९०८ को उन्होंने जुलूस निकाला। 'टाईम्स ऑफ इंडिया' मे वर्णन किया है - "दूकानें बंद थी, व्यापार ठप्प था, व्यापारी ही प्रमुखता से आगे रहें। तुतीकोरन् की पंचक्रोशी में अपनी दूकानें बंद रख कर लोग तिन्नेवेल्ली में रेल द्वारा पहूँचें। प्रबल आंदोलन हुआ जिससे व्यापार और यातायात शक्तिहीन बन गये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'एक और फूल चढा'

बरिसाल के सुशीलकुमार की वंदे मातरम् के साथ एकरूप होने के कारण - यहाँ भी पुनरावृत्ति हुई।

तामिलनाडू का दिरुपार कुमारन् हाथ में राष्ट्र्ध्वज पकडे हुए आगे बढ रहा था। पुलिस के निर्मम लाठीजार्ज से उसने वहीं दम तोड़ दिया। होठों पर वही मधुर जयघोष था . . . वंदे मातरम्।

वंदे मातरम् पिल्लै

चिदम्बरम् पिल्लै को लोग वंदे मातरम् से एकरूप होने के कारण "वंदे मातरम् पिल्लै" नाम से संबोधित करने लगें।

तिरुन्नेवेल्ली जिले के जिलाधीश विंच ने उन्हें बुरी तरह से अपमानित किया। अभद्र शब्दों का प्रयोग किया। तथा उन्हें गोली से उड़ाने की धमकी दी, पर उन्होंने जहाज कंपनी का काम जारी रखने, स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करने और वंदे मातरम् गाने का प्रण विंच के समक्ष दोहराया। विंच ने उन्हें कैद किया।

सुब्रह्मण्यम् भारती जी की दो कविताएँ 'श्वेत प्रभु विंच का कथन' और 'देशभक्त चिदम्बरम् पिल्लै का उत्तर' - इस पूरे परिवेश को समेटी हुई है। "देशभक्त पिल्लै का उत्तर" इस कविता ने राष्ट्र के जन्-जन् के स्वर को उद्घाटित किया है।"

"हमें क्या डर? यह हमारा देश है। इसमें ब्रिटिशों का क्या है? प्रभु हमारा साथ देंगे। अपनें जीवन की अंतिम सांस तक - हम 'वंदे मातरम्' गीत गायेंगे - माता को शीश झुकायेंगे 'वंदे मातरम्'।

अभिनव धोती

घर घर की दीवारें 'वंदे मातरम्' से सुशोभित होती थी। पताका, ध्वज, नामफलक पर यही मंत्र विराजमान था। इस मंत्र के बिना अधुरापन महसूस होता - राष्ट्रीयता का अभाव लगता था। इसी भावना से ओतप्रत शब्दों से साडी,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धोती की किनार बुनी जाती थी। १९१० में ऐसी धोतियों ने प्रचंड लोकप्रियता प्राप्त की। धोती पर लिखा रहता था - "माँ, मैं आपसे बिदाई ले रहा हूँ। होठों पर मधु मुस्कान रखते हुए मैं फाँसी के तख्तपर चढूंगा। मेरे बांधव इसके साक्षी रहेंगे। बम एक-दो लोगों की जान ले सकते हैं। ऐसे हजारों बम हमारे घरघर में है। है माँ! हम अपनी संतान बम जैसी ही है नं? माँ, गरीब बेचारे अंग्रेज क्या करेंगे?"

केअर हार्डी का स्वागत वंदे मातरम् से

घर घर जा कर धोतियाँ जप्त करने के आदेश पुलिसों को दिये गए। ब्रिटिश एम्.जी. केअर हार्डी १९०७ में भारत में प्रवास कर रहे थे। स्थान स्थान पर 'वंदे मातरम्' से उनका स्वागत हुआ। परिणामतः अपने भाषण के अंत में वे भी 'वंदे मातरम्' कहने लगे। बरिसाल की एक महिला ने उन्हें 'वंदे मातरम्' लिखा हुआ चांदी का तमगा तथा उनकी पत्नी को कुंकुम् रखने का चांदी का करंडक उपहार में दिया। केअर हार्डी जहाज से तुतिकोरन से कोलंबो गये - हॅट उठा कर 'वंदे मातरम्' कहते हुए उन्होंने सबसे बिदाई ली।

इससे दो बातें स्पष्ट होती हैं। प्रयाग, पंजाब, जम्मूकश्मीर मद्रास, सुदूर तक 'वंदे मातरम्' पहुँच गया था और बंगाल के प्रति संपूर्ण हिंदुस्थान की सहानुभूति स्वाभाविक ही थी। वंग उनकी माँ का एक अंश था। और यही सरकार के भय का एक कारण था। सरकार के विद्वेष का वर्णन करते हुए श्री. ए. सी. मुजुमदार लिखते हैं - "जिस प्रकार लाल कपडे देखकर सांड विक्षुब्ध हो उठता है उसी प्रकार 'वंदे मातरम्' की सहज अभिव्यक्ति कुछ सरकारी अधिकारियों को बेचैन करती रही।" कुछेकने इसका अर्थ लगाया - बंदर को घेर लो और उसे मारो। दूसरों को यह संदेह था कि यह बल-प्रयोग के लिये गुप्त संकेत मात्र है, पर सत्य यह है कि एक दशक से भी अधिक पहले, एक उपन्यासकार ने यह गीत लिखा और इन सीधेसाधे शब्दों का अर्थ इतनाही था - "हे मातृभूमि मैं तुम्हें नमन करता हूँ।"

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समुद्र पार वंदे मातरम्

वंदे मातरम्! वंदे मातरम् एक ऐसा अदभुत नाद तरंग है कि जो सुदूर लंडन, अमरिका, कॅनडा तक संसार के कोने-कोने में ध्वनित और प्रतिध्वनित होने लगा।

वंदे मातरम् इस पवित्र गीत के साथ जिनका जीवन जुड़ा है ऐसे व्यक्ति है पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा। गुजराथ इनकी जन्मस्थली थी। बहुप्रतिभाशाली व्यक्त्वि था इनका। आप सशस्त्र क्रांति के आदि प्रचारक माने जाते हैं। भारत के बाहर भारत के लिये जितना क्रांतिकार्य हुआ है वह सब श्यामजीकृष्ण की देन रही है। आप विदेशस्थ भारतीय क्रांतिकारियों के गुरु रहे। भारत से जितने भी लोग बम विद्या सीखने के लिये तथा क्रांतिकार्य में आप के पास आ गये, मदद मांगने गये, उनकी आपने सहायता की। लंडन में 'इंडिया हाऊस' की स्थापना कर आप भारतीय छात्रों को क्रांति के लिये मार्गदर्शन करते रहे।

श्री. अरविन्द ने वंदे मातरम् का अंग्रेजी अनुवाद किया। सुगंधी पुष्प जैसी इस गीत की महक दूर दूर फैल गई। वह क्रांति का मंत्र बन गया और लंडन में क्रांतिकारियों के होठों पर नाचने लगा।

सावरकर और हरदयाल इन दोनों क्रांतिकारियों नें लंडन के भारतीयों में क्रांति की चेतना निर्माण की। 'इंडिया हाऊस' क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रभावकेन्द्र बन गया। वंदे मातरम् के स्वर लंडन में गूंजने लगे और उसने ब्रिटिश शासन की नींद हराम की। स्व. वी. सावरकरजी ने वहाँ १९०६ में "फ्री इंडिया सोसायटी" की स्थापना की। भाई परमानंद, सेनापति बापट, विद्या हरदयाल आदि इसके सदस्य बनें। इसकी प्रतिज्ञा, कार्यपध्दति अनुशीलन समिति जैसी ही थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वातंत्र्य युध्द का सुवर्ण महोत्सव

१० मई १९०८ को १८५७ के स्वातंत्र्य युध्द को ५० साल पूर्ण हुएँ। इसके उपलक्ष्य में इस संस्था ने एक कार्यक्रम लिया। रणरागिणी राणी लक्ष्मीबाई, कुंवरसिंह इत्यादि आज़ादी के सैंकडों वीरों ने अपने जीवन की कुर्बानियाँ दीं। देश को स्वाधीन बनाने का यह पहला सशस्त्र भरसक प्रयत्न था।

स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी ने विचार किया - इन बलिदानीयों को श्रध्दांजलि अर्पित करना, उस निमित्त से भारतीयों की सुप्त चेतना जाग्रत करने के लिये यह सुअवसर है। १० मई - मंगल पांडे के बलिदान दिन स्मृति कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

निमंत्रण पत्र छापे गएँ। वे 'वंदे मातरम्' इस पवित्र मंत्र से सुशोभित थे। आज 'इंडिया हाऊस' अतीव प्रसन्न था। सुंदर पताकाएं लहर-लहर कर वीर गाथाएँ सुना रही थीं। फूल और धूप की सुगंध से वातावरण प्रफुल्लित एवं प्रमुदित हुआ था। १८५७ के शहीदों के छायाचित्रों से भवन सजीव हो उठा। शौर्य, वीरता की भावनाएँ उद्दीप्त हो रही थीं। 'इंडिया हाऊस' में प्रवेश करने के बाद भारत का ही आभास हो रहा था।

कार्यक्रम के प्रारंभ में देशभक्त वर्माजी ने मधुर मंजुल स्वर में 'वंदे मातरम्' गाया। 'वंदे मातरम्' की गूंज, उसका जयघोष इतना बुलंद था कि, भवन की दीवारों को लांघ कर रास्ते और गलियों को गुंजयामान कर गया। वैसे भी लोग आते समय घोषणा देते देते ही आये थे। पूरे लंडन में औत्सुक्य तथा अन्य की लहर निर्माण हुई थी।

ओ शहीदों!

कार्यक्रम के अंत में अनेक युवकों ने भारत माँ के स्वाधीनता बलिवेदी पर जीवन समर्पित करने की प्रतिज्ञा ली। सावरकरजी ने शहीदों को संबोधित कर 'ओ शहीदों' इस नाम से एक ज्वालाग्राही परिपत्रक प्रकाशित किया। इस प्रेरणादायी ऐतिहासिक आवाहन के कारण देशभक्त युवक तथा स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के हृदय में देशभक्ति की ज्वाला धधक उठी। सावरकरजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने मर्मस्पर्शी शब्दों में लिखा है - "हे हुतात्माओं, हमने 'विदेशियों को भगाओ" यह आपका कार्य जारी रखने का निर्णय लिया है। १८५७ का यह स्वाधीनता संग्राम हमारी गुलामी का अंत होते तक, हमें स्वाधीनता प्राप्त होते तक चलता रहेगा। इस क्रांतियुध्द में कोई समझौता नहीं होगा। स्वाधीनता-प्राप्ति या प्राणाहुति यही हमारा प्रण है - 'वंदे मातरम्!'

धिंग्रा की वीरवृत्ति

प्रथम स्वाधीनता संग्राम की स्मृति में '१८५७ के शहीदों की जय' के बिनके बनाये थे और वह लगा कर स्वयं को गौरवान्वित मान कर युवक बाजार में गयें, विद्यापीठ गयें। मदनलाल धिंग्रा को महाविद्यालय के प्राध्यापक तथा विद्यार्थियों ने बैज बिल्ला निकालने को कहा - धिंग्राजी टस् से मस् नहीं हुएँ। उन्होंने बताया - "यह हमारी आजादी के संघर्ष और शहीदों के प्रति सम्मान का प्रतीक है, मैं इसे नहीं हटाऊंगा।" मदनलाल के इस उत्तर से पूरी कक्षा में तीव्र नाराजगी की लहर दौड़ गई। कई अंग्रेज विद्यार्थी मदनलाल पर टूट पडे, उसके साथ हाथापई की। एक अंग्रेज विद्यार्थी ने मदनलाल के कोट से बॅज निकाल लेना चाहा, पर मदनलाल ने प्रतिकार किया और कहा "तेरा गला नहीं काटा, तो मैं मदनलाल नहीं।"

बात आई गई हो गई। धिंग्रा को हाथ लगाने की किसकी हिम्मत थी! इस बात ने आंदोलन का रूप ले लिया और भारतभवन के छात्रों ने विद्यापीठ का बहिष्कार कर दिया। विश्व के सभी समाचारपत्रों ने इस आंदोलन पर संपादकीय लेख लिखें। हरनामसिंह और खान इस आंदोलन में अग्रसर थे। नाभा के हरनामसिंह को प्रतिमाह २५० रु. छात्रवृत्ति मिलती थी। वह बंद की गई। क्योंकि उनके कोट पर भी 'वंदे मातरम्' ध्वजयुक्त स्वाधीनता संग्राम का स्मृतिचिन्ह था।

आव्हान

दिन रात के पन्न पलटते ही रहते है। इस घटना के २५ दिन पश्चात् ही मदनलाल धिंग्रा ने बाबाराव सावरकरजी को सजा फर्माने के प्रतिशोध के रूप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में कर्जन वायली को यमालय भेजा। पुलिस ने उन्हें पकडा। उनके जेब में जनता के लिये लिखा हुआ एक वक्तव्य था। यह 'आवाहन' अत्यंत हृदयग्राही था। पत्रक के अंत में वे लिखते हैं - "मातृभूमि की सेवा ही भगवान श्रीकृष्ण की सेवा है - मुझ जैसे धनहीन - बुध्दिहीन व्यक्ति के पास अपने रक्त के अतिरिक्त मातृभूमि को समर्पित करने के लिये और है ही क्या? इसी कारण मैं मातृवेदी पर अपनी रक्तांजलि अर्पित कर रहा हूँ।" - "ईश्वर से मेरी एक ही प्रार्थना है कि वह मुझे नया जीवन भी भारत-माता की गोद में ही प्रदान करें, और मेरा वह जीवन भारतमाता की आजादी के पवित्र कार्य के लिये समर्पित हो! मातृभूमि की आजादी मानवता के हित-चिंतन एवं परमेश्वर के वैभव के लिये है। अतः मेरे जन्म और बलिदान का यह क्रम उस समय तक चलता रहे जब तक भारत माता आजाद हो जाए। 'वंदे मातरम् ।"

कॅक्स्टन सभागृह

२९ दिसम्बर १९०८ को लंदन में कॅक्स्टन सभागृह में गुरु गोविंदसिंगजी का जन्मदिन मनाया गया। अध्यक्ष थे श्री विपिनचन्द्र और वक्ता थे लाला लाजपतराय। वीर सावरकर, विपिनचन्द्र के भाषण में लोकमान्य तिलकजी का नामोल्लेख होते ही सभागृह में 'वंदे मातरम् का जयघोष होने लगा। ब्रिटिश सत्ता की जडें हिलने लगीं।

गदर

बींसवीं शताब्दि के आरंभ में अनेक भारतीय रोजी-रोटी की खोज में कॅनडा और अमरिका गएँ। इनमें पंजाब के किसान और मजदूर अधिक थे। दिन प्रतिदिन कॅनडा जाने वालों की संख्या बढ़ रही थी। वहां उन्हें पूछा जाता था - 'झंडा कौनसा?" 'युनियन जैक' उत्तर मिलने पर व्यंगपूर्ण हंसी के साथ कहा जाता - 'वह तो अंग्रेजों का है। तुम उनके गुलाम हो, गुलामी का जीवन जीने से अच्छा है, मौत को गले लगाना।'

सोहनसिंह झकना एक दिन एक कारखानदार के यहाँ गये, उसने कहा, "मेरा दिल कहता है तुम्हें गोली से उड़ा दूँ। मुट्ठीभर गोरों की गुलामी करते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो। मैं तुम्हें बंदूके और गोलिया देता हूँ।" भारतीयों को स्थान-स्थान पर ऐसे ताने सुनने को मिलतें, कनाडा में भारतीयों को प्रवेश मिलना बंद हो गया। ऐसे ही कटु अनुभवों ने क्रांतिकारी भावना को जन्म दिया। अपनी सारी कठिनाईयों की जड जो पराधीनता उसे अपने कंधो से उतार फेंकने के लिये विदेशस्थ भारतीयों ने कमर कस ली।

सन १९०९ में श्री पांडुरंग खानखोजे अमरिका गए। अपने भारतीय बांधवों में स्वदेश-प्रेम जाग्रत करने के लिये उन्होंने "भारतीय स्वाधीनता संघ" नामक संस्था की स्थापना की। डॉ. तारकनाथ दास और खगेन्द्रचन्द्र दास उनके सहायक थे। लाला हरदयार वहाँ आने के बाद, 'भारतीय स्वाधीनता संघ' 'असोसिएशन ऑफ दि पॅसिफिक ओशन' . . . ये सब गदर पार्टी में विलीन हो गये। गदर पार्टी के अध्यक्ष थे सोहनसिंह झकना, मंत्री लालाजी और कोषाध्यक्ष पं. काशीराम।

गदर पार्टी का आदर्श था स्वाधीनता और समानता। स्वाधीनता चाहने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसमें शामिल हो सकता था। भारत की स्वाधीनता के लिये तन-मन-धन की कुर्बानी से सदस्य अपना मुँह नहीं मोड़ सकता था। पार्टी का राष्ट्रीय गीत था वंदे मातरम्।

पार्टी का मुखपत्र था 'गदर' १८५७ के स्वाधीनता संग्राम को अंग्रेजों ने 'गदर' कहा था इसलिये इसका नाम गदर रखा गया। वह युगान्तर प्रेस में छपाया जाता था। हिन्दी, उर्दू, गुरुमुखी, पंजावी, मराठी गुजराथी और अंग्रेजी आदि भाषाओं में प्रतिसप्ताह प्रकाशित होता था और जहाँ भी भारतीयों की संख्या काफी थी वहाँ विनामूल्य भेजा जाता था। इसके पहले पृष्ठ पर छपा रहता - 'ब्रिटिश सरकार का शत्रु।"

ध्येय वाक्य था - इसीलिये तो लो, प्यारों, कसम अपनी जान की।
दूर करा देंगें गुलामी जल्दी हिन्दुस्थान की।।

गदर पार्टी के लोग अपने साप्ताहिक 'गदर' के माध्यम से यह प्रचार कर रहे थें कि शीघ्रही एक विश्व युध्द छिड़नेवाला है जिसमें इग्लैंड बुरी तरह से उलझ जायेगा और इस अवसर का लाभ उठा कर भारतीयों को भारत की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आजादी के लिये अंग्रेजों के विरोध में हथियार उठा लेने चाहिये। अपने साप्ताहिक में उन्होंने एक विज्ञापन प्रकाशित किया था - आवश्यकता है गदर शुरु करने के लिये शूरवीर सैनिकों की -

वेतन - मृत्यु, पुरस्कार - हौतात्म, पेन्शन - स्वाधीनता, युध्दस्थल - भारत.

इस विज्ञापन का बड़ा अनुकूल परिणाम हुआ। अनेक लोग 'गदर' के उद्देश्य से भारत लौटे। जोर शोर मचाते हुए आएँ। परिणामतः सागरी मार्ग में अनेक कठिनाईयाँ झेलनी पड़ी। किनारे पर ही उन्हें गिरफ्तार किया गया।

पार्टी की ओर से सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी। पिस्तोल, रिवाल्वर, रायफल, तलवार, बर्छी, कृपाण आदि चलाने के साथ-साथ कसरत भी करवायी जाती थीं।

इन सब कारणों से चीढकर अमरिका में भारतीयों के लिये एक नया इमिग्रेशन कायदा लागू किया गया। प्रवासी भारतीयों के लिये यह काला कानून था। इस कानून का लाला हरदयालजी ने कडे शब्दों में विरोध प्रकट किया। फलतः वे गिरफ्तार हुए।

पंजाब से उत्तरप्रदेश तक यह गदर वीर फैले हुए थें, रासबिहारी बोस, शचिंद्रनाथ सन्याल - योजना बनाने में दंग थें। १८ साल का कर्तारसिंग सायकल पर ६०-७० मील घूमता था, गुप्त प्रचार करता था। विष्णु गणेश पिंगले-फौजी छावनी में घूम-घूम कर भारतीय सिपाहियों के मुरझाये मन में प्रेरणा जगाता था। दोनों भी पकडे गएँ। वंदे मातरम् कहते हुएँ फाँसी के तख्ते पर चढ़ें।

गदर का दूसरा पर्व उडिसा में प्रारंभ हुआ। राजसत्ता को चिढाकर - उसने सामना किया - पूर्व भारत की जिम्मेदारी उसकी थी। इस कार्य में बाघा जतीन और उसके चार मित्र शहीद हुएँ।

जलेश्वर सिंह, हरनामसिंह, तुंडीलात, बाबा पृथ्वीसिंह चंद्रशेखर आजाद, पं. परमानंद, बाबा ज्वालासिंह कितने नाम गिनाए जाय, भूपेन्द्रदत्त आदि सभी माँ की स्वाधीनता के दीवाने थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमरिका

२३ दिसम्बर १९१३ लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फेंकने की घटना की वर्षगॉठ थी। लाला हरदयाल जी ने एक पत्र प्रकाशित किया - 'शाब्वास'। जब बम फेंका गया था तब किसी ने उत्स्फूर्तता से कहा था 'शाबाश'! पत्रक पर दो बम से स्वाधीनता का वृक्ष निकला है ऐसा चित्र था। प्रत्येक पत्रक का मूल्य था अंग्रेज का मस्तक।

गुलामों को स्वाधीनता कैसे प्राप्त करनी है। हम कहते हैं 'बम की सहायता से' बम विद्रोह का संदेशवाहक है - सरकार को ठीक करने का रास्ता, विद्रोह का भय - शस्त्रों की पूजा करो, अभिवादन करो। पत्रक के तीन भाग थे - प्रथम भाग में बम का तत्त्वज्ञान द्वितीय में बम की उपयुक्तता तृतीय बम की प्रार्थना।

पत्रक के अंत में मोटे अक्षरों में लिखा था 'वंदे मातरम्' अमरिका से १००० पत्रक मॅडम कामा को पार्सल द्वारा भेजे गये थें। पार्सल छुडाने के लिये वे गईं तो पुलिस ने पहले ही उस पर कब्जा कर लिया था - कामा के सम्मुख पार्सल खोला - सावधानी बरतते हुए। मॅडम कामा ने कहा कि ये बंडल मेरा नही हैं।

कोमागातामारू

बाबा गुरुदत्तसिंह के नेतृत्व में लगभग ३६० यात्रियों को लेकर एक जापानी जहाज कोमागातामारू ४ अप्रेल १९१४ को हाँगकाँग से चला और २३ मई को वैंकोवार जा पहूँचा। उस जहाज पर ध्वज तहर रहा था। उस पर अंकित 'वंदेमातरम्' यह जयघोष बड़ा सुहावना लगता था। वैंकोवार में जहाज को समुद्र में ही खड़ा रखा गया, किनारे से लगने की अनुमति नही दी गयी। कॅनडा सरकार ने कानून बना रखा कि यदि कोई भारतीय भारत से सीधा कॅनडा पहुँचता है तो उसे कैनडा उतरने की अनुमति दी जायेगी अन्यथा नहीं। उन दिनों भारत से कॅनडा तक सीधी जहाजसेवा नहीं थी।

कोमागातामारू को खडे हो कर १५ दिन बीत गयें अनाज-पानी खत्म हो चुका था। दोनों ओर से कशमकश चलती रही [illegible] - यदि आप हमें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लौंटा देंगे तो अनाज-पानी के अभाव में ३६० लोग भूखे-प्यासे मरेंगे। उत्तर था - 'रोज इससे कईगुना लोग मरते है।' एक दिन इमीग्रेशन विभाग के अधिकारी जहाज पर पहुँचे। अनुमती के बदले में आप क्या देंगे - यह उनका सीधा सवाल था। ढेर सारे आशिर्वाद। बाबा का उत्तर। आशीर्वाद हिंदुस्थान में यहाँ डॉलर बताईये - बीस हजार डॉलर की अपेक्षा थी - बाबा ने शर्त मान्य की - वरना क्या न करता - परंतु उन्होंने 'गुरुनानक नेविगेशन निधि के नाम से रसीद मांगी। रिश्वत की रसीद कभी मिलती है क्या? हॉपकिन्शन झल्लाया और निकल गया।

जलती मिसाईले

लोगों को प्यासे रहकर ५ दिन हो गयें। योजना बनी कि जपानी अधिकारी जो अपने लिये पानी लाते है वह लूट लिया जाय। और बच्चे, वृध्द तथा महिलाओं को पानी पिलाया जाय। जपानी अधिकारियों को इसकी भनक लग गयी। अतः कॅनडा सरकारने एक बडी नाव में सशस्त्र पुलिस भेजी। यात्रियोंने निश्चय किया भूख से मरने से अच्छा है युध्द करते मरेंगे। पुलिस को जहाज पर चढने नहीं देंगे। पुलिसों ने गोलियाँ दागना प्रारंभ किया। निहत्थे यात्रियों ने कोयले के बड़े बड़े ढेले फेंकना प्रारंभ किया। जहाज के ऊपर होने से यात्रि पुलिसों की गोली से बच जाते पर पुलिस बेहोश हो कर गिर रही थी। पुलिसों ने रफ्तार तेज की तो यात्रियों ने कोयलों पर तेल छिडक कर उमें आग लगाकर बेंलचों की सहाय्यता से उन्हें फेंकना प्रारंभ किया। इन जलती मिसाइलों के आग के सामने पुलिस न ठहर सकी। सशस्त्र गोरों का काले लोगों द्वारा पिटाई का वह अच्छा उदाहरण बन गया।

भारतीयों का रौद्र रूप

पुलिस चीढ़ गयी। खीज निकालने के लिये दूसरे दिन दो लडाकू जहाज भेजने की योजना बनी। कॅनडा सरकार ने उसे रोका। क्यों कि वैंकोवार नगर में जितने भी भारतीय थे, उन्होंने भी कनाडा सरकार को चेतावनी दी जिस क्षण यात्रियों पर हमला होगा उसी क्षण सारे वैंकोवार नगर में वे आग लगा देंगे। सारा शहर राख का ढेर बना देंगे। उन का रौद्र रूप देखकर सरकार झुक गयी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जहाज की वापसी यात्रा के लिये भोजन का प्रबंध अपने खर्च से उन्होंने कर दिया। वहाँ के भारतीयों को जहाज पर जाने की अनुमति दी। परंतु गोलियाँ और मृत्यु मानों उनका पीछा ही कर रहा था। जहाज बजबज पहुँचा तो शासन ने यात्रियों पर गोलियाँ चलायी। १८ लोग वहीं शहीद हुएँ।

वास्तविक यह व्यापारिक और व्यक्तिगत यात्रा थी। परंतु वेंकोवार में उनके साथ हुआ दुर्व्यवहार और बजबज गोलीबार ने उसे राष्ट्रीय रूप प्रदान किया। इस पर अनेक यात्री क्रांति की प्रेरणा ले कर माँ की स्वाधीनता के लिये प्रयास करते रहें।

बाबा गुरुदत्तसिंग १९१४ से १९२० तक भूमिगत हुए। १९/४/१९२० को वे प्रकट हुए - राजप्रभुदत्त चौधरीजी से मिलने गये। आँखो से आँसू बरसने लगे पर मुख प्रसन्न था - अंतःकरण में था भावनाओं का ज्वार। प्रभुदत्त चौधरी को गले लगाते हुए भावनाओं ने शब्द रूप लिया 'वंदे मातरम्।'

आयरलैंड

वारिन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने "वंदे मातरम् मंडल" स्थापित किया। मॅडम कामा सदस्या थीं उनकी ओर से वे १९०१ में आयरलैंड गईं थीं।

'वंदे मातरम्' पत्रिका पॅरिस में प्रकाशित होती थी कुछ समय पश्चात् वह रोस्टरडॅम में प्रकाशित होने लगी।

आफ्रिका

२२ अक्टूबर १९१२ को नामदार गोपाल कृष्ण गोखले लंडन गये थें। २२/१०/१८९२ को वे केपटाऊन पहुँचे। वहाँ केपटाऊन में स्वागत हुआ 'वंदे मातरम्' के जयघोष में। गोखले तो नरम दल के अग्रणी थे। इनका स्वागत 'अफ्रिका' जैसे सुदूर देश में वंदे मातरम् से हुआ। जोहल्सवर्ग, नाताळ, प्रिटोरिया जहाँ कहीं भी पहुँचे स्वागत गीत था 'वंदे मातरम्'।

अफ्रिका में सत्याग्रह हुएँ। सत्याग्रही कारागृह से लौटें तब उनका स्वागत वंदे मातरम् से करना ही नागरिकों ने श्रेयस्कर समझा। सावरकरजी ब्रिस्टल के कारागृह मे थे २१/६/९० को उन्होंने ऋषि अय्यर को पत्र लिखा, वे लिखते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं, 'मॅडम कामा व चट्टो (वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय) को मेरा प्रेमपूर्वक 'वंदे मातरम्' कहिये।'

१९०२ से ले कर लगभग १९३८ तक महात्मा गांधीजी पत्र के अंत में लिखते थे Vande Mataram from Bapu शायद १९३७ के हरिपुरा काँग्रेस के बाद नमस्कार इस शब्द का प्रयोग उन्होंने प्रारम्भ किया।

बर्कले

२३ दिसम्बर को लॉर्ड हार्डिग्ज पर बम फेंका गया। लाला हरदयालजी उस समय बर्कले में थे। यह समाचार ज्ञात होते ही उन्होंने हिन्दी छात्राओं की सभा ली। आनंद से जयगान हुआ, वंदे मातरम् गीत गाया गया।

जगप्रवासी रामनाथ विश्वास जी लिखते हैं - भारतीय सीमा लाघंते ही प्रत्येक के मन में कुछ राष्ट्रीयता के भाव आपसे आप जगने लगता है। उस वक्त केवल तब वंदे मातरम् की आवश्यकता अनुभव होने लगती है। वंदे मातरम् यहीं उनका संबल रहा है।

*****

विज्ञानमय वंदे मातरम्

पंचभूत विनिर्मित - सुजलां (जल), सुफलां (पृथ्वी), मलयज़शीतलां (वायु), सस्यश्यामलां (प्राण-पावक), शुभ्रज्योत्स्ना (गगन-आकाश), शरीर (फुल्ल----निम्) जीवन में साधना के पुष्पों से श्रृंगार (सुहासिनी) विहँस उठता है, फिर (सुमधुर भाषिणीम्) वाक् शक्ति प्राप्त कर यह (सुखदां) आनंद और (वरदां) मनोवांछित वर प्राप्त करता है। यह सब माँ की कृपा से प्राप्त होता है - अतः माँ को प्रणाम - वंदे मातरम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सौंप दिया इस जीवन को

वंदे मातरम्! इस गीत से देशभक्ति का अद्भुत स्फुल्लिग प्रकट हुआ और देखते देखते क्रांति की चिनगारियों की बहार आयी। उसी का प्रभाव यह रहा कि ब्रिटिशों को वंगभंग रद्द करना पडा। एक दो नही छः साल तक युध्द चलता रहा। ऐसा कहते हैं भारत में मंत्रद्वारा भूत उतारने की विद्या है वैसे ही वंदे मातरम् इस मंत्र ने ब्रिटिशों पर सवार वंगभंग का भूत उतार दिया। १९११ में वंगभंग के आदेश वापस लिये गये। परंतु यह विभाजन उन्होंने २६ वर्ष पश्चात् करके दिखाया। अंग्रेज अपनी राजधानी कलकत्ता से दिल्ली लेकर गये।

'माँ की संतानों' में नवविधा भक्ति का परमोत्कर्ष होते होते 'अर्पण' भाव ही शेष रहा। भक्ति का आलंबन बन गया - मातृभू! जीवन की बागडोर माँ के हाथ में सौंप दी गयी। इसके अनेकों उदाहरण मन कों आज भी सांत्वना देते है। वह पढते पढतें मन तरल हो उठता है।

आन्दोलनों का प्रतीक

भारत का समस्त आन्दोलन वन्दे मातरम् पर आधारित था। श्री सीतारामजी सेकसरिया ने एक वक्तव्य में कहा - "वन्दे मातरम् कहने का स्पष्ट अर्थ यह था कि ब्रिटिश क्रांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में, सभी जुलूसों में वन्दे मातरम् गीत बराबर गाया जाता था। कार्यक्रम का प्रारंभ 'वन्दे मातरम्' गीत से ही होता था और समाप्त 'वन्दे मातरम्' नारे से होता था। जेल से जब राजनीतिक कैदियों को मोटर में लाद कर सिपाही अदालत तक ले जाते थें तब सड़क पर खड़ी जनता को देख कर वन्दे मातरम् का नारा लगाते थे अदालत के भीतर प्रवेश करते और सजा पाने के बाद, बाहर आते समय भी वन्दे मातरम् की आवाज लगाते थे।

सरकार जो कुछ कर रही है, उसका हम इस नारे से विरोध कर रहे हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलकत्ता स्थित इलिसियम रोड कभी देश भक्तों के लिए मौत का घर था, यहाँ उनपर भयंकर अत्याचार किये जाते थे। नाखूनों से ले कर तमाम बदन में पिन चुभोना, बर्फ की सिल्लियों में दबाये रखना आदि नृशंस अत्याचार किये जाते थे। मगर वे वे वीर आत्माएँ इन तमाम यातनाओं को सहते हुए 'वन्दे मातरम्' के नारों से भवन को गूंजित करती रहती थी।

" जेलों में जब राजनितिक कैदी बन्द होते और जब उनकी गणना होती तब आनन्द लेने के लिये थाली-बाटा (थाली पर कटोरी बजाना) करते हुए वे समवेत स्वर में "वन्दे मातरम्" गाते थें। चाहे लाठी चार्ज हो या बैरक के भीतर जाना हो। किसी भी कार्य का विरोध करना हुआ तो वन्दे मातरम् का नारा लगाया जाता था। बैरक का दरवाजा बन्द करने के बाद भी हम वन्दे मातरम् मन्त्र जपते थे।

मातृवंदना

श्री. आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलगुरु सन १९०६ से ले कर १९१४ तक थे। यह दायित्व उन्होंने निभाया। इस बीच पंजाब विश्वविद्यालय ने उन्हें दीक्षान्त समारोह में आमंत्रित किया था। तब सर्वप्रथम उन्होंने वंदे मातरम् गाना प्रारंभ किया। इधर निमंत्रितों के होश उड गये, उन्हें लगा अब ये पकडे जायेंगें। कार्यक्रम में राज्यपाल महोदय तथा अनेक शासकीय अधिकारी उपस्थित थें। पता नही अब क्या होगा। परंतु आशुतोषबाबू निश्चिंत थे। गीत समाप्त करने के बाद उन्होंने कहा, 'मातृवंदना से ही कोई कार्य प्रारंभ करना चाहिये।' उनकी इस कृति तथा भाषण से लोग तथा राज्यपाल भी प्रभावित हुएँ। परिणामतः कोई कार्यवाही नही की गयी। सभी आपस में कहने लगें 'मर्द हो तो ऐसा। मुखर्जीबाबू आप सच शेर-ए-बंगाल हैं।

मैं आझाद हूँ

यही मतवालापन पूरे भारत में स्वाधीनता प्राप्ति तक छाया हुआ था। चंद्रशेखर एक मेरा साल का किशोर। गांधीजी के आवाहन पर वह असहयोग आंदोलन में कूद पडा। वह पुलिस द्वारा पकडा गया। पुलिस भी उसकी आयु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देखकर सोच में पड गयें। उन्होंने मामुली पूछताछ के बाद उसे छोडना चाहा। पुलिस ने उसे पूछा - 'तुम्हारा नाम?' 'चंद्रशेखर आझाद', 'पिता का नाम?' 'स्वतंत्रता', 'निवास स्थान?' 'जेल'।

पुलिसवाले इस अजीब उत्तरों से संतप्त हुएँ। चंद्रशेखर को बेतों की सजा हुई। पुलिस ने उसे खंबे को बांधना चाहा। 'बांधते क्यों हो? मै खडा हूँ, आप बेत लगाईयें' चंद्रशेखर ने बताया।

बेतों की आवभगत

खंबे जैसे निश्चल रह कर उन्होंने बेत खायें। 'वंदे मातरम्' - 'भारत माता की जय' इस जयध्वनि के साथ हर बेंत की आवभगत करते रहें। उपस्थितों की आंखे छलछला गयी। इस किशोर का अभिनंदन समारोह हुआ, तो इतने हार पहनाये गयें कि मंच से उसका चेहरा भी नही दिख रहा था। सभापति ने उसे 'आझाद' नाम से संबोधित किया। तबसे वह इसी नाम से प्रसिध्द हुए। उनका यह उपनाम हमें पता नहीं है।

चंद्रशेख़र जब पत्र लिखते थे तब पत्र का प्रारंभ व समापन 'वंदे मातरम्' से ही करते थे।

१९०८ में खुदीराम को फाँसी हुई। वंदे मातरम् कहते हुएँ वे मृत्यु के सिंहासन पर चढ़े। बडे ठाटबांट से उनका अन्त्य संस्कार हुआ। उनकी रक्षा अनेकोंने अपने पूजा घर में रखी। थोडे ही दिन पश्चात् कन्हैयालालजी ने भी यही रास्ता अपना लिया। उनके ही गुट का नरेन्द्र माफी का गवाह बना था। फितूर हुआ। बडे नाट्यपूर्ण रीति से कन्हैय्यालालजी ने उसे मृत्युदंड दिया। परिणाम अटल था, स्वयं का मृत्यु! कन्हैयालालजी को पुलिस ने पूछा, 'पिस्तौल कहाँ से लाया था?'

'खुदीराम का भूत आया था पिस्तुल देने के लियें'। पुलिस का सर चकरा गया। मृत्यु सिर पर मंडरा रहा है, और ये मजाक कर रहा है? भगवान नारदजी भक्ति का परिपाक बताते हुए 'भक्तिसूत्र' में कहते हैं, 'सः मत्तो भवति'। यह सूत्र इन क्रांतिकारियों के रूप में प्रत्यक्ष दिखाई देता है। लोग इस उत्तर पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बेहद खुश हुएँ। उन्होंने शंखनाद कर जुलुस निकाले। 'वंदे मातरम्' का घोष किया।

कन्हैयालाल को फाँसी की सजा हुई। अपने भाईयों को उन्होंने बताया, 'मेरी अन्त्ययात्रा ठाटबाट से निकालियेगा। मेरे लिये नही. परंतु जिस बंगाल में मीरजाफर जैसे देशद्रोही हुएँ वहाँ मातृभूमि के लिये मृत्यु को आलिंगन देनेवाले वीर भी निर्माण होते हैं, यह सब को पता चले।

१० नवम्बर को उनका शहीद दिन रहा। अश्रुपूर्ण नेत्रों से उनके रिश्तेदार मृतदेह लेने के लिये गये। जेल सुपरिंटेंडंट इमर्सन ने कहा, 'इस तरह के संतानों को जन्म देनेवाला देश धन्य हैं'। वंदे मातरम् के स्वरों से उन्हें श्रध्दांजली अर्पित की गयी।

सरफरोशी की तमन्ना

काकोरी कांड में उत्तर प्रदेश के रामप्रसाद बिस्मिलजी तथा उनके कुछ साथी पकडे गयें। उनके साथ उनके पोस्ट बॉक्स अर्थात् जिन के माध्यम से उनका पत्रव्यवहार चलता था वे मित्र भी पकडे गये।

बिस्मिलजी का अभियोग १८ माह तक चलता रहा। न्यायालय में अपने भाषण में उन्होंने बताया 'मुझे पता है जल्दी ही न्याय के नाम पर मेरा गला दबाया जायेगा। मुझे मृत्यु का भय नही है। मेरे रक्त से अनेक क्रांतिकारक जन्म लेंगे, उत्पन्न होंगे, और एक दिन इन विदेशियों का नृशंस तांडव बंद होगा। मैं मरूंगा। फिर से जन्म लूँगा और मातृभू का उध्दार करूंगा।'

८ अप्रैल १९२७ को लखनऊ के रिंग थिएटर में अंतिम फैसला होने वाला था। बाहर क्षुब्ध जनसागर खडा था। जनता आँसू वहा रही थी और कारागृह में मृत्यु के स्वागत की धूमधाम चल रही थी। आज किसी को फाँसी, किसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को जन्मठेप होनेही वाली थी। फिर से एक दूसरे को मिल सकेंगे या नही यह प्रश्न था। चंद घंटों में ही सब के रास्ते अलग अलग होनेवाले थे। अतः सहभोज का कार्यक्रम तय हुआ। रामप्रसादजी स्वयं भोजन बना कर ही खाते थे, फिर भी उसमें संम्मिलित हुएँ। हरेक ने अपनी थाली में से कुछ ना कुछ दूसरों को खिलाया। यह दृश्य देखते ही बनता था। कारागृह के सभी कर्मचारी आश्चर्य से यह उत्साह और आनंद का जल्लोष देख रहे थें। यह सब उनकी समझ से कल्पना से परे था।

सहभोजन के पश्चात् बिदाई समारोह हुआ। उसकी तैयारी पहले ही की गयी थी। कोई हाथ में कटोरी ले कर 'तिलक' कर रहे थें, कोई 'इत्र' लगा रहे थे। गुलाबपानी छिडका गया, मसाला पान दिया गया। बिस्मिल का गीत 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में हैं' गाते हुएँ न्यायालय में गयें। साथ ही वंदे मातरम्।

रामप्रसाद, रोशनसिंह, राजेन्द्रनाथ को फांसी हुई। सबने एक दूसरे को आलिंगन दिया। कारागृह में ले जाने के पश्चात् उस रात सभीको एकत्रित रखा गया। उन्होंने दिवाली मनायी। रातभर भजन गीत गाएँ।

१८ अगस्ट १९२७ को बिस्मिलजी को फांसी होने वाली थी। उनकी माँ एक दिन पहले उन्हें मिलने आयी थी। साथ उनका एक सहचारी भी दिशादर्शन के लिये आया था। 'यह कौन हैं' यह पूछने पर उनकी माँ ने बडी निर्भीकता से बताया, 'मेरी बहन का लाडला।'

तुम्हारे ही गोद में अगला जनम

माँ का धीरोदात्त रूप देख कर उनके आंखों में आंसू आयें। माँ ने कहा, "क्यों मेरे दूध को लजा रहे हो? मुझे लगा तुमने स्वयंपर विजय पायी है। आजतक मातृभू के लिये आँसू बहाता आया और आखरीं दिन माँ के लिये? क्या अब मृत्यु का डर लग रहा है? इस कायरता से क्या लाभ? तुम्हारा वीरमरण ही मेरी कृतार्थता है। मुझे बडा गर्व था कि आज इस देश में मेरा बेटा मातृभू के लिये मर मिट रहा है। तुम्हारा लालन पालन कर तुम्हें बडा किया - उसके पश्चात् तुम देश की संपत्ति बन गये। आज तुम देश के लिये काम आ रहे हो,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरा जीवन धन्य हो गया।"

"माँ, मृत्यु के भय से मेरी आँखों में पानी नही आया। आप ही जैसी माँ की गोद में मैंने जन्म लिया, इस धन्यता के कारण आँखें भर आयी। माँ, तुम्हारी ही गोद में अगला जनम लूँ।"

तख्त पर चढते समय उन्हें अंतिम इच्छा पूछी गयी - 'अंग्रेजी साम्राज्य का विनाश'। मालिक तेरी रजा रहे और तू ही न रहे। 'वंदे मातरम्' के जयघोष के साथ घटाकाश महदाकाश में विलीन हुआ।

क्षमा का नाम नही लिया

उनके मित्र रोशनसिंह को १९ डिसेम्बर को फाँसी हुई। रोशनसिंह अधेड उम्र के थे। उनके बालबच्चे थे। उनका बेटा उन्हें मिलने आया। किसीने उसको बताया 'तुम्हारे पिताजी दया की अर्जी कर रहे हैं।

भेट होते ही उसने प्रश्न पूछा, 'पिताजी, आपने माफी माँगी? कुलकीर्ति को कलंकित किया?'

'नही बेटा, तुम्हारा पिता कायर नही है। उसके धमनियों में भारतभू का खून बह रहा है। मैने क्षमा -याचना का नाम तक नही लिया'। और वंदे मातरम् इस सिंहनाद के साथ एक ज्योति अखंडत्व में प्रवेश कर गयी।

पानी में चीनी मिलाने पर जब वह घुल मिल जाती है तो कही से भी चखो तो वह पानी मधुर ही लगता है। वैसा ही स्वाधीनता की भावना उस समय जन जीवन में घुलमिल गयी थी। देश के किसी भी कोने से यही दृश्य दिखाई देता था।

कारा में वंदे मातरम्

१९३८ में निजाम राज्य में आंदोलन उभर आया। छात्रों की शक्ति ने भी अपना चमत्कार दिखाया। वंदे मातरम् गाने के कारण उन्हें निष्कासित किया गया। उस समय जेल के सभी सत्याग्रहियों ने अन्न सत्याग्रह कर उन्हें सहानुभूति दर्शायी। और अपनी भावनाभिव्यक्ति के लिये वंदे मातरम् गाना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रारंभ किया। सुर को सुर मिला और एक नयी कथा साकार हुई।

एक दिन भोर में कारागृह के एक कोने में 'वंदे मातरम्' गाया गया। अन्य बॅरक के लिये भी मानों वह 'वंदे मातरम्' गाने की सूचना ही थी। प्रत्येक सत्याग्रही क्रम से वंदे मातरम् गाने लगा। तीन दिन तक यह क्रम चलता रहा। कारागृह प्रमुखों ने वरिष्ठ अधिकारियों को सूचना दी। शीघ्र ही इन्सपेक्टर जनरल ऑफ पुलिस वहाँ उपस्थित हुएँ। 'कारागृह में 'वंदे मातरम्' नही गाया जायेगा' उन्होंने कहा।

उस कारागृह में स्वामी रामानंद तीर्थ भी उन सत्याग्रहियों में से एक थे। उन्हें अलग रखा गया था। देढ़ साल की सश्रम कारावास की सजा हुई थी। सभी लोग उनका आदर करते थें। उप कारागृहाधिकारी उन्हें 'गुरु महाराज' कहता था। आय.जी.पी. उन्हें मिलने गये। उन्होंने वंदे मातरम् के बारे में शासन की नीति बताई। और वंदे मातरम् गाने की अनुमति नही है ऐसा बताया।

'मै वंदे मातरम् गा कर रहूँगा' स्वामीजी ने उत्तर दिया। 'इसका नतीजा बहुत बुरा होगा।' परंतु स्वामीजी टस से मस नही हुएँ। 'आप अकेले गा सकोगे - समुदाय में नही।'

वंदे मातरम् रामचंद्रराव

सत्याग्रहियों ने उसे अनसुना किया। वंदे मातरम् गाते रहें। सभीको कोठडियों में बंद किया गया। बिहार सत्याग्रहियों को भी यह दंड मिला। सत्याग्रहियों में से एक को बेत की सजा हुई। उसे कहते थे 'टिकटिकी'।

स्वामीजी की कोठी के सामने ही वह स्थान था। उस सत्याग्रही को खंबे को बांधा गया। सप् सप् आवाज आने लगी। उस आवाज के साथ और एक आवाज आती थी 'वंदे मातरम्'। शरीर खून से लहुलुहान हुआ। स्वाधीनता का इतिहास क्या रक्त के बिना लिखा जा सकता है? स्वातंत्र्यदेवता! वह तो रूधिरप्रिया है। लगभग १४ वेतों तक उसने बुलंद आवाज में जयघोष किया। धीरे धीरे आवाज क्षीण होती गयी। बेहोशी की अवस्था में उसके होंठ बुदबुदा रहे थे 'वंदे मातरम्'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस सजा के निषेधार्थ सत्याग्रहियों ने फिर से अन्न सत्याग्रह प्रारंभ किया। और साथही अखंड वंदे मातरम् का गायन। कोई ना कोई सत्याग्रही वंदे मातरम् गाता ही रहा। तिसरे दिन आय.जी.पी. दौडते हुएँ आये, सत्याग्रहियों से चर्चा की। शाम को बरॅक बंद होने के बाद वंदे मातरम् गायेंगे यह निश्चित हुआ। स्वामीजी को भी इस बात से अवगत कराया गया। अन्न सत्याग्रह समाप्त करने के लिये विनंति की गयी। 'बेतों की सजा हुएँ सत्याग्रही को मिलने के पश्चात् ही भोजन करूंगा' स्वामीजी ने बताया। आय.जी.पी. और स्वामीजी दोनों में तनाव निर्माण हुआ। आखिर 'बात नही करेंगे' इस शर्त पर भेट हुई। हिंदुमहासभा के पंढरपुर अधिवेशन में उस सत्याग्रही को स्वा. सावरकरजी ने 'वंदे मातरम् रामचंद्रराव' उस उपाधि से गौरवान्वित किया। निजाम राज्य के विरोध में हिंदुमहासभा द्वारा किये गये 'भागानगर संग्राम' में भी वंदे मातरम् उच्चारण के लिये बालकों ने प्राणार्पण किया आखरी सांस तक वे वंदे मातरम् गाते रहे। इस गौरवशाली शृंखला की एक कडी है 'सूर्यसेन'।

सूर्यसेन का सूर्यतेज

सूर्यसेन 'मास्टरदा' नाम से प्रसिध्द थे। वे चटगांव के एक विद्यालय में अध्यापक थे और नगर की सांस्कृतिक चेतना के केन्द्र भी। लोग उन्हें प्रेम से 'मास्टरदा' कहते थें। उनकी इंडियन रिपब्लिकन आर्मी थी। अनेक वर्षों तक शासन उन्हें खोजता रहा। आखिर चटगांव शस्त्रकाण्ड में वे पकडे गयें। उनके कुछ साथी भी पकडे गयें। उनमें से एक थी कल्पना दत्त।

मास्टरदा को पकडा तो जरूर। पर शासन आशंकित था। उन्हें बडी गुप्तता से रखा गया था। न उन्हे पता था कि जेल में और कौन कौन है? अन्यों को पता था कि मास्टरदा व्हाँ है। उन्हें फाँसी की सजा हुई। मंध्यरात्री के घनघोर अंधेरे में पुलिस उन्हें वधस्तंभ की ओर ले जाने के लिये आयी। अपनी यह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतिम बेला है यह जानकर मास्टरदा ने अपनी पूरी ताकद से घोषणा की 'वंदे मातरम्'। वायुमंडल को भेदने वाले उसके आवर्तन से कारागृह की ईंट ईंट झंकृत हुई। अन्य क्रांतिकारक अपने नायक की आवाज पहचान गयें। उन्होंने समझ लिया कि उनका नेता उनसे चिरबिदाई ले रहा है। यह उनकी अंतिम बेला है। उन्होंने भी उतनेही जोर से घोष किया 'वंदे मातरम्'। कारागृह की दीवारे भी रोमांचित हुईं और पुलिस क्रोधित हुई। उन्होंने डंडे से मास्टरदा को पीटना शुरु किया। परंतु दंडे के भय से मातृवंदना कैसी रुक सकती है? वह तो हरेक लाठी के साथ गुंजती रही। आखिर मास्टरदा बेहोश हुएँ। उसी बेहोश अवस्था में उनके गले में फांसी की डोरी लटकायी गयी।

उनका शव भी अंत्यसंस्कारों के लिये नही दिया गया। शासन को भय लगता था कि उनकी रक्षा के कण-कण से प्रतिशोध की चिंनगारी उत्पन्न हो गयी तो?

कारागृह के अंदर ही अंत्यसंस्कार कर उनकी रक्षा समुद्र में बहायी गयी। आश्चर्य यह रहा कि उस रक्षा ने मिट्टी में नही तो पानी में ही सही, अपनी भूमिका निभायी। पानी से उन्होंने क्रांति का संदेश फैलाया और नौसेना के सैनिकों ने विद्रोह किया।

और नौ दीप बुझ गए

.. द्वितीय महायुध्द का कांल था। चौथे मद्रास कोस्टल डिफेन्स बॅटरी का एंक सेक्शन था। ब्रिटिश शासित हिंदी सेना की एक टुकडी शासन विरोधी कुछ योजना बना रही है, यह गुप्त संदेश शासन को प्राप्त हुआ। १८ अप्रैल १९४३ को उन्हें लष्करी न्यायालय के सामने उपस्थित किया गया। ६ जुलाई और ५ आगस्ट को बंगलोर के सेंट ॲन्डयूज चर्च में उनकी पूछताछ हुई - कोर्ट मार्शल हुआ - और बंग के उन नौ युवकों को फांसी पर लटकाने का आदेश हुआ। बेचारे ब्रिटिश शासनकर्ते घूमफिर कर 'फांसी' तक ही पहूँच पाते थे। न उनका क्रोधाग्नि शांत होता था न क्रांतिकारकों की माँ के लिये मर मिटने की लालसा शांत होती थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मद्रास कारागृह में उन्हें २३ सितम्बर १९४३ को फाँसी हुई। फाँसी के तख्तपर चढने से पहले इन नौ सैनिकों ने एक दूसरों को कसकर प्रगाढ आलिंगन दिया, मुक्त कंठ से मातृभू का जयजयकार किया 'वंदे मातरम्' और अनुपम मुस्कराहट के साथ वीरोचित पुरस्कार प्राप्त किया। उनके नाम से :- मानकुमार, वसुठाकुर, नंदकुमार डे, दुर्गादास राय, चौधरी निरंजन वसआ, फणिभूषण चक्रवर्ती, चिन्नरंजन मुखर्जी, सुनील कुमार मुखर्जी, कालीपद एच, वीरेन्द्र मोहन मुखर्जी, देश के लिये अनगिनन बलिदानों में और नौ बलिदान सम्मिलित हो गयें।

इन्कलाब जिंदाबाद

प्रसिध्द क्रांतिकारी तथा पत्रकार रामचंद्र नरहरि बापट जी एक वार्तालाप में कहते है - 'इन्कलाब जिंदाबाद' यह नारा १९२८ के पश्चात आया और इसका प्रमुख कारण था - क्रांतिकारकों का मार्क्सवादी साहित्य का अध्ययन। कहने को सरकार क्रांतिकारियों को कम्युनिस्ट कह कर जेल में बंद रखना चाहती थी पर मार्क्सवादी साहित्य की पूर्ती सरकारी तौर पर अंग्रेज करते रहें और बदनाम हमें करते थे कि चोरी से मंगा कर ये साहित्य पढ़ते हैं। वंदे मातरम् प्रत्येक क्रांतिकारक के निकट मंत्र जैसा रहा।

वंदे मातरम् का नारा लगाते समय सुभाषबाबू अक्सर अपना दाहिना हाथ ऊठा लिया करते थे। एक बार लाठी चार्ज में उनका हाथ टूट गया।

कनक सी दमक उठी कनकलता

असम के दारांग जिले में एक छोटी सी जगह है गोहपुर २२ सितम्बर १९८२ को युवक युवतीयों का एक जुलुस थाने पर तिरंगा फहराने का प्रण कर के निकट गांव छोटा होने के कारण गली-गली घूम कर पुलिस थाने के पास आया। थाने के ठीक सामने एक तालाब था अतः जुलुस दो विभागों में बाँटकर तालाब की दोनों ओर से थाने पर पहुँचा। आगे थी वीर बाला कनकलता। द्वार पर थानेदार अपने साथियों के साथ डँट कर स्वागत के लिये खडा था। उसके हाथ में रिवाल्वर ओर सिपाहियों के हाथों में रायफलें थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'ए लड़की थाने के अंदर नहीं आना' क्यों नहीं? क्या थाना आपकी संपत्ति है? आप लोग तो हमारे भाई है। आईये हमारे साथ सबलोग मिल कर झंडा लगायेंगे।

थानेदार भड़क उठा - उसने बताया वह किसीको अंदर नहीं आने देगा-

पुलिस थाना तो जनता की संपत्ति होती है, जनता की संपत्ति के रक्षक यदि जनता का कहना नहीं मानेंगे तो जनता उन्हें हटा देगी। और अपनी संपत्ति को अपने अधिकार में ले लेगी।

गोलियाँ जब चलने लगी

थानेदार के क्रोध की कोई सीमा न रहीं 'एक कदम भी आगे बढोगी तो गोली से भून दूंगा।' उसने कहा

जान हथेली पर लिये निकले समूह को गोली से क्या फरक पडनेवाला था? "भाईयों और बहनों आओ, माँ की स्वाधीनता के लिये मौत को गले लगाने आओ।" कनकलता ने आहवान किया।

जैसे ही क़दम बढाएँ थानेदार की गोली छूटी और कनकलता के सीने को पार करते हुए ठीक उसके पीछे खडे युवक को भी लगी।

पुलिसों ने अंधाधुंध गोलियाँ बरसाना शुरु कर दिया - फिर भी युवक आगे बढते गये अपना लक्ष्य पूरा करने के लिये! उनको कौन रोक सकता था? थाने पर तिरंगा लहराया अचानक जयघोष हुआ वंदे मातरम् थाने पर तिरंगा लहर रहा था।

नीलाकाश में बडी शान से फहरते हुएँ उस ध्वज को अभिवादन करते वंदे मातरम् का जयघोष आकाश को भेदते हुए हो उठा।

असम के नेता - बरदोलाई की राय में इस गोलीकांड में कम से कम साठ लोग शहीद हुएँ। इन शहीदों के कितने नाम गिनायें, कितनी कथा लिखाएँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माँ के लिये जीना, माँ के लिये मरना इतना ही नहीं तो बार बार जनम लेना यहीं क्रांतिकारकों की विशेषता रहीं। उनके रोम रोम में माँ का प्रेम, माँ का ध्यास रमा हुआ था। क्रांतिकारकों की ये कथाएँ हमारी अमोल धरोहर है जो हमें कहती है -

सौंप दिया इस जीवन को माँ तुम्हारे हाथों में

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगीत सृष्टि में 'वंदे मातरम्'

वंदे मातरम्! इस गीत में कोयल के स्वर की नजाकत है। साथ ही सिंह की दहाड़ भी। कवि भावनाओं को शब्दरूप देता है। संगीतकार उन्हें स्वर दे कर उसके सौंदर्य में और भी बहार लाता है।

वंदे मातरम् के जन्म से ही वह अनेकों के आकर्षण का विषय रहा। अनेकों ने उसे अपनी रुचि के अनुसार भिन्न-भिन्न रागों में गाया। अभी-अभी सोलह रागों में वंदे मातरम् की कॅसेट बनायी है।

'वंदे मातरम्' की स्वरलिपि सर्वप्रथम बनायी श्री. यदुनाथ भट्टजी ने। मल्हार राग और कव्वाली ताल में। बंकिमबाबू स्वयं हार्मोनियम पर सर्वश्री जगदीशनाथ राय, हेमचंद्र बॅनर्जी, ताराप्रसाद चट्टोपाध्याय के साथ वंदे मातरम् गाते थे। आगे चल कर श्री. नेपालचंद्र धर नाम के गायक ने इस गीत को देस मल्हार राग में ढाला।

इस गीत के प्रचार में ठाकुर परिवार का भारी सहभाग रहा। प्रथम प्रतिभासुंदरी देवी ने स्वरलिपि बना कर 'बालक' पत्रिका में उसका अंतर्भाग किया था।

राष्ट्रगीत की मुहर

१८९६ में स्वयं रविन्द्रनाथ ठाकुरजी ने इसकी स्वरलिपि बनायी और काँग्रेस अधिवेशन में गाया भी। कविवर की भावमधुर आवाज, भक्तिपूर्ण स्वर तथा गीत की भावनाओं से जनमानस इतना प्रभावित हुआ कि उसी समय उसने इसपर राष्ट्रगीत की मुहर लगा दी।

१९०१ के कांग्रेस अधिवेशन में गायक श्री. दक्षिणरंजन सेन ने वंदे मातरम् गाया था। अध्यक्ष थे श्री. दीनशा ईदुलवाचा। म. गांधीजी भी इस अधिवेशन में उपस्थित थे। वे लिखते है - When I first heard it sung it had enthralled me. I associated the purest national spirit

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

with it. आगे चल कर उन्होंने यह गीत गुजराती लिपि में प्रकाशित भी किया।

रविन्द्रनाथजी की भतीजी श्रीमती सरलादेवी चौधुरानी उनका धैर्य, साहस अत्यंत प्रशंसनीय है। सन् १९०५ में वाराणसी में काँग्रेस का अधिवेशन था। अध्यक्ष थे नामदार गोखलेजी। सरलादेवीजी को अधिवेशन मंडप में देख कर वे 'वंदे मातरम्' गाये ऐसा जनाग्रह होने लगा। अंत में अध्यक्षजी का विरोध, और जनता का आग्रह इन दोनों के बीच, दो कड़ियाँ गाने की अनुमति ले कर वे खड़ी हुई। वंदे मातरम् गीत का प्रभाव ऐसा था कि वह अपने को खो बैठी और पूरा गीत गा कर ही रुकी। सभी श्रोतागण भी गान समाधि में लीन हो गये।

कृष्ण की वंशी ने पूरे वृदांवन को आकर्षित किया था, प्रभावित किया था, पागल बनाया था। वैसे ही इस गीत के रंग में तत्कालीन गायक भी पूरी तरह से रंग गये थें। स्वातंत्र्यपूर्व काल में जितने भी जलसे होते थें उसमें वंदे मातरम् अवश्य गाया जाता था। वंदे मातरम् के बिना जलसा हुआ है ऐसा न गायकों को प्रतीत होता था, न जनता को।'

गान कोकिला हिराबाई बडोदेकर

ख्यातनाम गायिका हिराबाई बडोदेकरजी के संदर्भ में प्रा. अरविंद मंगरुळकरजी लिखते है -

१९३९ की बात है - संगीत की मैफिल के आखरी में हिराबाई खड़ी हो कर वंदे मातरम् गाने लगी। उन्होंने तिलक कामोद में वंदे मातरम् गाया। यह स्वर श्री. वसंत देसाईजी ने दिया हुआ था। हिराबाई के रसीले-सुरीले स्वर से श्रोताओं का शरीर रोमांचित - पुलकित हो उठा। अनायास मुँह से शब्द आयें 'वाह! वाह!' मानों धन्योद्‌गार की वर्षा ही हिराबाई पर होने लगी। प्रा. अरविंदजी लिखते है कि उनके स्वर से राष्ट्रगीत का अर्थ उन्हें ज्ञात हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत के प्रथम स्वाधीनता दिन के अवसर पर आकाशवाणी पर 'वंदे मातरम्' गाने का बहुमान उन्हें प्राप्त हुआ। स्वाधीन भारत के ध्वजारोहण की मंगल बेला में हिराबाई का वंदे मातरम् आकाशवाणी से प्रसारित हो रहा था।

पंडित विष्णुबुवा पलुस्कर

श्री. पलुस्करजी ने काफी राग में वंदे मातरम् की स्वरलिपि बनायी। सर्वप्रथम १९१३ को लाहोर में संपन्न अधिवेशन में उन्होंने वंदे मातरम् गाया। उनके मधुर दमदार आवाज से देशभक्ति के साथ साथ नादब्रह्म की प्रचीति लोगों को होती थी। राष्ट्रगीत और अभिजात शास्त्रों का संगीत का मेलजोल काफी प्रभावशाली रहा। १९१३ के पश्चात् काँग्रेस अधिवेशनों में वंदे मातरम् गाने के लिये उन्हें निरतंर आमंत्रित किया जाता था। मानो वे इस गीत के उद्‌गाता थें।

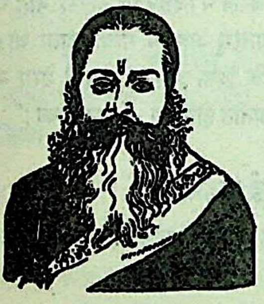

Vishnu Digambar Paluskar

सन १९२३ में काँग्रेस का अधिवेशन काकिनाडा में था। अध्यक्ष थे सय्यद महंमद अली। नित्यक्रमानुसार पं. पलुस्करजी गीत गाने के लिये मंच पर उपस्थित हुएँ। अध्यक्षजी ने आक्षेप लिया। श्री. पलुस्करजी ने तपाक से उत्तर दिया 'यह काँग्रेस का मंच है। न तो खिलाफत संमेलन का मंच, ना मस्जिद।'

और उन्होंने वंदे मातरम् गाना प्रारंभ किया। गाया भी पूरा। सभा स्तब्ध रही। जो बात नेतागण नही कह सकें वह पलुस्करजी कर सकें। क्योंकि 'वंदे मातरम्' उनकी साधना का विषय था। माँ पर नितांत श्रध्दा, शुध्द सात्विक प्रेम उनके संगीत का आधार था। साधना - मार्ग में कोई अपना पराया नही होता। मार्ग में बाधा बनाने वालों को लांघ कर ही जाना पड़ता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्व. पंडित ओंकारनाथजी भी पलुस्करजी जैसे ही तेजस्वी थे। सिध्दान्तों के बारे में वे आग्रही थे। १९३५ में अब्दुल गफार नगर में संपन्न अधिवेशन में उन्होंने वंदे मातरम् गाया। दो साल पश्चात् ही वातावरण में बदलाव आया। गीत की तोड-मरोड़ हुई। १९३७ में काँग्रेस ने गीत की दो ही कड़ियाँ गाने का निर्णय लिया। अतः हरिपुरा कॉंग्रेस अधिवेशन में आमंत्रण के बावजूद भी पं. ओंकारनाथजी 'वंदे मातरम्' गाने के लिये गये नही। वे कहते थे 'गाऊंगा तो पूरा गीत, वरना गाऊंगा ही नही।'

सन १९४७ में भारत को स्वाधीनता प्राप्त हुई।१५ ऑगस्ट को 'स्वतंत्रता' की घोषणा होनी थी। पं. ओंकारनाथजी कुछ कारणवश मद्रास गये थे। वुडलँड होटल में उनका निवास था। अचानक नभोवाणी निदेशक दौड़ते हुएँ पंडितजी के पास आयें और बोले, 'आपको सरदार पटेलजी ने दिल्ली आकाशवाणी पर १५ ऑगस्ट को प्रातः वंदे मातरम् गाने के लिये आमंत्रित किया है।'

'मैं तयार हूँ। वंदेमातरम् गाऊंगा जरूर, परंतु सरदार पटेलजी को कहिये, पूरा गीत गाने की अनुमति होगी तो ही दिल्ली आऊंगा'। ओंकारनाथजी ने उत्तर दिया।

सरदार पटेलजी ने तत्काल संदेश दिया 'आप आईये और संपूर्ण वंदे मातरम् गाईये।'

श्री. श्यामलदास गांधी कहते हैं "१५ ऑगस्ट १९४७ की भोर में जब स्वतंत्रता का सूर्योदय हो रहा था तब आकाशवाणी पर पंडित ओंकारनाथजी खड़े हो कर उस स्वर्णिम विहान में मुक्त विहंग की भांति पूरे उल्लास के साथ 'वंदे मातरम्' गा रहे थें।"

स्वतंत्रता की प्रसन्न प्रथम प्रभात और संपूर्ण वंदे मातरम् का गायन, वे क्षण मानों वंदे मातरम् की सुधा का रसपान कर सजीव हो उठें।

वि. दे. अंभईकर

नवम्बर १९९२ को भारत के संसदभवन में वंदे मातरम् को लेकर एक विवाद खड़ा हुआ। वह सब समाचार-पत्रों मे पढ़ कर श्री. अंभईकर व्यथित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतःकरण से लिखते हैं - १९२६ को गांधीजी जब नागपुर आये थें तब उनके पास बैठ कर उन्होंने वंदे मातरम् गाया था। वे मिश्र खंबायती राग में वंदे मातरम् गाया करते थे। १९४८ में वंदे मातरम् यही राष्ट्रगीत हो यह आम धारणा थी। इसी धारणा को पुष्ट करने हेतु स्वयं अंभईकरजी ने प्रवास किया। उनके राष्ट्रीय विचारपोषक स्वर पर सरहद गांधी, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, मानवेन्द्र राय, न.चि.केळकर आदि लोग प्रसन्न थे। १९४९ में संविधान समिति के प्रतोद श्री. सत्यनारायण सिंह की उपस्थिति में सन्मान्य सदस्यों ने भी यह भावपूर्ण गीत सुना, तब डॉ. आंबेडकरजी ने जोशीले आवाज में कहा 'आप इसकी रेकॉर्ड बनाईये। I will be the first man to purchase the record.' कोलंबिया ग्रामोफोन की ओर से श्री. अंभईकरजी ने रेकॉर्ड तयार की थी। वैसे ही अंत्राली घराने की गायिका मोगुबाई कुर्डीकर की आवाज में भी ध्वनिमुद्रिका तैयार की गयी थी। यदि उन दोनोंमें से भी किसीको संसद में २४ नवंबर १९९२ को बुलाया जाता तो . . . ! ऐसी इच्छा भी उन्होंने व्यक्त की। इनके जैसा ही वंदे मातरम् में खोया-खोया व्यक्तित्व था - मास्टर कृष्णराव फुलंब्रीकरजी का।

कलानिधि कृष्णराव

आगे चलकर श्री.ग.वि.केतकरजी ने 'वंदे मातरम् कृष्णराव' उपाधि से सम्मानित किया था। कलानिधि कृष्णराव अपने प्रत्येक कार्यक्रम के अंत में वंदे मातरम् गाते थे। आकाशवाणी पर भी वंदे मातरम् गाने की उनकी तीव्र इच्छा थी। परंतु मुंबई आकाशवाणी निदेशक ने हां नही कहा। स्वाभिमान से समझौता असंभव1 अगस्त १९३८ के रविवार की रात को उनके संगीत का कार्यक्रम आकाशवाणी पर था। अंत में झिंझोटी राग में 'सावित्री' नाटक का गीत ' नटला सजना जणु ' यह गाया। गीत पूर्ण हुआ। निर्धारित समय पूर्ण होने को केवल एक मिनिट शेष था। उन्होंने वंदे मातरम् गाना प्रारंभ किया। स्टेशन निदेशक बुखारीजी ने ध्वनिक्षेपक ही बंद कर दिया।

"यह मेरा व्यक्तिगत नही अपितु राष्ट्रगीत का अपमान है। ऐसा घोर अपमान करनेवाले आकाशवाणी केन्द्र पर मै इसके पश्चात् कभी भी गाऊंगा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

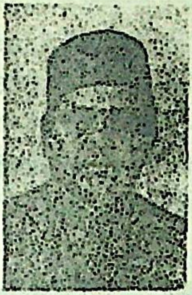

नही।" अपनी नाराजगी जताते हुए कृष्णरावजी ने कहा। वास्तव में आकाशवाणी के कार्यक्रम उनके लिये जीविका का साधन थे। परन्तु उन्होंने बहिष्कार किया। हजारों रुपयों से हाथ धोने पड़े, इतने वे स्वाभिमानी थे।

आकाशवाणी पर उन्होंने कार्यक्रम नही दियें परंतु इसके बारे में उनके प्रयास जारी थें। वे संगीतज्ञ, स्वरशास्त्रज्ञ थे। यह गीत सभी लोग गा सकें यह उनकी आंतरिक इच्छा थी। आत्यंतिक प्रयास कर उन्होने 'झिंझोटी' के कुछ स्वर चुने थें और उसे कहा था 'राष्ट्रीय राग'। प्रभात कंपनी के व्ही. शांतारामजी ने इसका ध्वनिमुद्रण भी १९३८ में किया था।

आखिर आप जीत गये

कृष्णरावजी ने संसद अध्यक्ष श्री. मावळंकरजी को ' वंदे मातरम् ' आकाशवाणी पर गाया जाने के संदर्भ में पत्र लिखा था। उनके आकाशवाणी कार्यक्रमों पर बहिष्कार का कारण भी लिखा था।

बॅरिस्टर नरिमनजी ने कौन्सिल में भी प्रश्न उठाया था कि वंदे मातरम् दबाया जा रहा है। समाचारपत्रों में भी इस विषय पर काफी चर्चा हुई। दादासाहब मावळंकरजी के कष्ट फलद्रूप हुएँ। सरदार पटेलजी ने ' वंदे मातरम् ' के बारे में आकाशवाणी की अडचनें दूर की। १९४७ युगादि के पावन पर्व पर मास्टर कृष्णरावजी ने ' वंदे मातरम् ' के गान से अपना कार्यक्रम प्रारंभ किया। नया वर्ष नयी प्रेरणा - नयी उमंग ले कर आया। नया वर्ष मां की वंदना से प्रारंभ हुआ। बुखारी उस समय भी आकाशवाणी केंद्र निदेशक थे। कृष्णरावजी को देखते ही बोलें, 'आखिर आप जीत ही गयें ! कृष्णरावजी ने खुशी में मिठाई बाटी।

कृष्णरावजी के प्रयास

भारत को स्वाधीनता मिलने के पश्चात् राष्ट्रगीत के बारे में चर्चा चल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रही थी। उसके स्वर के बारे में उस समय कृष्णरावजी खानदेश में 'सावरा' में अपने मित्र बालासाब सावदे के घर थें। उन्होंने कहा, 'कृष्णरावजी, आपने अभी कुछ प्रयास करने चाहियें'। कृष्णरावजी ने पं. नेहरुजी को तार भेजा - वंदे मातरम् के संदर्भ में दिल्ली आने का मनोदय व्यक्त किया। दूसरे ही दिन उन्हें अगले रविवार तक दिल्ली पहुँचने के लिये संदेश मिला। वे दिल्ली पहुँचें। वंदे मातरम् गाया। उन्होंने कहा, 'यह सेना के वाद्यवृंद के लिये ठीक है या नही, देखना होगा'।

जनरल सी. करिअप्पा पास ही थें। उन्होंने कहा 'मैं व्यवस्था करता हूँ। सूचना दे कर उन्होंने बँड प्रमुख श्री. लजपतसिंह के पास भेजा। बँड का प्रयोग सफल रहा। वंदे मातरम् की स्वरलिपि गुरखा टुकडी को दी गयी। गुरखा टुकडी ने डॉ. राजेन्द्रप्रसादजी के संमुख उसका वादन भी किया। ठीक ४५ साल पहले गुरखा टुकडी ने बरिसाल में वंदे मातरम् गाने वाले देशबांधवों पर लाठीचार्ज किया था। आज ही यह गीत बँड पर वजाने का उसके लिये प्रयास करने का सुअवसर मिला। मानो १९०६ के उस दुष्कर्म का क्षालन ही उन्होंने किया। बॅण्ड का वादन सुन कर बॅण्ड प्रमुख श्री. लजपतसिंह भी प्रसन्न हुएँ। उन्होंने उस गीत को मान्यता दी।

'दस दिन कृष्णरावजी दिल्ली में थे। सर्वश्री राजगोपालचारी, महावीर त्यागीजी, सरदार पटेल, सत्यनारायण सिंह आदि अनेकों को सुनाया। वे डॉ. राजेंद्रप्रसादजी के पास गये - कृष्णरावजी ने बताया - 'This is our national anthem and the voice that sings it should be melodious and dignified. It should arise reverence and devotion', उनके गीत सुनाने पर वे बोलें 'अतीव सुंदर' 'इतना सुचारू रुप कहाँ और कैसे दिया आपने?'

वहाँ एक बंगाली बाबू थें - बोस - वे कहने लगे 'बंगाली संगीत में बहुत आलाप होते हैं। अतः वह समूहगान के लिये कठिन होता है, आपने उसे अतीव सरल बना दिया है।'

निश्चिंत मन से कृष्णरावजी पूना लौटें। कुछ दिन बाद बता चला कि ब्रिटिश बॅन्ड तज्ञों की अनुमति के बिना वंदे मातरम् को मान्यता नही मिलेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और मिलिटरी बॅण्ड की रेकॉर्ड भी नही बनी है। फिरसे दौडते भागते वे दिल्ली पहुँचें। श्री. महावीरजी उन्हें राजेंद्रबाबू के पास ले गये। कृष्णरावजी ने रेकॉर्डिंग की व्यवस्था करने की विनंती की।

'यहाँ कुछ कठिनाई है, आप बंबई में नही कर सकतें क्या?' डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी।

'क्यों नही? आप बंबई को टेलिग्राम दीजिए' फुलंब्रीकरजी ने कहा।

वे वहाँसे निकलें। मन में प्रश्नों का तूफान था। उनके और जनता के भी! "क्या स्वाधीन भारत का राष्ट्रगीत हम स्वयं निश्चित नही कर सकतें? उसके लिये ब्रिटिश बॅण्ड कमांडर की अनुमति की क्या आवश्यकता? या राष्ट्रगीत का प्रश्न और कुछ दिन आगे ढकेलने के लिये यह एक तरकीब थी।"

गार्डनर की सहाय्यता

कृष्णरावजी अदम्य आकांक्षा रख कर बंबई पहुँचें। वहाँ उन्हें मि. गार्डनर मिले। गार्डनर ने कहा, 'मुझे दस दिन की छुट्टी मिलेगी तो मैं अवश्य मदद करूंगा।'

फुलंब्रीकरजी ने उनकी छुट्टी मंजूर करवा ली। दोनोंका स्वराभ्यास प्रारंभ हुआ। वंदे मातरम् बॅण्ड के लिये सिध्द हुआ। गार्डनर खुश थे। निवृत्ति के पश्चात् वे लंडन गये। परंतु वहाँ भी वंदे मातरम् की मोहिनी उनपर कायम थी। वे लिखते हैं 'Tried it on the band, here also it is beautiful harmonious! There is a dignity in Vande Mataram, which is missing in Jana Mana Gana'.

कृष्णरावजी संसद में

गार्डनर के साथ कृष्णरावजी ब्रिटिश बॅण्ड की कॅसेट बनायी। और नेहरुजी को तार किया। मिलने का समय निश्चित हुआ। परंतु पं. नेहरुजी के व्यस्त कार्यक्रमों में उनसे मिलना कठिन हुआ। श्री. स.का. पाटीलजी के प्रयास से वे रात ८.३० बजे उनके निवास स्थान पर मिल सकें। वहाँ शेख अब्दुल्ला और बक्षी गुलाम अहमद थे। कृष्णरावजी ने अपने प्रयास से प्राप्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यशस्विता उन्हें निवेदन की।

सत्यनारायण सिंहजी ने उन्हें दूसरे दिन सायं ५.३० बजे संसद में आने के लिये कहा। संविधान समिति के समक्ष प्रात्याक्षिक हो सकेगा ऐसा भी बताया।

कृष्णरावजी संसदभवन गये और बताया, 'मैं राजनीतिज्ञ नही हूँ। मै न वक्ता हूँ, न लेखक। मैं एक संगीत निर्देशक हूँ। अतः वंदे मातरम् के राग के बारे में बताऊंगा।'

उन्होंने संसद में वंदे मातरम् गाया। सब बडे प्रसन्न हुएँ। अनेकों ने उनका अभिनंदन किया।

श्री. नेहरुजी, रंगा और कुछ लोगों ने जन गण मन के बारे में उनकी राय पूछी। कृष्णरावजी ने गार्डनर का अभिमत बताया। एक बंगाली महानुभाव ने पूछा, 'सच अंग्रेज मॅन ने ऐसा कहा'?

'हाँ', कृष्णरावजी ने कहा। आगे चल कर नेहरुजी को उन्होंने बताया। 'मेरा अभिमत आपको पसंद नही आयेगा। मेरी इच्छा है वंदे मातरम् राष्ट्रगीत बने। रही बात वंदे मातरम् और जनगणमन की। वंदे मातरम् में माँ की भक्ति भावना है जब कि जनगणमन में पिता की। पिता से माँ की भावना अधिक श्रेष्ठ है।' सबब लोग मुक्त कंठ से हंस पड़ें।

संसद में कृष्णरावजी ने गार्डनर के अभिमत के पत्रक बांटे। पं. नेहरुजी निकट जाकर उनके कंधे पर हाथ रखते हुए बोलें, 'आपने तो कमाल कर दिया है।'

'हम वंदे मातरम् को राष्ट्रगीत का दर्जा देंगें' बापुसाहेब गुप्ते बोंले - 'हाँ, समान दर्जा देंगें' - पं. नेहरुजी ने कहा। 'संसद तुम्हारे गीत से मंत्रमुग्ध हो गयीं'। श्री. काकासाहेब गाडगील ने कहा।

उनके इन प्रयासों की पूनावासियों ने प्रशंसा की। एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया। इसी समारोह में 'वंदे मातरम् कृष्णराव' इस उपाधि से सम्मानित करते हुए ग.वि.केतकरजी ने इच्छा व्यक्त की कि वे वंदे मातरम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत वर्ग ले। वृंदगायन एवं मौखिक गायन के भी।

भावगद्‌गद्‌ कृष्णरावजी ने अपने भाषण में युगादि से वर्ग लेने का आश्वासन दिया।

श्री. दिलीपकुमार रॉय

श्री. दिलीपकुमार रॉय भी एक और महानुभाव है, जिनको वंदे मातरम्‌ राष्ट्रगीत हो ऐसी आत्यंतिक इच्छा थी। और उन्होंने अनेक प्रयास भी कियें। पत्रव्यवहार द्वारा उन्होंने बापूजी के पास उनके समक्ष वंदे मातरम्‌ गाने का अपना मनोदय व्यक्त किया था। २८ अक्टुबर १९४७ को वे प्रार्थना के समय महात्मा गांधीजी से मिलने गयें। परंतु देर हुई थी। अतः दूसरे दिन २९ अक्टूबर को बिर्लाभवन में जा कर उन्होंने बापूजी को वंदे मातरम्‌ सुनाया। म. गांधीजी की इच्छानुसार उन्होंने 'हिंदुस्थान हमारा' यह भी गीत गाया। प्रार्थना के समय गांधीजी ने दिलीपजी का परिचय दिया। 'आज वंदे मातरम्‌ और हिंदुस्थान हमारा गीत इन्होंने ही गाया है। इनके द्वारा बनायी गयी वंदे मातरम्‌ की धून राष्ट्रगीत के लिये बहुत अच्छी है।'

दिलीपकुमारजी फूले ने समाये। उनके मन में कुछ आशाएँ जगी। उमंगे पनपी। परंतु सब चिकने घड़े पर पानी। 'वंदे मातरम्‌' राष्ट्रगीत नही बन पाया - तुष्टीकरण नीति के कारण!

राजनीतिज्ञों ने इस गीत को भलेही राष्ट्रगीत का दर्जा नकारा परंतु जनमानस इस गीत से उद्वेलित होता आ रहा है। १९४२ की क्रांति पर मराठी में एक चित्रपट निकला 'वंदेमातरम्‌' इसमें मराठी के विख्यात कवि ग.दि.माडगूळकरजी ने गीत लिखा -

वेदमंत्राहूनी अम्हां वंद्य वंदे मातरम्‌

उसी का अनुवाद है - 'वेदमंत्रो से हमें है वंद्य वंदे मातरम्‌'। मानों जन हृदयसागर का मंथन कर यह शब्द नवनीत की भांति प्रगट हुएँ।

आज हमारी नभोवाणी, दूरदर्शन की प्रभात वंदे मातरम्‌ के सुहावने, लुभावने स्वरोंसे प्रारंभ होती है। पन्नालालजी ने ढाले हुए सारंग राग में गाया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन सभी संगीतज्ञों ने एक बात निश्चित बतायी कि संगीतज्ञ भी राष्ट्र की ईकाई है। और अपने दायित्व का पूरा भान उन्हें है। संगीत यह केवल मनोरंजन के लिये नहीं है अपितु माँ की पूजा का एक साधन है। भले ही संगीत उनके उपजीविका का साधन हो। परंतु जब राष्ट्रीयता का प्रश्न आया तब उन्होंने समझौता नहीं किया। अध्यक्ष को उनकी खरीखोटी सुनाने में घबरायें नहीं। बहिष्कार डाल कर भूखे रहना पसंद किया। और सिध्द कर दिखाया कि सिंह कभी तृण नहीं खाता। संगीत कला है। मन को बहलानेवाली कला है। परंतु मन की दृढ़ता और देश-भक्ति की कठोरता भी उतना ही महत्त्व की है।

****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विरोध के सुर

वंदे मातरम् ! एक लोकविलक्षण गीत! गंगाजल सा पवित्र निर्मल मानो प्रणवोच्चार। १८९६ से इसने अपनी छाप छोड़ना प्रारंभ किया। वह देश के कोने-कोने में फैल गया। १९०५ से १९१४ तक का मानो वंदे मातरम् की दृष्टि से सुवर्णयुग था। वह अपनी वैभव के परमशिखर पर था। इस भूमि का कंकड, पत्थर कणकण बोल रहा था 'वंदे मातरम्'। समुद्रपार अनेक देशों में भी इस गीत ने काफी हलचल मचायी थी।

संघर्ष भरा इतिहास

१८७५ से १९९४ तक लगभग ११९ वर्षों का इस गीत का इतिहास है। और वह संघर्षभरा इतिहास है। अनेकोनें यह गीत गाया और उसके कारण बेत भी खायें, वे कारागृह में भुने गयें, अनेकोंको दर-दर भटकना पडा, इसी गीत के गायन के कारण उन्हें खाने के लाले पड़ गयें। उन्हें जीवन-यापन के लिये संघर्ष करना पड़ा। स्वयं यह गीत अनेकोंका कोपभाजन बना। निरंतर विवादों के घेरे में रहा। प्रथमतः अंग्रेज पश्चात् मुस्लिम और हिंदुओं की तुष्टीकरण नीति का यह बलि रहा - ब्रिटिशों ने उसके उच्चारण तक को मनाई की - मुस्लिम इसे नष्ट करने के लिये प्रयत्नशील रहें और हिंदुओं नें उसके टुकड़े-टुकड़े कियें। ऐसा त्रिकोणीय संघर्ष करते हुए भी जनमानस पर प्रत्येक दशक में इसका गहरा प्रभाव रहा है। और अधिक-अधिक गहरा ही हो रहा है।

इस गीत का जन्म प्रांत बंगाल आज साम्यवादियों के चंगुल में फँसा अवश्य हैं। उनके कार्यक्रम हड़ताल, आज भी एक घोष के बिना पूर्ण एवं प्रभावकारी नही होतें। हड़ताल के समय हर दो चार नारों के पश्चात् 'वंदे मातरम्' घोष होता ही है। क्यों कि वंदे मातरम् ये केवल शब्द नही है। यह एक चिरंतन भाव है। जब तक माँ, पुत्र ये शब्द कायम है, यह वत्सल भाव विश्व में अस्तित्व में है तब तक ये शब्द भी गुंजायमान होते रहेंगें, यह वास्तविकता है। अपने देश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को मातृभूमि कहना - वैसे ही जीवन में व्यवहार करना यह मनुष्य की एक उदात्त प्रेरणा है। जब वह मिट्टी का कण न रह कर चैतन्यमयी, प्राणदायी, जीवनरक्षिणी माँ के रुप में आविर्भूत होती है, तब संपूर्ण हलचलों का ही संबल बनती है यह भावना आंदोलन समय में अत्युत्कटता से क्रांतिकारको में ठूंस-ठूंस कर भरी हुई थी। उसी समय उसका गला घोटनेवाली एक विषैली प्रक्रिया ब्रिटिशों ने प्रारंभ की थी।

अंग्रेजों की पैंतरेबाजी

१९०५ की वंगभंग योजना यह कुटिल राजनीति थी। सर हेन्री कॉटन नामक अंग्रेजी अधिकारी लिखता है - "इस कार्य का उद्देश्य प्रांत में व्याप्त एकता और संगठन की भावनाओं को चूर-चूर करना है। इस योजना के मूल में कोई प्रशासनिक कारण नही है। यह तो लॉर्ड कर्जन की इस नीति का अंग है कि देशभक्ति के ज्वार को पीछे धकेला जाये और उसकी राजनीतिक शाखा प्रशाखाओं को काट डाला जाये।" वंग भंग योजना की प्रतिक्रिया तीव्र हुई - प्रतिरोध का लावा फूटा। ढाका के नवाब ने उसे 'शैतानी सौदा' कहा। थोडे ही दिनों में नवाब सलीमुल्ला को नाम मात्र व्यापार एक लाख पौण्ड की बडी धनराशि का ऋण दे कर अंग्रेजों ने अपनी ओर मोड़ लिया। अनेक मुसलमानों ने आंदोलन में साथ दिया। उससे भी कई अधिक मात्रा में मुसलमान तटस्थ रहें। कोमीला आदि स्थानों पर दंगे भड़क उठें। अंग्रेजों की यह पहली चाल अयशस्वी रही। १९०६ में उन्होंने एक नया मोर्चा खोला। दिनांक १० अक्तूबर को 'हिज हायनेस आगाखां' के नेतृत्व में सिमला में एक प्रतिनिधि मंडल व्हाईसरॉय को मिलने गया। वह केवल एक आज्ञा का अनुपालन मात्र था। व्हॉईसरॉय ने प्रतिनिधि पक्ष को, सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा - "जसा कि मैं समझता हूं आपके ज्ञापन में कहा गया है कि प्रतिनिधित्व के हर क्षेत्र में मुस्लिम समुदाय को एक समुदाय के रूप में प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। आपने कहा है कि अनेक अवस्थाओं में निर्वाचक निकायों से, जिस रूप में अब वे गठित हैं, यह आशा नहीं कि जा सकती कि वे एक मुस्लिम प्रत्याशी को चुन कर भेजेंगे और यदि संयोगवश उन्होंने ऐसा किया भी तो यह तभी हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकेगा जब ऐसे प्रत्याशी के विचारों की बलि उस बहुमत के विचारों के लिये दी जाये जो वह अपने समुदाय का विरोधी हो जायेगा और उसका प्रतिनिधित्व वह किसी भी प्रकार नही कर पायेगा। मैं पूर्णतया सहमत हूं..... आपकी भांति मुझे भी पक्का विश्वास है कि भारत में कोई भी ऐसा निर्वाचन-प्रतिनिधित्व विफलता के गर्त में धंस जायेगा जो व्यक्तिगत मताधिकार देने की व्यवस्था करें और जिसमें इस महाद्वीप के लोगों के समुदायों की मान्यताओं और परम्पराओं का ध्यान न रखा जाय।"

लार्ड मिंटो ने बगीचे में प्रीतिभोज भी आयोजित किया था। उनकी दृष्टि में यह दिन अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। भारतीय इतिहास में एक नये युग का आरंभ था। श्रीमती मिंटो लिखती है - 'आज एक महान घटना घटी है। अर्थात् इतना महान् राजनीतिज्ञतापूर्ण कृत्य हुआ है कि उसका भारत और भारत के इतिहास पर अनेक वर्षों तक प्रभाव पड़ता रहेगा। इतना तो अवश्य होगा कि अब ६ करोड़ २० लाख लोग राजद्रोही वर्ग में शामिल नही होंगे।

मुस्लिम स्वयं को साम्राज्य संरक्षक मानते थें तथा हम हिंदुओं से अलग हैं यह धारणा उनके नेता गण बनाते थें। किंबहुना उनकी यह धारणा को मजबूत बनाते रहना यहीं उनका कार्य था। १९०८ में लीग का दूसरा अधिवेशन हुआ उसके अध्यक्ष अली इमाम के भाषण के कुछ अंश इस बात की पुष्टि करते हैं। हिंदुस्थान के सबसे प्रगत बंगाल में ' वंदे मातरम् ' इस सांप्रदायिक घोष को राष्ट्रीय घोष माना जाता है और सांप्रदायिक रक्षाबंधन को जब राष्ट्रीय पर्व का स्वरूप प्राप्त होता है तब अत्यधिक निराश होता हूँ। राष्ट्रवाद की आड़ में हिंदुराष्ट्रवाद सिखाया जा रहा है।"

कलकत्ता तथा पूना के भारतीय राष्ट्रवाद के शिल्पकारों को मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या हिंदुस्थान के मुस्लिम वंदे मातरम् और शिवजयंत्युत्सव का स्वीकार करें ऐसी उनकी अपेक्षा है?"

इससे यह स्पष्ट होता है की, जो हमारे राष्ट्रीय मानबिंदु थे, वह केवल मानबिंदु नही तो जो हिंदुओ के लिये पवित्र, आनंददायी है वह मुस्लिमों के लिये अपवित्र और क्लेशदायक! फिर भी दोनों साथ रहें - कैसी विसंगति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है यह?' यही बात राजनीति के क्षेत्र में भी है। कांग्रेस के सौ वर्ष में मन्मथनाथ गुप्त लिखते हैं - लीग का राजनैतिक रुख इससे स्पष्ट हो जायगा कि एक प्रस्ताव में वंगभंग को मुसलमानों के हक् में अच्छा बताया और यह कहा गया कि जो लोग इसके विरुध्द आवाज उठा रहे हैं वे मुसलमानों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। भारतवर्ष कें एक तरह से जन-आंदोलन का सूत्रपात ही वंग आंदोलन से होता है। इसके उद्देश में निश्चित रूप से कोई ऐसी बात नही थी जो मुसलमानों के विरुध्द थी। और लीग ने अपने जीवन का सूत्रपात ही इस आंदोलन के विरोध से किया। १९०८ में लीग ने प्रस्ताव पारित किया कि - कांग्रेस का वंग-भंग विरोधी प्रस्ताव स्वीकृत होने योग्य नहीं।

माँ की संतानों ने फिर भी वंग-भंग आंदोलन अत्यधिक प्रबल किया। एडी-चोटी एक कर प्रयास कियें जिसके कारण अंग्रेजों को अपनी योजना निरस्त करनी पड़ी। वंग-भंग को निरस्त कर दिये जाने के गुस्से में नवाब सलीमुल्ला ने राजनीति से संन्यास लिया - मुस्लिमों की मानसिकता इसीसे स्पष्ट होती है। प्रथम विश्व महायुध्द में तुर्की, जर्मन शिबिर में शामिल हुएँ तो उन्हें अंग्रेजों ने छिन्न-भिन्न करने के उपाय आरंभ कियें। वंग-भंग निरस्त करना और तुर्की विरोधी कार्यों के कारण मुसलमानों के मन में अंग्रेजों के प्रति रोष और घृणा की बाढ सी आ गयी। अंग्रेजों ने मुसलमानों को अपने पक्ष में करने का यह सुअवसर माना। और तत्कालीन कांग्रेस नेताओं ने लीग के अधिवेशन में उपस्थित रहना और भाषण देना प्रारंभ किया। जिससे निष्क्रिय और निर्बल ऐसे लीग की छबि उभरने में काफी योगदान प्राप्त हुआ। मुस्लिम लीग का मनोबल और लोकप्रियता बढ़ी। अखिल भारतीय स्तर पर वही मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने वाला एकमात्र संगठन बना।

लखनौ समझौता

सन् १९१६ में कांग्रेस ने एक नयी शैली अपनायी। मोर्ले मिंटो सुधार के बदले में आपस में निश्चित सूत्र के आधार पर मुस्लिम लीग से सीधे ही एक समझौता करने की योजना बनायी। कांग्रेस और लीग दोनों के अधिवेशन एक साथ लखनौ में हुएँ। 'लखनौ समझौता' भारत के इतिहास में बहुत मायने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रखता है। इस समझौते ने मुसलमानों को प्रांतीय विधानसभाओं में १९०९ के सुधारों से भी अधिक प्रतिनिधित्व दिया। श्री.हो.वे.शेषाद्रिजी 'और देश बंट गया' में लिखते है - लखनौ समझौते के कारण अंग्रेजों और कांग्रेस में इस बात कि होड़ लग गयी कि कौन मुसलमानों को अपने पक्ष में कर सकता है। यदि अंग्रेज एक डग भरते थे तो कांग्रेस मुसलमानों को अधिक सुविधाएँ दे कर उनसे आगे निकलने का प्रयत्न करती थी। इस आत्मघाती होड़ के पीछे अंग्रेजों का हाथ था। प्रकट में तो अंग्रेज कांग्रेस से कहते थे कि संयुक्त हिंदु-मुस्लिम समझौते का प्रस्ताव प्रस्तुत करो, और अलग से मुसलमानों से चुपचाप कहते थे कि हिंदुओं का साथ न दो। इससे कांग्रेस के मन मे मुसलमानों को और अधिक छूट देने की लालसा उमड़ती थी। मुसलमान उन्हें तो झपट कर डकार कर जाते थे और फिर उनसे भी अधिक की मांग करने लगते थें। यह क्रम निरंतर चलता रहा।

धीरे-धीरे जन आंदोलन का सूत्र संचालन नरमपंथियों के हाथ में गया। खिलाफत आंदोलन के समय विश्व के अन्य मुस्लिमों से अधिक साथ भारतीय जनता ने दिया। ' वंदे मातरम् ' और 'अल्ला हो अकबर' के नारे साथ-साथ लगते रहें। १९२२ के आसपास ही महंमद इक्बाल के 'सारे जहाँसे अच्छा, हिंदोस्ताँ हमारा' इस गीत को राष्ट्रीय सहगान के रूप में स्वीकारा गया। आज भी यह गीत हम बड़ी चाँवसे गाते है। परंतु इक्बाल का यह प्रेम क्षणकालिक रहा। जैसे वे इस्लाम का गहन अध्ययन कर के जर्मनी से लौटे - वे गाने लगे -

'मुस्लिम है हम! वतन है सारा जहाँ हमारा।'

जब हिंदोस्ताँ ही मन में नही रहा तो भूमि को माँ मानने का संस्कार धूसरित होता गया, सहस्त्रों योजन दूर गया तो क्या आश्चर्य? इकबाल तो मुस्लिम समाज के प्रतिनिधि मात्र थे। दिन-प्रतिदिन भारत से 'संतान' यह रिश्ता नकारना, अलग से चूल्हा करने का भाव मुस्लिमों में पनपता रहा।

काकिनाडा संमेलन

इसका प्रत्यय सबसे पहले हमने किया १९२३ में। काकिनाड़ा में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कांग्रेस का अधिवेशन था। बडी धूमधाम से तैयारी हो रही थी। अध्यक्ष थे महंमद अलि। उस अधिवेशन के प्रत्यक्ष दर्शी [An Eye witness इस शीर्षक के अंतर्गत १३-१-१९२४] नें लिखा हुआ अभिप्राय अपने आपमें बड़ा रोचक है।

काफी दिनों से कांग्रेस के खेमें में मुस्लिमों का दबाव बढ़ रहा था। फिर भी वे इस छोर तक खीचेंगे ऐसी किसी की अपेक्षा नही थी। इस वर्ष अध्यक्ष इस्लाम मतानुयायी थे। कांग्रेस के शरीर में मुस्लिम स्क्रू कसने की नयी खोज हुई।

नित्यक्रमानुसार ख्यातनाम मराठी गायक पं. विष्णुबुवा जैसेही 'वंदे-मातरम्' गाने के लिये मंच पर उपस्थित हुएँ अध्यक्षजी ने उन्हें रोका। परंतु पंडितजी ने मुँहतोड़ जवाब दिया कि, 'कांग्रेस मंच ना तो खिलाफत संमेलन का मंच है ना तो मस्जिद - जिसके कारण गीत पर रोक लगें।' अध्यक्ष को उन्होंने फिरसे याद दिलायी कुछ क्षण पूर्व वे स्वयं - संगीत वाद्य के निनाद में अधिवेशन मंच पर आये थे। उस निर्भीक उत्तर से सारा मंड़प आश्चर्य-भय से थर्रा गया। पंडित जी ने नित्य जैसे अपने दमदार मधुर आवाज में 'वंदे मातरम्' गाया।

जो काम तत्कालीन गणमान्य नेता न कर सकें वह पंडित जी ने ढाढस से कर दिखाया। वे प्रशंसा के पात्र रहें।

सन १९२३ के पश्चात् कांग्रेस के लिये मुसलमानों को अपने पक्ष में करने के मार्ग में 'वंदे मातरम्' काँटे जैसा जुभने लगा। १९०६ में अंग्रेजों नें लाठियाँ घुमायी उस समय वड़ी शूरता वीरता से सीना तानकर माँ की संतानों ने उन्हें फुलों की वर्षा जैसा झेला। फाँसी की ड़ोरी को हार मानां। वही रक्तासिंचित 'वंदे मातरम्' का इतिहास क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थ की वेदी पर ठुकरा दिया गया। 'स्व' में जब 'आ' की मात्रा लगती है तो हर चीज के अन्वयार्थ ही बदलने लगते है।

मुख्य 'भाव' कारण

प्रत्येक वस्तु के बारे में हर मनुष्य का एक भाव होता है। वही आगें उसके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृति में परिणत होता है। पीलिया हुए हर व्यक्ति को सभी चीजें पीली दिखने लगती है। नीला चष्मा लगाओ तो सृष्टि में 'नीलिमा' का ही अनुभव आता है। चीज वहीं परंतु जिस रंग का चष्मा लगाओ उसी रंग की दिखती है। अलग चष्मा लगाते ही लगता है रंग बदल गया। वैसे ही 'भाव' के चष्मे पर सभी निर्भर होता है। 'वंदे मातरम्' गीत वहीं! परंतु हरेक के भाव अलग! जब भाव था तब मातृस्तवन करने में मुस्लिम नेताओं को दिल्ली की सार्वजनिक सभा में जब श्री शंकरन नायर (जो बाद में व्हाईसरॉय के एक्झिक्युटिव्ह सदस्य बनें) गीत के सम्मान में खड़े नहीं हुएँ। बैठे रहें तब जिन्ना ने इसके विरुध्द शिकायत की - 'शारीरिक कष्ट के कारण मैं खडा नही हो सका' - ऐसा स्पष्टीकरण मिलने के पश्चात् वे थोडे शांत हुएँ। जिन्ना वे ही थे - परंतु जब 'संतान' का भाव 'मैं मुस्लिम' में परिवर्तित हुआ तो सब राष्ट्रीय बातों में उन्हें धार्मिक दृष्टि से दोष दिखाई देने लगे - शुध्द सात्विक गीत उन्हें द्वेषपूर्ण लगने लगा। जिन्ना कहने लगे - 'निश्चित रूप से यह गीत इस्लाम - विरोधी है - मूर्तिपूजा की प्रेरणा देता है। और निश्चय ही भारत में सच्चे राष्ट्रवाद की जड़ों पर कुठाराघात करता है। इस तरह सें वंदे मातरम् धार्मिक भावनाओं पर कुठाराघात एवं अत्याचार के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। धर्म का नाम लेते ही मुसलमान राष्ट्रीय दृष्टि खो बैठें। और वंदेमातरम् गीत दुत्कारा जाने लगा। इसके छूटपूट तो कई उदाहरण मिलते हैं परंतु अत्यधिक उद्वेगजनक घटना रहीं मद्रास की।

'मद्रास विधिमंडल में वंदे मातरम्'

१९३७ के निर्वाचनों में सात प्रांतों में कांग्रेस के मंत्रिमंडल बनें। मुस्लिम बहुसंख्यक प्रान्तों में भी मुसलमानों को बहुमत प्राप्त नही हुआ। इससे वे चीढ़ गये।

कांग्रेस के मंत्रिमंडल जहाँ थे वहां 'वंदे मातरम्' उत्साह से गाया जाता था। उसमें मद्रास अग्रेसर था। वहां मुख्यमंत्री थे राजाजी और अध्यक्ष थे श्री बुलुसु सांब मूर्ति। १५ जुलाई १९३७ को वे अध्यक्ष बनें। उनके आदेशानुसार श्रीमती लक्ष्मीशंकर अय्यर ने 'वंदे मातरम्' गाया। अगले दिन से विधानसभा के सत्र का आरंभ 'वंदे मातरम्' गान से होने लगा। दिनांक २२ सितम्बर तक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह क्रम चलता रहा। पश्चात् मुस्लिम लीग के सदस्यों नें इस गीत के विरोध में युध्द छेड़ा। २३ सितम्बर को पता नही, मि. शेख लालाजान के सिर में क्या भनक उठी, उन्होंने 'यह इस्लाम के विरोध में युध्दघोष हैं' कह कर पॉईंट* ऑफ ऑर्डर उपस्थित कर बहिर्गमन किया। राष्ट्रगीत समाप्त होने पर फिर लौट आयें। अनुशासनभंग के लिये अध्यक्ष से माफी अवश्य मांगी परंतु राष्ट्रगीत के समय बहिर्गमन करने का क्रम भी जारी रखा। राजाजी ने उनके बहिर्गमनका जो स्पष्टीकरण दिया वह उद्वेगजनक है।O

३० सितम्बर १९३७ को फिरसे यही प्रश्न उन्होंने उपस्थित किया। १ अक्तुबर को श्री सांबमुर्तिजी ने योगी अरविंद कृत अर्थ सभी को समझाया। 'वंदे मातरम्' इतिहास के तो सभी प्रत्यक्ष दर्शी थे ही। फिर भी मुस्लिम अपनी भूमिका पर अड़िग थे। दिसम्बर के अधिवेशन में मुसलमान सदस्यों ने हडताल की । सांबमुर्तिजी व्यथित हुएँ।

'वंदे मातरम् के साथ ईशस्तवन और कुरान भी'

२१ दिसम्बर को उन्होंने 'वंदे मातरम्' गायन के पूर्व महंमद जी ने कुरान के कुछ अंश पढ़े 'झुकनेवाले झुकता हैं' यह देख कर मुस्लिमों की हरकतें तेज होती गयीं। २७ जनवरी १९३८ कों राष्ट्रगीत गायन के समय मि. अब्दुल हमीदखान आदि सभागृह छोड़ कर चले गयें। सर ए.टी. पन्नीरसेल्वम आदि इसाई सभासदों ने भी उनका अनुसरण किया। सांबमूर्तिजी की बेचैनी बढ़ गयी। उनकें संकेतानुसार (हो सकता है पूर्वनियोजित हो) एक अंग्रेजी कविता पढ़ी गयी। शाम को सत्रसमापन के समय उन्होंने अपनी व्यथा को शब्दरूप दियां। 'वंदे मातरम्' इस गीत की ओर सांप्रदायिकता के बजाय व्यापक दृष्टि से देखने के लिये आवाहन किया - 'यह गीत सुनने की इच्छा नही वे लोग गीत होने तक सभागृह के बाहर रहेंगे। गीत समाप्ति के पश्चात् स्थान ग्रहण करेंगे। गीत शुरू होते ही उनका सभात्याग करना उचित नही लगता इत्यादि -' ●

---

* In Fact it is a Warory against Islam and I am Going to Prove by records that it is so

O, ● परिशिष्ट देखिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरे दिन अर्थात् २८ जनवरी १९३८ शुक्रवार को विधिमंडल में कुराण के कुछ अंशों का पठन हुआ। अंग्रेजी में प्रार्थना हुई। पश्चात् 'वंदे मातरम्' हुआ। क्या विधिमंडल में ऐसा सार्वजनिक धर्मप्रार्थना स्थल था? अपने मन से कुछ ना कुछ गाते रहें। सांबमूर्तिजी ने अपने नाम के ही अनुसार अपना भोलापन दिखाया। परंतु राजनीति में यह बहुत घातक सिध्द होता है। यह घटना राष्ट्र के लिये . . .

नेता ने अपनी सुधीर वृत्ति छोड़ देने पर ऐसीही अनिष्ट परंपराएँ प्रारंभ होती है।

१ मार्च १९३८ को राजाजी का भाषण हुआ। आपस में सामंजस्य रहें इसलिये उन्होंने 'वंदेमातरम्' को हमेशा के लिये विधानसभा से विदाई दी।◊

१९३७ में कलकत्ता में मुस्लिम लीग के अधिवेशन में बंगाल के अखेरामखान ने प्रस्ताव रखा कीं, वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गोत बनाने की कांग्रेस की साजिश स्पष्टतया मुसलमानों के विरोध में और देश के विकास में बाधा लानेवाली है। यह प्रस्ताव पारित हुआ। और मुसलमानों ने वंदे मातरम् के विरुध्द प्रचार शुरू किया।

बंगाल में वंदे मातरम् को नष्ट करने के काफी प्रयास हुएँ। राष्ट्रगीत 'आनंदमठ' में प्रसिद्ध हुआ था। अतः उसे 'अग्निदिव्य करना पड़ा। कलकत्ता विद्यापीठ के बोधचिन्ह 'कमल' और 'श्रीं' भी उनके क्रोध से बच नही पायें।

२९ से ३१ अक्तुबर १९३७ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी में सर्वप्रथम राष्ट्रीय गीत के बारे में तीव्र मतभेद उत्पन्न हुएँ।

आज तक कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में वंदे मातरम् गीत गाया जाता था। नागपूर अधिवेशन में तो मंच की पार्श्वसज्जा पर भारत का मानचित्र और वंदे मातरम् मंत्र अंकित था। परंतु मुस्लिम उसे नकारते थें। पूर्वी बंगाल के विद्यालयीन छात्रों को तो घोर आपत्ति थी। और कभी कभी अप्रिय घटना हो जाती थी। मुस्लिम लीग ने वंदे मातरम् के स्थान पर 'सारे जहाँ से अच्छा' और विद्यालयों में 'मुझको है तेरी जुस्तजू तेरी मुझको तलाश है' ये गीत प्रारंभ किये।

◊ परिशिष्ट देखिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुस्लिम सहयोग एवम् स्नेह के लिये जो कांग्रेस जन लालायित थें उनके भी वंदे मातरम् विषयक विचार बदलने लगे। उन्होंने अल्पसंख्यकों के विषय में अपनी नीति निर्धारित की। हिंदु-मुस्लिम एकता के बिना अंग्रेज सत्ता नही सौंपेंगे। यदि उस एकता को प्राप्त करना है तो किसीभी मूल्य पर मुसलमानों को अप्रसन्न नही होने देना चाहिये। किसीभी कारण से उनकी भावनाओं को ठेंस नही लगनी चाहिये। अतः निश्चय किया की वंदे मातरम् के उन अंशों को निकाल दिया जाय जिनसे लीग के कथनानुसार मुस्लिम भावनाओं को ठेंस पहुँच सकती है। वंदे मातरम् के मातृभूमि का भौतिक चित्रण है, ऐसे प्रथम दो छंद रखे गयें और हमारी राष्ट्रीयता तथा स्वाधीनता संघर्ष का आत्मा ऐसे अनुवर्ती चरण निकाल दिये गयें।

यह भी प्रस्ताव पारित किया था। जब भी राष्ट्रीय सार्वजनिक सभाओं में वंदे मातरम् गाया जाय तो उसके पहले ही दो पद गायें जाय और संयोजकों को दूसरा कोई गीत आपत्तिजनक न हो तो इसके साथ गाने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी।*

कांग्रेस कमिटी ने - मौलाना अबुल कलम आझाद, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, नरेंद्र देव की उपसमिति गठित की, जिसे रविंद्रनाथजी से परामर्श कर राष्ट्रीय गीत के रूप में इसकी उपयुक्तता पर निर्णय देना था।

कैसा दुर्भाग्य है हमारा तथा इस गीत का! उस महान् अग्नि जैसे दैदिप्यमान् गीत की कसौटी पर मुसलमानों को परखने के स्थान पर हमने उनको

---

* In 1937, the Congress Working Committee appointed a subcommittee consisting of Maulana Abul Kalam Azad, Jawaharlal Nehru, Subhas Chandra Bose and Acharya Narendra Deva to examine, in consultation with Rabindranath Tagore, the suitability of the song as national anthem. Earlier it had adopted this resolution : "Taking all things into consideration, therefore, the Committee recommends that whenever the Vande Mataram is sung at national gatherings, only the first two stanzas should be sung, with perfect freedom to the organisers to sing any other song of an unobjectionable character, in addition to, or in place of, the Vande Mataram. Song."

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कसौटी का निकष माना। और वंदे-मातरम् की परीक्षा ली। एक जुलाई १९३९ के 'हरिजन' में म. गांधी जी लिखते हैं की, 'मुझे ऐसे कभी भी नही लगा कि यह हिंदू गीत है और हिंदुओं के लिये बना हैं। परंतु आज हम दुर्दिनों के चक्कर में हैं। हमारे सामने जो शुध्द सुवर्ण है आज अशुध्द धातू मानने लगे हैं। ऐसे समय में शुध्द सुवर्ण अशुध्द रूप में बेचने में कोई चातुर्य नही है।' O

चौदह अधिक छः

१९३८ की १७ और १८ अप्रैल के मुस्लिम लीग के अधिवेशन में जिन्ना ने विभिन्न विधानसभाओं में गाये जाने वाले वंदे मातरम् गीत का विरोध किया। इसी माह में वे गांधीजी से मिलें, तीन घंटे तक चर्चा हुई परंतु वह निष्फल रही। नेहरूजी नें पत्रव्यवहार किया परंतु व्यर्थ। जिन्ना ने पहले ही चौदह मांगों के साथ और छः माँगे बढाई।

१) मुस्लिमों को गोहत्या की अनुमति मिलें।

२) 'वंदे मातरम्' राष्ट्रगीत के स्थान से हटाया जाय।

३) 'उर्दू' यह राष्ट्रभाषा बने।

४) 'तिरंगा' झंडा वदला जाय। या मुस्लिम लीग के झंडे को बराबरी का स्थान मिले इत्यादि।

गीत के साथ साथ अब राष्ट्रभाषा हिन्दी को भी विरोध हो रहा। वर्धा कांग्रेस में प्रस्तावित 'विद्यामंदिर' योजना भी विवादों के घेरेमें उलझने लगी। योजना कैसी है? क्या है? यह समझने के बजाय विद्या-मंदिर शब्द से ही विरोध करना है यह निश्चित हुआ - 'तोमारई प्रतिमा गडी मंदिरे - - - - यहाँ भी "बुतपरस्ती" के बहाने वह इस्लाम विरोधी बना। १५ अक्तुबर १९३८ के 'हरिजन सेवक' में 'सात शिकायतें' इस लेख में म. गांधीजी लिखते है, - 'जहाँ तक मुझे पता है - मुझे उसमें कोई खराबी नही दिखती। यह मैं जानता हूँ कि मंदिर नाम पर कुछ मुसलमानों ने ऐतराज किया है। लेकिन श्री शुक्लजी (म.प्र. के प्रधान मंत्री) ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मुसलमान लडके या उनके

O परिशिष्ट देखिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिभावक सिर्फ अब इन स्कूलों में पढ़ना नही चाहते है क्यों कि ये विद्यामंदिर कहलाते हैं। वे ऐसे स्कूलों में पढ सकते हैं जिनका अरबी नाम होगा - मगर यह निश्चित रूप से ऐसा मामला है जिस पर कोई ऐतराज नही होना चाहिए। क्यों कि मंदिर शब्द का एकमात्र धार्मिक महत्त्व ही नहीं है। जब इसके साथ कोई गुणवाचक विशेषण हो तो उसका मामुली अर्थ स्थान ही होता है। और शब्द का ऐसा उपयोग एक आम बात है।

कांग्रेस का राज - हिन्दुराज

अक्तुबर १९३८ में मुस्लिम लीग का अधिवेशन हुआ। अध्यक्ष बॅरिस्टर जिन्ना ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कांग्रेस की काफी आलोचना की। कांग्रेस का राज्य अर्थात् हिन्दुओं का राज्य! 'वंदे-मातरम्' यह राष्ट्रगीत। हिंदी राष्ट्रभाषा वर्धा - प्राचीन विद्या मंदिर शिक्षण योजना और तिरंगा झंडा ये सब हिंदुराज्य की विशेषताएँ हैं। ये इस्लाम के विरोध में हैं। प्रांतीय स्वायत्तता यह अल्पमात्र में स्वाधीनता है। वह प्राप्त होते ही कांग्रेसने अपने आचरण से स्पष्ट कर दिया कि यह हिंदुराज्य है और हिंदुस्थान हिंदुओं का है। समय समय पर कांग्रेस राज्यों को वे हिंदुराज्य संबोधते रहें। ये हिन्दू राज्य अल्पजीवि ही रहें। कांग्रेस मंत्रिमंडल ने एकसाथ त्यागपत्र दियें। वह दिन लीग नें 'मुक्तिदिन' के रूप में मनाया। खुपी से मिठाईयाँ बाटी।

हिंदुराज्य में मुस्लिमों पर और कितने अत्याचार हुए इसकी छानबीन के लिये समितियाँ नियुक्त करने की घोषणा की।

१९३८ में ही पीरपूर के नबाव मोहंमद मेहेदी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गयी। नवम्बर में इस समिति ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। पीरपूर प्रतिवेदन के प्रमुख बिंदु थें - वंदे-मातरम्, तिरंगा ध्वज, कांग्रेस का मुस्लिम जनसंपर्क कार्यक्रम, विद्यामंदिर योजना, दंगे और हिंदी भाषा। 'India Divided' इस पुस्तक में बाबू राजेंद्रप्रसाद लिखते हैं, कांग्रेस में 'वंदे-मातरम्' निरंतर गाया जाता था। पंद्रह वर्ष तक अधिवेशनों में गाया जाता था तब जिन्ना भी उपस्थित रहते थें। परंतु किसी नें आक्षेप नही लिया। खिलाफत आंदोलन के समय सेंकडो बार गाया जाता था। परंतु किसीनें आपत्ति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं उठायी। परंतु विवाद के रूप में पीरपूर प्रतिवेदन में इसका उल्लेख प्रथम प्राप्त हुआ। इसमें कहा गया कि इस गीत की पृष्ठभूमि वह 'आनंदमठ' में जिस पध्दति से लिखा गया है उसे मुसलमान भूल नही सकतें। वास्तविकता यह थी कि इस गीत पर आक्षेप लेने हेतु उसे कुरेद कर लोगों के समक्ष रखने की आवश्यकता सहसूस होने तक बंगाल के बाहर के हजारों मुसलमानों को इस कथानक का पता भी नही था।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद अत्यंत शांत संयमित थे। वे राष्ट्रपति थे और म. गांधीजी के निकटवर्ती थे। अतः उनके इन शब्दों का मूल्य अत्यधिक है। उनके मन का विषाद, अगतिकता, असहाय्यता; कटुता इसमें व्यक्त हुई है।

राजेन्द्र प्रसादजी के पुस्तक में 'दि मीनिंग ऑफ दि पाकिस्तान' इस अंग्रेजी पुस्तक के उल्लेख बार बार प्राप्त होते हैं। (एफ्. के. दुराणी) वे लिखते है - हिंदुओं का सार्वभौमत्व प्रस्थापित करने का और मुस्लिमों के प्रति विद्वेष उपस्थित करने का प्रतीक अर्थात् वंदे मातरम्। उनके अनुसार इस गीत के जड़ में दो तत्त्व हैं - दोनों जातियों का राजकीय शत्रुत्व और अविश्वास ब्रिटिशों के सामने तो नहीं . . . . . .

ब्रिटिशों के सामने तो नहीं परंतु मातृभाव मलिन होने के कारण सत्ता प्राप्ति के मोंहजाल में फंस कर नेतागण ने मुस्लिमों के सामने घुटने टेंक दिये। म. गांधीजी कहते हैं - 'I would not risk a single quarrel over singing Bande Mataram at a mixed gathering. It will never suffer from disuse. It is enthroned in the hearts of millions. The flag and the song will live as long as the nation lives' (हरिजन)

झगडा टालने के लिये वंदे मातरम् न गाना ही उन्होंने उचित समझा - तो भी वे कहते हैं कि वंदे मातरम् इस गीत ने ही बंगाल और बंगाल के बाहर लाखों लोगों को हौतात्म्य की भावना से ओतप्रोत किया है। इसकी अभी निर्धारित की हुई दो कडियाँ संपूर्ण भारत को बंगाल की देन है। जबतक राष्ट्र है तक तक यह झंडा और गीत रहेगा। झगडा मोल नही लेना - इसे केंद्रबिन्दू मानकर ही दो कडियाँ गाने का निर्णय हुआ। कांग्रेस सोच रही थी - दो कडियाँ रखने से हिंदु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खुष और तीन कडियाँ हटाने से मुस्लिम खुष होंगे परंतु गुनाह बेलज्जन ऐसी बात हो गयी। तीन कडियाँ निकालने कि कारण हिंदु नाराज, दो रखने से मुस्लिम अप्रसन्न। हिंदुओं को पूर्ण गीत गाना था और मुस्लिम को उसका अस्तित्व ही मान्य न था।*

१९४० में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिये नियम बनाये गयें। उसमें वंदे मातरम् के उपयोग के लिये मनाही की गयी थी। परंतु इससे भी मुस्लिम संतुष्ट नही हुएँ। नेताओं के तुष्टीकरण के परमोच्चता का उदाहरण विश्व में बेजोड है। वंदे मातरम् राष्ट्रगीत के समय सभी सज्जन खडे हुएँ परंतु गांधीजी बैठे रहें। उद्देश यह था कि हिंदुस्थान में कहीं राष्ट्रगीत के समय मुस्लिम बैठे रहें तो हिंदू नाराज न हो। (केसरी - २-९-१९४७ - ६ ड)

एक ओर तुष्टीकरण नीति की कमाल तो दूसरी ओर हिंदुओं के प्रयत्नों की कमाल। हिंदुमहासभा नें १९३७ में वंदे मातरम् दिन निश्चित किया। स्थान स्थान पर उसके कार्यक्रम हुएँ। हिंदुराष्ट्रवादी भी अपनी भूमिका पर अडिग थें। परंतु उनके प्रयत्न अरण्यरुदन ही सिध्द हुएँ। वास्तविक किसी जाति के कहने पर राष्ट्रगीत बदला नही जाना चाहिये। अनेक महानुभावों का मत था आज हम वंदे-मातरम् गीत बदलेंगे या नही गायेंगे परंतु क्या भरोंसा कि दूसरें गीत पर कुछ आपत्ति आयेगी ही नही? उसमें भी कुछ अलग दोष उन्हें दिख सकते हैं। हुआ भी वैसे। १६ जुलाई १९४८ की 'केसरी' में एक वार्ता थी

विश्वास रखें या नही?

राष्ट्रगीत प्रारंभ होते ही मौलाना आझाद निकल गयें। दिनांक १२ के सायंकाल दिल्ली नगरपालिका की ओरसे हिंदी गवर्नर जनरल चक्रवर्ती

---

* When I first heard it sung it had enthralled me. I associated the purest national spirit with it. It never occurred to me that it was a Hindu song or meant only for Hindus. Unfortunately now we have fallen on evil days. All that was pure gold before has becime base metal today. In such times it is wisdom not to market pure gold and let it be sold as base metal.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजगोपालाचारीजी को मानपत्र समर्पण का कार्यक्रम था। नित्यक्रमानुसार अंतिम कार्यक्रम राष्ट्रगीत का था। राष्ट्रगीत के 'जनगणमन' शब्दोचार हुआ न हुआ भारत के शिक्षण मंत्री आझाद अपने स्थान से उठें, मंच से नीचे उतरें और कार में बैठ कर चल दिये।

द्रष्टा सावरकरजी ने १९३८ में कर्णावती के अपने भाषण में कहा था - 'मुस्लिमों को 'वंदे मातरम्' गीत भी बर्दाश्त नही हो रहा है। बेचारे ऐक्य के लालायित् हिन्दू! उन्होंने तुरन्त गीत को तोड़मरोड कर उसे छोटा बनाया। मुस्लिम वह भी सहन करेंगे ऐसा नहीं। आप संपूर्ण 'वंदे मातरम्' गीत नष्ट करो, केवल 'वंदे मातरम्' शब्द भी उन्हें अपमान की प्रत्यक्ष मूर्ति प्रतीत होगा और वे चिल्लाहट करते हुएँ दिखाई देंगें। अत्युदार रविंद्र से एखाद गीत तयार करवा लिजिये। मुस्लिमों को उससे कोई लेन देन नही है। क्यों कि रविंद्रजी भी आखिर हिंदू ही है। अल्ला के स्थान पर ॐ या पाकिस्तान के स्थान पर भारत या हिंदुस्थान ऐसे शब्दों का प्रयोग करने का जालीम अपराध किये बिगर वे कैसे रहेंगे? इक्बाल या जिन्ना द्वारा शुध्द उर्दू में रचा हुआ और हिंदुस्थान को मुस्लिम अधिराज्य को अर्पित भूमि के रूप में जयकार करनेवाला गीत सिध्द होते तक उनका समाधान होना असंभव है।

इससे स्पष्ट होता है कि मुस्लिमों ने केवल विरोध के लिये विरोध किया है।

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राष्ट्रगीत नहीं बन पाया वंदे मातरम्

वंदे मातरम्! आर्षमेधा स्फुरित महानमंत्र। आज स्वाधीन भारत का (National Song) राष्ट्रगान है।

सत्तारूपी स्वर्णमृग की आड़ ले कर भले ही अनेकोंने अन्य गीत राष्ट्रगीत के रूप में अवश्य चुना पर उनके भी मन की गहराई में यह गीत आदिबीज प्रणव जैसा निरंतर प्रस्फुटित होता रहा। संसार में भी ऐसा ही होता रहता है। मनुष्य का हृदय गाता रहता है - सोऽहं - सोऽहं परंतु मोहमाया के अधीन हो कर मूलस्वर को दबोचते हुए वह कोऽहं, कोऽहं कहने लगता है - और माया में बुरी तरह से उलझ कर कष्ट पाता है।

अपने एक भाषण में पं. जवाहरलालजी ने कहा - वंदे मातरम् गीत का तीस वर्षों से अधिक काल हो गया, भारतीय राष्ट्रवाद से गहन संबंध रहा है और असंख्य भावनाओं की स्मृतियाँ और बलिदान इस में शामिल हो गये हैं। लोकगीत न तो आदेश दे कर बनाये जा सकते हैं और न इन्हें लादा जा सकता है। वे जनभावनाओं से विकसित होते हैं।

वंदे मातरम् अपने आप ही विकसित हुआ। जिस किसी मातृभक्त ने उसे सुना वह उससे मंत्रमुग्ध हो गया।

स्वाधीनता की मंगल बेला में

१४ अगस्त १९४७ के संविधान समिति का पाँचवा सत्र। भारत के सत्ताधिग्रहण के लिये समिति के सदस्य एकत्रित हुए थे। रात के ठीक १२ बज रहे थें। (वास्तव में यह गहरी नींद का समय-निशाचर वृत्ति परम सीमा पर पहुँचती है।) यह क्षण हमारे आनंद के साथ परम दुःख का भी क्षण था। देश को स्वाधीनता तो अवश्य मिली परंतु हमारी माँ खंड-विखंड हुई। ऐसे सुखदुःख के संमिश्र अवसर का पहला बिंदु था - वंदे मातरम् गीत का गायन। श्रीमती सुचेता कृपलानी ने अपने भावभीने स्वर में 'वंदे मातरम्' गाया। संपूर्ण सभा चित्र जैसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्तब्ध थी। मुखपर एक अपूर्व आभा थी। सब लोग खड़े होकर स्वर में स्वर मिला रहे थे वंदे मातरम्।

पं. नेहरुजी का वक्तव्य

परंतु स्वतंत्रता दिन की प्रथम वर्षगांठ १५ अगस्त १९४८ को शीख रेजिमेंट सेंट्रल ने दिल्ली के लाल किले पर ध्वजारोहण के समय जनगणमन की धून बजायी। उसीके दस दिन पश्चात् २५ अगस्त ४८ को संविधान समिति में पंतप्रधान जवाहरलालजी ने राष्ट्रगीत विषयक विचार रखें।

१५ अगस्त १९४७ के पश्चात् वाद्यवृंद के लिये राष्ट्रगीत का स्वर यह एक नितांत आवश्यक प्रश्न बन गया है। हमारी सुरक्षा सेनाएँ, विदेशी दूतावासों और प्रतिनिधि मंडल के लिये यह महत्त्वपूर्ण बात है। स्वाधीनता के पश्चात् 'गॉड सेव्हद किंग' यह धून हमारे सैनिकी घोष के लिये उपयुक्त नहीं रही। विदेशों में हमें निरंतर स्वर के बारे में पूछा जाता है - कौन से 'स्वर' का उपयोग करें? अबभी कुछ उत्तर दिया नहीं गया क्योंकि अंतिम निर्णय संविधान समिति ही दे सकती है।

जनगणमन के स्वर में किंचित् परिवर्तन कर के दक्षिण एशिया की इंडियन नॅशनल आर्मी ने उसे राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकार किया है और धीरे-धीरे भारत में वह लोकप्रिय बन रहा है।

१९४७ की संयुक्त राष्ट्रसंघ जनरल असेंबली की सभा न्यूयार्कमें हुई। उस में यह प्रश्न अत्याधिक चर्चित रहा। हमारे प्रतिनिधि मंडल को अवसरविशेष पर बजाने हेतु राष्ट्रगीत के बारे में पूछा गया। हमारे प्रतिनिधि मंडल के पास जन-गण-मन की एक ध्वनिमुद्रिका थी। वहीं उन्होंने वाद्यवृंद के अभ्यास के लिये दी। वाद्यवृंद ने अभ्यास कर के उस बैठक में जब यह धुन बजायी तब सभी सभासदों को वह गरिमायुक्त और भावपूर्ण लगी, अत्यंत पसंद आयी। वहीं ध्वनिमुद्रण भारत में भेजा गया। अपने सैनिकी वाद्यवृंद पर उसका प्रयोग होने लगा। विदेशी शिष्टमंडल कभी आवश्यकतानुसार इसी गीत का प्रयोग करने लगे। अनेक देशों को जनगणमन का स्वर पसंद आया। विशेषज्ञों की राय में यह धुन उनके द्वारा सुने गये अन्य राष्ट्रगानों से श्रेष्ठ थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनेकों के प्रशंसा और बधाई के संदेश प्राप्त हुए।

घोष और वाद्यवृंदों ने देश-विदेश में इसका वादन किया। कभी-कभी धुन में कुछ परिवर्तन करके और नतीजा यह हुआ कि ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन बहुत से प्रस्तुतीकरण संग्रहित कर सका।

इस धुन को मिली आम प्रशंसा के अलावा उस समय हमारे पास दूसरा चारा भी नहीं था क्योंकि विदेश भेजे जा सकने योग्य अन्य किसी राष्ट्रगीत का उचित संगीत प्रस्तुतीकरण उपलब्ध नहीं था। उस स्थिति में मैंने प्रदेशों के राज्यपालों को लिखा और जनगणमन या अन्य किसी गीत को राष्ट्रगीत बनाना है - मैंने यह भी स्पष्ट किया था कि अंतिम निर्णय घटना समिति का रहेगा परंतु विदेशी राजभवनों, सुरक्षा व्यवस्थाओं को शीघ्र सूचना भेजने की आवश्यकता के कारण यह निर्णय आवश्यक हुआ है।

बंगाल के अतिरिक्त प्रांतों के राज्यपालों ने जन-गण-मन सूचित किया। बंगाल के राज्यपालजी ने वंदे मातरम् को मान्यता दी। दूरदृष्टिसे विचार करें तो वंदे मातरम् जनगणमन का विवाद छिड़ना भी अहितकारक होगा। निःसंशय ही वंदे मातरम् भारत का प्रधान राष्ट्रगीत है जिसे भव्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हे। हमारी स्वाधीनता से संबंधित है। उसका स्थान बेजोड है। अन्य कोई गीत वह स्थान प्राप्त नहीं कर सकता। यह गीत स्वाधीनता संग्राम की तीव्रता का भावावेश प्रकट करता है परंतु अंतिम परिणाम उतनी तीव्रता से साध्य नहीं होता है। यह तो बड़ा स्पष्ट है कि जनमणगण की शब्द रचना पूर्णतः योग्य नहीं है। उसमें कुछ परिवर्तन करने होंगे परंतु राष्ट्रगीत के बारे में विचार किया तो शब्दों से स्वर का महत्त्व अधिका लगा। राष्ट्रगीत का महत्त्व स्वदेश की अपेक्षा विदेश में अधिक होता है। अनुभव बताता है तो, जनगणमन के स्वर की बहुत प्रशंसा हुई है। वंदे मातरम् के स्वर को आकर्षकत्व और चरित्रात्मक पृष्ठभूमि अवश्य है परंतु विदेशी वाद्यवृंदों को उसका प्रयोग करना कठिन जाता है और इस गीत को आवश्यक उतनी लय नहीं है। ऐसा भी कई लोगों का मत है। [२५.७.१९४८] *

* पूर्ण वक्तव्य परिशिष्ट क्र.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलानिधी कृष्णराव के अथक परिश्रम

वाद्यवृंद के लिये वंदे मातरम् उपयुक्त नहीं इसी विषय को लेकर बवेला सा खड़ा देखकर कलानिधी कृष्णराव फुलंब्रीकरजी आगे बढ़े। उन्होंने प्रयास किये और संसद में यह सिध्द कर दिखाया कि वंदे मातरम् वाद्यवृंद के लिये भी उत्कृष्ट है। मि. गार्डनर का मत था - I tried it on the Band here also. It is beautiful harmonious. There is a dignity in Vande Mataram. इस अभिप्राय के पत्रक की प्रतियाँ सभी सांसदों को वितरित की गयी। पं. नेहरुजीने इस कार्य के लिये उनकी प्रशंसा की। कांग्रेस के बापूसाहेब गुप्ते पास ही थे। उन्होंने कहा - हम वंदेमातरम् को भी राष्ट्रगीत का स्थान देंगे।

शीघ्र ही उस वाक्य को ठीक करते हुए पंडितजी बोले - हाँ समान स्थान - समान दर्जा देंगे।

राष्ट्रगीत - वंदेमातरम् या जनगणमन यह विचार काफी समय चलता रहा। कई कांग्रेसियों ने, हिंदु महासभा तथा अन्यान्य संगठनाओं ने अनेक सभाएँ ली वंदे मातरम् राष्ट्रगीत बनें ऐसे प्रस्ताव पारित किये। विद्यार्थी परिषद ने हस्ताक्षर अभियान चलाया। परिणाम क्या हुआ? वह भी पढ़ने लायक है -

और वंदे मातरम् राष्ट्रगान बना

संविधान समिति ने अपना कार्य पूर्ण किया। २४ ज़नवरी १९५० को संविधान पर स्वीकृति हेतु स्वाक्षरी करने के लिये जब सदस्य एकत्रित हुएँ तब तीन प्रतियों पर उन्होंने स्वाक्षरी की और एक साथ जयघोष किया - वंदे मातरम् - परंतु राष्ट्रगीत की मुहर लगी जन-गण-मन पर और वंदे मातरम् राष्ट्रगीत बना।

उसी दिन देर रात ११ बजे संविधान समिति की बैठक हुई। बाबू राजेंद्रप्रसाद अध्यक्ष थे। इस बैठक में उन्होंने स्वयं ही एक निवेदन प्रस्तुत किया -

अभी चर्चा का एक बिंदु रहा है और वह है राष्ट्रगीत का। ऐसा लगता था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि प्रस्तुत प्रश्न सभागृह के सामने रख कर प्रस्ताव के रूप मे सभागृह निर्णय लें। परंतु फिर महसूस हुआ प्रस्ताव द्वारा औपचारिक निर्णय लेने से राष्ट्रगीत विषय में एक निवेदन करना ही उचित रहेगा।

जन गण मन इस शब्द से तैय्यार गीत और संगीत भारत का राष्ट्रगीत है। इस गीत के शब्दों में आवश्यकतानुसार बदल करने का अधिकार शासन को रहेगा। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभायी ऐसे वंदे मातरम् को जन-गण-मन के समकक्ष स्थान दिया जायेगा और उसकी प्रतिष्ठा उसके जैसे.ही रहेगी। मुझे लगता है सभासद इससे संतुष्ट होंगे।°

संविधान समिति ने वंदे मातरम् को समान दर्जा दिया। सत्र के अंत में अनंतशयनम् अय्यंगारजी की सूचना पर जन-गण-मन का गायन हुआ। पश्चात् वंदे मातरम् गाने के लिये कहा और लक्ष्मीकांत मैत्र के साथ सभीने गाया भी। सदन ने वंदे मातरम् को राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकारा नहीं अतः कांग्रेस के अध्यक्ष राजर्षि पुरुषोत्तम दासजी टंडन ने अपने पद का त्यागपत्र दिया।

वंदे मातरम् जे.बी. कृपलानीजी के शब्दो में

जे. बी. कृपलानी भी दुखी हुएँ वे लिखते है - वंदेमातरम् के स्थान पर महाकवि रविंद्रनाथ का लिखा हुआ जनगणमन स्वाधीनता के बाद अचानक राष्ट्रगीत के रूप में उभर आया। राष्ट्रगीत घटना समिति द्वारा स्वीकृत होना आवश्यक नही माना गया। परंतु अपने यहाँ अपने प्रथम प्रजासत्ताक के प्रथम अध्यक्ष डॉ. राजेंद्रप्रसादजी द्वारा घोषित किया गया। राष्ट्रगीत इस तरह से स्वीकारें नही जाते, वे जनता द्वारा मान्यता प्राप्त होने चाहिये। वंदे मातरम् की

° On January 24, 1950, the constituent Assembly adopted Jana Gana Mana as the national anthem. Its president Dr. Rajendra Prasad issuing a statement of this effect, observed.

The composition consisting of the words & music known as the Janaganamana shall be used for official purposes as the national anthem of India, subject to such alternations in the words as the Govt. may authorise as accasion arises and the song Vande Mataram, which has played a historic part in struggle for Indian freedom, shall be honoured equally with the Jana-gana-mana & shall have equal status with it .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केवल दो ही कड़ियाँ गायी जाती है - वैसी तो सभी गानी चाहिये। मुस्लिमों द्वारा लिये गये, मूर्तिपूजा का वर्णन है - इस आक्षेप के कारण रद्द किये गये चरण वास्तविक किसी दैवी गुणों का प्रतीक रूप है। जिसका स्पष्टीकरण उसी गीत में प्राप्त होता है। जो कडियाँ निकाली गयी है वे अत्यंत सुंदर है और माँ के प्रति भावनाओं का काव्यात्म वर्णन है। अभी भी जनगणमन के साथ वंदे मातरम् भी वाछंनीय है - संपूर्ण गीत ही गाना चाहिये।

वंदे मातरम् के बारे में नियम नहीं

वंदे मातरम् को राष्ट्रगीत का स्थान अवश्य दिया गया परंतु उसके बारे में कुछ नियम नहीं बनाये गयें। अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीने एक पत्रक द्वारा कुछ नियम प्रकाशित किये थे -

Vande Mataram may be freely sung or played at the beginning or at the end of public or private functions with a respect & dignity to the song. When both the songs are to be sung or played Vande Mataram will at the begining & Jana-gana-mana at the end.

कोई सार्वजनिक या निजी कार्यक्रम के अवसर पर पूर्ण सन्मान तथा प्रतिष्ठा के साथ वंदे मातरम् निर्भयता से गाया जा सकता है। परंतु जब दोनों गीत गाने या बजाने है तो वंदे मातरम् प्रारंभ में और जन-गण-मन अंत में गाना है।

हमारे नभोवाणी तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों का प्रारंभ ही वंदे मातरम् गीत की धुन से होता है जिससे हमारा भी दिन मंगल बनता है। नभोवाणी - दूरदर्शन के कार्यक्रमों का अन्त जन-गण-मन से होता है।

परंतु व्यवहार में वंदे मातरम् गाने की घटनाएँ अत्यंत कम मिलती हैं। केवल स्वाभिमानी राष्ट्रवादी संगठनाओं के कार्यक्रमों में अंत में संपूर्ण वंदेमातरम् का गायन होता है। आज हजारों लोगों को वंदे मातरम् यह पाँच कड़ियों का गीत है यह भी पता नहीं है। यहाँ याद आते है श्री. प्रेमथनाथ बिशीजी के शब्द - 'यह समझना भूल होगी कि मंत्र की सभी संभावनाएं समाप्त हो गयी हैं आप किसी भी चिनगारी के प्रति ठीक उसी प्रकार आश्वस्त नहीं हो सकते, जिस प्रकार किसी ज्वालामुखी के बारे में निश्चित नहीं हुआ जा सकता।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् के चरणचिन्ह

वंदे मातरम् क्रांतिकारियों जैसा साहित्यकारो के लिये भी प्रेरणा का निर्झर बना। इसवी १८९० में योगेंद्रनाथ विद्याभूषण गॅरीवाल्डीं के चरित्र में लिखते है -

आमो देर मत करो - समय आ गया है।
गगन विदारत हुए गाओ वंदे मातरम्।।

कविराज रविंद्र बाबूजीनें अपने साहित्य में वंदे मातरम् का अनेक बार प्रयोग किया है। उनका प्रथम राजनीतिक उपन्यास 'घरे बाहिरें' में नायक कहता है, - "कौन कहता है सत्यमेव जयते ? जय होगा मोह का। बंगाली इस बात को समझ गये थे, इसीलिये बंगालियों ने दस भुजा की पूजा शुरू की, बंगालियों ने सिंहवाहिनी की मूर्ती बनायी। वही बंगाली आज पुनः मूर्ती बनायेंगे, विश्वविजयी बनेंगे वंदे मातरम् के संमोहन से।"

* 'भगवत् गीता और वंदे मातरम् दोनों की हमें जरुरत है।'
* 'जनसमूह की लहरों पर नौका नाचती रहेगी, जिस पर वंदे मातरम् की पताका फरहती रहेगी।'
* 'वंदे मातरम् - वंदे मातरम् के मंत्र से आज लोहे के संदुक खुलेंगे, भंडार घर के प्राचीर खुलेंगे और जो लोग धर्म के नाम पर उस महाशक्ति को नहीं मानते, उनका विदीर्ण हो जायेगा। बोलो - वंदे मातरम्

  तोमार - ई - प्रतिमा गडी मंदिरे-मंदिरे ।'
* बंकिमबाबू के नाम से ही वंदे मातरम् संगीत पर एक महत्त्वपूर्ण रचना प्रकाशित हुई है।
* अरविंद जी का 'भवानी मंदिर' वंदे मातरम् पर आधारित है।
* योगेंद्रनाथ सरकारजी ने किताब लिखी थी 'वंदे मातरम्'।
* आक्टोबर १९०५ के 'वसुधा' में जितेंद्र मोहन बॅनर्जी ने लेख लिखा 'वंदे मातरम्'।
* १९०६ के बिहारी में स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी ने लेख लिखा - 'वंदे मातरम्'।
* १९४२ की क्रातिपर कविवर्य गदिमा ने फिल्म बनायी 'वंदे मातरम्'।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपेक्षा ही उपेक्षा

वंदे मातरम् को राष्ट्रगीत के बजाय उसे 'राष्ट्रगीत समकक्ष' स्थान मिला। राष्ट्रगान National Song की सरकारी मुहर उसपर लगी। अल्पसंख्यकों को आपत्तिजनक प्रतीत हुए चरण निकाल दिये गये परंतु विवाद वैसे ही रहा।

सन् १९६१ में पुनः एक बार 'वंदे-मातरम्' के बारे में विवाद उठा था। तब डॉ. सम्पूर्णानंद की अध्यक्षता में एक कमिटी बनाई गई, जिसने अपनी राय दी कि विद्यार्थियों को राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् याद होना चाहिये। इसके बाद ही इस गीत को आकाशवाणी पर पन्नालाल घोष द्वारा निर्देशित सारंग राग में गाया जाता है।

वंदे मातरम् कहना होगा

सन १९७३ की बात। बंबई महानगरपालिका कें विद्यालयों में यह गीत गाया जाता था। *

२६ फरवरी १९७३ को मोरलँड मार्ग मुंबई में महंमद उमर रजब महापालिका उर्दू विद्यालय में, नगरपालिका शिक्षणाधिकारी श्रीमती माधुरी शहा की अध्यक्षता में एक शैक्षिक परिसंवाद चल रहा था। अचानक बुरखाधारी ४०० मुस्लिम महिलाएँ वहा उपस्थित हुईं। 'हमारे बच्चें 'वंदे मातरम्' नही गायेंगे, 'वंदे मातरम्' की जबरदस्ती नही चलेगी' ऐसी नारेबाजी करने लगी।

मुंबई महापालिका कें विद्यालयों में राष्ट्रगीत की जबरदस्ती नही होनी चाहिये यह माँग मुस्लिम नगरसेवकों ने भी की। महानगरपालिका के कांग्रेस नेता महंमद खांडवानी नें उन्हें सहाय्यता की। मुस्लिम केवल अल्ला के सामने झुकता है। इस पर कमिश्नर देसाईजी नें 'वंदे मातरम्' की सक्ती न हो ऐसा आदेश दिया। परंतु महापालिका के सभी देशभक्त नगरसेवकों ने इस आदेश का तीव्र विरोध किया। परिणामस्वरूप देसाईजी नें 'वंदे मातरम्' कहना होगा यह आदेश फिरसे लागू किया। उसी समय 'ब्लॅक डिसेंबर' नामक पाकिस्तानी

* परिशिष्ट देखियें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संघटन नें धमकियाँ देना शुरू किया।

दिनांक एक मार्च

दिनांक एक मार्च को श्री. विक्रम सावरकरजी, हिंदुमहासभा के प्रधान कार्यवाह, के नेतृत्व में जुलूस निकाला गया। जुलुस में 'अगर भारत में रहना होगा, वंदे मातरम् कहना होगा'। 'वंदे मातरम् को विरोध अर्थात् राष्ट्रद्रोह', 'वंदे मातरम्' आदि अनेक फलक थे। काल घोडा के पास जुलुस को रोका गया। प्राध्यापक वि. घ. देशपांडे जुलुस के सम्मुख आये। उन्होंनें भाषण किया तथा जुलुस की भावनाएँ विधानसभा को सूचित करने का आश्वासन दिया।

इस प्रश्न पर महाराष्ट्र शासन को सचेत करने तथा जनता को कृतिशील बनाने के उद्देश्य से हिंदुमहासभा की चार बहनों ने अभूतपूर्व साहस किया. १) श्रीमती तेलंग २) सौ मानिनी सावरकर ३) तथा वर्षा बखले ४) अल्का साटेलकर इन दो महाविद्यालयीन युवतियों नें विधानसभा के प्रेक्षागृह में प्रवेश किया। दोपहर ढाई बजे विधानसभा का कार्य चरम सीमा पर था। इन महिलाओं ने 'वंदे मातरम्' को विरोध करनेवालों को भारत से खदेड दो इस आशय के पत्रकों की वर्षा की और 'अगर भारत में रहना होगा ----- इत्यादि घोषणाओं से विधानसभा गरज उठी। विधानसभा के पद्धतिनुसार इन महिलोओं को सजा देने के संबंध में कार्यमंत्री श्री. तिडकेजी नें विरोधी पक्ष नेताओं के साथ बैठक ली। श्री. तिडकेजी नें सात दिन की सजा का प्रस्ताव रखा।

श्रीमती मृणाल गोरे ने सजा एक दिनकी हो ऐसा प्रतिपादन किया। आखीर दोन दिन की सजा का प्रस्ताव मंजूर हुआ। विरोधी पक्ष नेता श्री. दि. बा. पाटीलजी ने कहा, - 'इस नगर में वंदे मातरम् नही कहेंगे ऐसी भूमिका ली जाती है और शासन मौन रहता है। जनता की भावनाएँ तीव्र होना स्वाभाविक है। आम जनता की भावनाओं जैसीही सभागृह की भावनाएँ भी तीव्र है। शील चारित्र्य और राष्ट्रभक्ति के संबंध में समझौता कभी नही हो सकता। 'वंदे मातरम्' उच्चारण के लिये ब्रिटिश काल में सजायें दी जाती थी, परंतु स्वाधीन भारत में भी 'वंदे मातरम्' उच्चारण के लिये सजा हो यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण बात है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमती मृणाल गोरेजी ने अपना अभिमत व्यक्त किया - जिस 'वंदे मातरम्' के लिये लाखों लोगों नें खून बहाया उस वंदे मातरम् को नकारना यह निश्चित ही प्रक्षोभजनक है। अपनी तीव्र भावनाओं का प्रदर्शन करना यह इन महिलाओं का उद्देश्य था। श्री. कृष्णराव भेगडेजी ने कहा, 'वंदे मातरम्' का अपमान, यह राष्ट्रभक्ति का अपमान है। 'वंदे मातरम्' नकारने की प्रवृत्ति ही 'ब्लॅक डिसेंबर' के माध्यम से धमकियाँ दे रही है। देशद्रोही वृत्ति को नष्ट करना चाहिये। इस सब गरमागरमी के पश्चात् वर्षा और अलका को शाम ६ बजे छोड़ दिया गया। और महिलाओं को दो दिन की सजा हुई।

चुनाव

इस आंदोलन का परिणाम नगरपालिका चुनाव पर अवश्य हुआ। काँग्रेस के खंडवानीजी पराभूत हुए। 'वंदे मातरम् कहना होगा' यह घोष विजयी उम्मीदवारों के विजय यात्रा में जोर शोर से हो रहा था। विधान परिषद में तथा पुणे महानगरपालिका में सत्तारूढ कांग्रेस सदस्यों ने 'वंदे मातरम्' गायन के पश्चात् ही कार्य प्रारंभ किया। शिवसेना नें अपनी विजय सभा में "मुंबई महापालिका के प्रथम बैठक में हम 'वंदे मातरम्' कहेंगे तथा सभी सदस्यों को उनका सम्मान करने के लिये बाध्य करेंगे" ऐसा आश्वासन दिया। मुस्लिम लीग के १६ सदस्य विजयी हुएँ। उनके पत्रक में दो प्रमुख बिन्दु थे। १) विश्व की कोई भी शक्ति हमें 'वंदे मातरम्' कहने के लिये बाध्य नही कर सकेगी। २) समान नागरी कानून जारी नही करने देंगे।

इस पत्रक से स्पष्ट होता है कि वे न इस देश के साथ घुले मिले हैं न घुलमिलना चाहते हैं। पानी में तेंल कभी एकरूप नही होता वह उपरी उपर ही रहता है। वैसेही मुस्लिमों को कितना भी तुष्ट करो, सहुलते दो, वे इस धारा से एकरूप नही हुए हैं न उसके लिये उनकी मानसिक तयारी है।

दिनांक १५ मार्च

१५ मार्च १९७३ को जैसे ही सभापति श्री शेषराव वानखेडेजी सभागृह में पधारे सभी सदस्यों नें वंदे मातरम् गाया। पश्चात् बनातवाला ने कहा था कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्व की कौनसी भी शक्ति मुस्लिम को वंदे मातरम् कहने के लिये बाध्य नही कर सकती, वे भी वंदे मातरम् के लिये खड़े हुएँ। 'वंदे मातरम्' न कहनेवालों पर उचित कारवाई की जायेगी यह राज्य गृहमंत्री शरद् पवारजी ने कुछ दिन पूर्व घोषित किया था। गीत गायन के पश्चात् वंदे मातरम् की चर्चा आरंभ हुई। वंदे मातरम् की चर्चा में मुस्लिम सदस्यों ने वंदे मातरम् का विरोध किया और अन्य सदस्यों ने वंदे मातरम् का आग्रह रखा। हाथापाई हुई परंतु नगर पालिका के विद्यालयों में वंदे मातरम् गाया जायेगा यह निश्चित हुआ।

१५ मार्च को ही राष्ट्रीय एकात्मता समिति की बैठक हुई। उसमें वंदे मातरम् गीत की सख्ती नही होनी चाहिये ऐसा समझौता हुआ। लोकसभा में कश्मिर के अपक्ष सदस्य शमीन अहमद ने 'वंदे मातरम्' राष्ट्रगीत नहीं है, अतः उस संबंध में सख्ती सहन् नही करेंगे, पुणे में मुस्लिम् लीग के डॉ. सुलेमान अंसारी ने भी विरोध प्रकट किया। महाराष्ट्र विधानसभा के मुस्लिम लीग प्रतिनिधि बनातवाला ने यह राष्ट्रगीत नही, हमें इस गीत के बारे में आदर है - हम खडे रहेंगे, गायेंगे नही - ऐसी भूमिका ली। वंदे मातरम् विरोध की यह वृत्ति केवल बंबई के महापालिका के उर्दू विद्यालयों तक मर्यादित नही है अपितु संक्रामक बीमारी जैसी आसेतु हिमाचल फैली हुई है इस का प्रत्यंतर आया।

२ अप्रेल १९७३ को महापौर के निर्वाचित हेतु नवनिर्वाचित् नगरसेवकों की प्रथम सभा थी। उस दिन महापालिका के चारों ओर वंदे मातरम् सैनिक छाये हुए थें। श्री. शरद पवार जी की, महाराष्ट्र में वंदे मातरम् कहने के लिये बाध्य करेंगे, यह भूमिका डाँवाडौल होने लगी। अतः जनता ही निर्णायक लडाई के लिये सिध्द हुई। प्रमुख आयोजक हिंदुमहासभा थी।

वंदे मातरम् की पट्टियाँ छपवायी गयी थी। हजारों दुकानें तथा वाहनों पर पट्टियाँ लगाने का कार्य शुरू हुआ। पट्टी लगाने के बाद सब एक दूसरें को कहते 'वंदे मातरम्'! वंदे मातरम् के लिये मना करनेवालों पर बलप्रयोग भी हुआ।

ध्वनिक्षेपक से निदर्शकों की घोषणाएँ निरंतर चल रही थी। पालिका भवन के इर्दगिर्द से जुलुस निकाला गया। दोहपर दो बजे पालिका भवन के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुख्य दरवाजे पर काबू पायी गयी। पालिका में प्रवेश करने वालें इच्छुक व्यक्ति के लिये 'वंदे मातरम्' कहना अनिवार्य था। अनेक नगरसेवक बड़ी प्रसन्नता से 'वंदे मातरम्' कह कर प्रवेश करते थें। कुछ लोगों ने अगतिकता से कहा परंतु एक तो गालीगल्लोच करते हुए आया - फिर क्या! अनेकों नें उस पर हाथ साफ कर दिये। पुलिस नें निदर्शकों पर लाठीहल्ला किया - उसमें श्री. विक्रम सावरकर अत्यधिक घायल हुएँ। फिर हातापायी शुरू हुई। 'वंदे मातरम्' का आग्रह रखनेवाले सैनिकों का रक्त बहा।

हुबली का एक प्रसंग

श्रीनगर या अन्य मुस्लिम-बहुल क्षेत्रों में हमारा राष्ट्रध्वज जलाना यह आम बात हुई - हमारे राष्ट्रीय मानबिंदूओं को पैरोंतले कुचलना यह मानों उनका धर्म है ऐसी ही एक घटना हुई हुबली में। वहाँ एक कित्तूर चेन्नम्मा मैदान है। आज उसे ईदगाह मैदान कहते हैं। १६ जनवरी १९९२ को भाजपाध्यक्ष मुरलीमनोहर जोशी तिरंगा फहराने लाल चौक गये थे, ठीक उसी समय नगर नगर के सार्वजनिक स्थान पर तिरंगा फहराना और संपूर्ण 'वंदे मातरम्' गाना यह योजना भाजप द्वारा बनी थी। लगभग सभी स्थानों पर कार्यक्रम सुचारू रूप से हुएँ परंतु हुबली में झंडावंदन के लिये गये नागरिकों पर लाठीहल्ला हुआ। बाद में उन्हें पुलिस चौकी पर जाना पडता था।

१५ अगस्त १९९२ को भी उसी स्थान पर झंडावंदन का कार्यक्रम तय हुआ था। नागरिकों ने एक राष्ट्रीय ध्वज गौरव रक्षण समिति बनायी। और बड़ी धूमधाम से कार्यक्रम की तैय्यारी प्रारंभ हुई। शासन की तैयारी अत्यधिक थी। सारे मैदान को कंटिली नुकिली तार लगाई थी। आम उपयोग के लिये उस ओर जानेवाले सभी रास्ते बंद किये थे। जाँच होती थी। परंतु वहाँ झंडा फहराने की योजना भी निश्चित थी। छः महिलाओं को यह दायित्व दिया गया। उन्होंने ३-३ के दो गुट बनाये। एकने अपने सलवार खमीज में दंड और झंडा छिपाया था। दूसरी ने उस मैदान के पास जो विद्यालय था वहाँ की शिक्षिका जैसा गणवेश धारण किया। हाथ में छाता था। ठीक समय पर दोनो गुट वहाँ पहुँचे, जैसा दोनों का आपस में कोई परिचय नही था। संकेत मिलने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर अलका ने अपना छाता खोला और तिरंगा लहरने लगा। ठीक उसी समय निवेदिता ने खमीज के अंदर से दंड निकाल कर तिरंगा फहराया। झंडा देखते ही पुलिस अवाक् हुई। क्षण दो क्षण के पश्चात् उन्हें परिस्थिति का भान हुआ। वे बहनों को पकडने के लिये दौडे तब तक बहनों नें वंदे मातरम् गाना प्रारंभ किया फिर क्या वे सावधान की स्थिती में खडे रहे। वंदे मातरम् पूर्ण होने के पश्चात उन्हें गिरफ्तार किया गया।

वे छः बहनें : अलका इनामदार, निवेदिता सातवळेकर, राजश्री, जडी, गीता उमरगी, मुधा सौडीकर, जोशी, गीता लिमये आदि वे हुवळी - राष्ट्र सेविका समिति शाखा की बहनें थी। नित्य शाखा के कारण ध्वज का प्रेम, उसके प्रति निष्ठा उनमें थी।

स्वाधीन देश में राष्ट्रध्वज की दशा, राष्ट्र सेविका समिति सेविकाओं को राष्ट्रभक्ति के क्या संस्कार देती है, पुलिस तथा समाज का क्या दायित्व है इन सभीका यह उदाहरण है।

संसद में वंदेमातरम्

दिनांक ३ दिसम्बर १९९१ को लोकसभा में सांसद श्री. के.एच. मुनीयप्पा (कर्नाटक) और जनता दल की श्रीमती मुमताज अन्सारी (बिहार) इन दोनों ने प्रश्न पूछा -

क्या देश की कुछ शिक्षण संस्थाओं में राष्ट्रगान और राष्ट्रीय गीत का गाया जाना बंद कर दिया गया है? यदि हां तो उसका क्या कारण? कुछ रिपोर्ट प्राप्त हुई है जिन के अनुसार विद्यालयों में प्रतिदिन सामूहिक राष्ट्रगान की परंपरा बंद कर दी गयी है या फिर अन्य कुछं विद्यालयों में इसे कुछ अवसरों पर गाये जाने तक के लिये ही सीमित कर दिया है? संभवतः इसका मुख्य कारम उदासीनता है। मानव संसाधन मंत्री श्री. अर्जुनसिंगजी ने उत्तर दिया -

फिरसे प्रश्न पूछा गया - क्या सरकार का विचार सभी विद्यालयों में राष्ट्र-गान और राष्ट्रीय गीत गाये जाने को अनिवार्य बनाने का है। और यदि नही, तो इसके क्या कारण है?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसके उत्तर में माननीय मंत्री जी ने जो बताया, वह इस प्रकार है :-

राष्ट्र-गान के संबंध में सरकारी नीति यह रही है कि सभी विद्यालयों में प्रतिदिन राष्ट्र-गान का सामूहिक गायन किया जाए। देशभर में स्थित सभी विद्यालयों में राष्ट्र-गान के सामूहिक गायन में संबंधित आदेश भारत सरकार द्वारा समय समय पर जारी किए गएँ हैं। हाल ही में अक्तुबर, १९९१ में मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) ने विद्यालयों में राष्ट्र-गान के लिए आवश्यक निर्देश जारी करने हेतु सभी मुख्य मंत्रियों और उप-राज्यपालों को लिखा है। तथापि राष्ट्रीय गीत के गायन के लिए कोई निर्देश जारी नहीं किए गए है।

सांसद श्री राम नाईकजी

इसी संदर्भ में ९ दिसम्बर १९९१ को श्री. राम नाईकजी (उत्तर मुंबई - भाजपा सांसद) ने शून्यतास में आधे घंटे की चर्चा की। सभापतीजी के सामने निवेदन करते हुए उन्होंने कुछ तथ्य उजागर कियें . . . वंदे मातरम् का ऐतिहासिक कार्य, उसकी स्वाधीनता संग्राम में रही भूमिका बताते हुए उन्होंने सुझाव दिये कि १) मुंबई महापालिका में सत्र का प्रारंभ वंदे मातरम् से होता है - सब खडे होते हैं और गाते हैं। और सदन का कामकाज समाप्त होता है तो सब खडे होकर जन-गण-मन गाते हैं। बाकी सभा में जितना चाहे झगडा करो, लेकिन प्रारंभ वंदे मातरम् से और अंत जन-गण-मन से करेंगे।

इस लिए मेरा सुझाव है कि लोकसभा में भी रोज के काम का प्रारंभ वंदे मातरम् से करें। जब सारे देश के लोग देखेंगे कि सब सांसद खडे होकर वंदे मातरम् गाते हैं तो मुझे लगता है कि - A message will be communicated . . . . और फिर मुझे नहीं लगता ऐसा कोई यहाँ पर होगा, वह वंदे मातरम् कहने के लिए डरता है, मुँह नहीं खोलता है, तब भी देशवासियों के खयाल में आयेगा कि यहाँ बैठने वाले, खडे होनेवाले क्या करते हैं। मेरा पहला सुझाव है कि वंदे मातरम् और जन-गण-मन सब जगह गाना चाहिए।

यद्यद् आचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरे जनाः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राष्ट्रीय गीत, राष्ट्र गान और राष्ट्र ध्वज के बारे में हमें कानून बनाना चाहिए जिससे यदि कोई उसका अपमान करेगा तो उसके विषय में कानुनी कार्यवाही की जा सके। ध्वजसंहिता के बदले में कानून बनाना चाहिए।

जो विद्यालय राष्ट्रगीत नहीं गाते उनका अनुदान बंद हो। जो अनुदान नहीं लेते उनकी इस व्यवहार के लिये मान्यता बंद करनी चाहिये। राष्ट्रभक्ति का निर्माण करने के लिए विद्यालय है और क्या हम उन्हें राष्ट्रद्रोही बनाना चाहते हैं? वंदे मातरम्, जन-गण-मन गाने के लिए तैयार नही है? इसलिए ऐसे विद्यालयों को अनुदान और मान्यता के संबंध में विचार कीजिए। राष्ट्रीय गीत और राष्ट्र गान - 'वंदे मातरम्' और 'जन-गण-मन' हम सामूहिक रूप से संकल्प करें कि देशभर में ये अच्छे ढंग से गाये जाये।

मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंगजी

श्री. अडवाणीजी ने भी उनका साथ दिया। उन्होंने अपने भाषण में डॉ. राजेंद्र प्रसादजी के भाषण के कुछ अंश दिये। उत्तर देते हुए मा. अर्जुनसिंगजी ने कहा कि - भारत में वंदे मातरम् का गान और इससे मिली प्रेरणा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अद्वितीय और रोमांचक पहलू है। इस लिए वंदे मातरम् सर्वथा गाया जाना उचित है, उपयुक्त है। जहाँ भी संभव हो सके, हमें वंदे मातरम् का गान करना चाहिए। चहाँ तक सदन का प्रश्न है, आदरणीय सभापति महोदय, जो सुझाव माननीय सदस्य ने दिया है, इस पर तो आदरणीय अध्यक्ष महोदय ही विचार कर सकते हैं। जैसा उनका फैसला इस संवंध में होगा, हम लोगों की तरफ से उसका स्वागत होगा।

यह भी उन्होंने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय गीत के लिए कोई विधान - कानून नहीं बना हैं और चूंकी उसका कोई (कम्पलसरी आस्पेक्ट), अनिवार्य रूप नही है। इसके लिए कुछ लोग इसको अनिवार्य नहीं मानते हैं और उसका गान नहीं करते हैं। गान का सम्मान होना चाहिए। डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने उस समय भी घोषणा की थी कि वंदे मातरम् का सन्मान, स्तर और स्थान हमारे देश की उन भावनाओं से जुडा है। जिन भावनाओं को सारे देश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने अपने लिए प्रेरणा मान कर बलिदान दे कर देश को आझाद कराया, इसी रूप में इस गान का भी सम्मान होना चाहिए। लेकिन हम उसके बारे में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई कानूनी कार्यवाही नही कर सकते है, केवल लोगों के बीच में इस भावना को और मजबूत करने से ही हम उस राष्ट्रीय गीत को भी वह स्थान दिला सकते है।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि संसद में वंदे मातरम् गाने का निर्णय - सभापति ले सकते है।

परपज कमिटी की बैठक

श्री नाईकजी ने १९-१२-९१ को उन्हें एक पत्र लिखा। १९ अगस्त ९२ को सभापतिजी ने एक जनरल परपज कमिटी की बैठक ली - जिस में संसद का प्रारंभ वंदे मातरम् और अंत जन-गण-मन से होगा यह निश्चित हुआ। लोकसभा अध्यक्ष ने कहा था - वंदे मातरम् से शुरूं किये जाने के कारण लोकसभा अधिकारी को अनुशासन की गरिमा मिलेगी। देशभक्ति के भाव को परिप्रेक्ष्य मिलेगा। प्रधानमंत्रीजी ने भी उन्हें आश्वासन दिया कि सत्र 'वंदे मातरम्' से शुरू होगा - और वे स्वयं 'वंदे मातरम्' के कारण ही कुर्सी पर है। परंतु २३ नवम्बर को जनरल परपज कमिटी की इस विषय में पुनर्विचार करने हेतु एक बैठक बुलायी गयी।

विवाद के घेरे में

सांसद शहाबुद्दीन ने इस फैसले के खिलाफ एक नोट पेश की। श्री चंद्रकान्त यादव ने भी विरोधी नोट भेजी। मुस्लिम लीग के सैत ने भी विरोध लिख भेजा। और भा.क.पा. ने उनकी सहाय्यता की। वंदे मातरम् का विरोध करनेवाली लीगी वृत्ति फिर से उभर आयी। 'वंदे मातरम्' गाये जाने का विरोध - एक तरह से राष्ट्रीय चेतना का ही अपमान है।

वास्तविक संसद के इतिहास का यह दिन एक ऐतिहासिक दिन था। संविधान समिति ने निर्णय लेने के पश्चात ४२ वर्ष तक देश के सर्वोच्च लोकप्रतिनिधि गृह में 'वंदे मातरम्' का गायन नही हो रहा था।

इस समय भी विरोध हुआ - श्री. अडवाणीजी व्यथित हुएं। परंतु उन्होंने कहा - १९४७ की स्थिति हम फिर से नहीं होने देंगे - उनकी आँखें भर आयी।

वंदे मातरम् सत्र के प्रारंभ में गाना या अंत में इस पर भी काफी चर्चा हुई। प्रचंड विरोध के पश्चात् भी संसद में वंदेमातरम् हुआ।

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दो राष्ट्रगीत

वंदे मातरम् को विरोध कितनी अजीब बात है यह! विश्व में शायद अपना ही एक ऐसा देश होगा जिसके एक प्रदेश में दो निशान - दो विधान है जम्मू-कश्मीर और जिसने दो गीतों को राष्ट्रगीत की प्रतिष्ठा दी है। उसमें एक प्रधान है दूसरा अतिरिक्त - एक राष्ट्रगीत, एक राष्ट्रगान। वंदे मातरम् धर्म की आड़ में उसे ठुकराया गया।

वास्तविक उसमें वर्णित 'वंदे मातरम्' यह सदियों पुराना भाव है - विश्व का प्रथम साहित्य वेद हमें सिखाते हैं -

द्यौ में पिता जनिता नाभिरत्र
वन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम् । - ऋग्वेद

नमो मातरै पृथिव्यै - यजुर्वेद
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । - अथर्ववेद

यह पृथिवी हमारी माँ है हम उसकी संतान है।

मातृत्व की त्रिधाराएँ

अस्थिचर्ममय इस देह का पालन पोषण करनेवाली होती है माँ - अपार कष्ट सहन कर वह अपनी संतान को जन्म देती है, पालती है - वह है जन्मदात्री - जननी।

इस हमारे अपने जन्मदात्री, को हमारे घर-परिवार, समाज, राष्ट्रको धारण करनेवाली होती है माँ धरित्री-धरणी जन्मभूमि। इन सबकी सूत्रधार इस संपूर्ण विश्व को चलायमान करनेवाली है - विश्वशक्ति। जिससे सूरज उगता है, वायु बहती है, अग्नि तपती है उसे ही हम कहते है जगद्धात्री - बंगाल में तो जगद्धात्री पूजा यह विशेष महत्त्वपूर्ण पर्व है। जननी - धरणी -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जगद्धारिणी यह मातृत्व संकल्पना की त्रिधाराएँ है। संपूर्ण मानवी जीवन इस त्रयी से प्रभावित है। यह सृष्टि स्थिती संहार कारिणी है।

विश्व में माँ का करुणमय - दयामय स्वरुप सर्वमान्य है - परंतु उसका 'विनाशायच' यह रुप हिंदुत्व की अमोल देन है - एक ही शक्ति, कार्य बहुविध जैसे विद्युत् कुएँ से पानी खींचती है, गीझर में पानी गरम करती है, फ्रीज में ठंड, और वही विद्युत् शॉर्ट-सर्किट से क्षणकाल में सब कुछ राख के ढेर में रुपांतरित कर सकती है। उसी तरह जननी-जन्मभूमि-जगन्माता कार्य करती है। इस त्रिविध कार्य-शक्तियों का वर्णन करते हुए वंदे-मातरम् में कवि कहते हैं -

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी ।

जीवन में सर्वाधिक महत्त्व की है आकलन शक्ति - सूझबूझ शक्ति। मनुष्य प्राथमिक अवस्था में था तब निसर्ग के विविध रूपों से वह भयभित होता था - देखते देखते उसको बोध हुआ इस शक्ति से मेरा भी कुछ रिश्ता है। मैं तो उसी से जन्मा हूँ उसका ही अंश हूँ। इसके प्रति मेरा भी कुछ कर्तव्य है। रिश्ते-नाते का यह बोध हि है ज्ञान यही शक्ति वाणी - विद्यादायिनी कहलाती है।

मनुष्य जीवनयापन के लिये निरंतर आदान-प्रदान करता रहता है, विनिमय के इस साधन शक्ति को ही हम कहते है लक्ष्मी-कमला। इस प्राप्त संपत्ती के रक्षण के लिये संघर्ष करना पड़ता है - वही दंडशक्ति दुर्गा कहलाती है - जब कभी देवशक्ति असुरों के विनाश के लिये असमर्थ हुई उन्होंने इसी जगद्धारिणी का आवाहन किया, वे प्रगट हुई, उसने असुरों का विनाश किया।

वंदे मातरम् मे त्रिविध रूपों की साधना अंतर्निहित है, वह साधना ही यशस्वी जीवन की आधारशिला है। माँ मातृभूमि की साधना ही जगन्माता की साधना है। भगिनी निवेदिता कहती है, "देह और देव के बीच में देश है।" माँ और जगन्माता के बीच मातृभूमि है, जो राष्ट्र का आधार है। परंतु आज हम उसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूलते जा रहे है। दिन प्रतिदिन कृतज्ञता एवं कर्तव्य का भाव लुप्त हो रहा है। कृतघ्नता यह पशुता की ओर ले जानेवाली राह है, जो अंततः विनाशकारी सिध्द होगी।

हमारी आकांक्षा

अतः हम स्वदेश के लिये मातृत्व भाव जगायेंगे। फिर हमे प्रत्यय आयेगा हमारे नसनस मे आत्मविश्वास का लहू खेल रहा है। निस्वार्थ सेवा साधन की बहार आ रहीं है। माँ के चरणोपर सर्वस्वार्पण की भावना रक्त के हर बिंदु-बिंदु से अंकुरित हो रही है। पराक्रम शौर्य उफान रहा है। आनंदमठ के भवानंद जैसे हर व्यक्ति कहेगा, हम लोग दूसरी किसी माँ को नही मानते।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

हमारी न माँ है न पिता, न भाई, हमारी अगर कोई है तो वही 'सुजलां सुफला मलयज-समीरणा-शीतला, सस्यश्यामला भारत माँ।'

हम एक ही जानते है

माँ की संतान उसे माँ कह कर पुकारेंगे। तब वह प्रसन्न होगी। स्मित करेगी। वह फिरसे विभव शालिनी, गौरवशालिनी बनेगी। उसी रुप में जगद्धात्री का साक्षात्कार होगा। माँ के उस प्राणप्रिय रूप को प्रमाण करते-करते कोटी-कोटी कंठ कहेंगे - 'वंदे मातरम्'।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पांचजन्य दि. ६-१२-९२ के संस्करण से साभार)

किसी के विरोध के कारण अपनी परम्परा नहीं बदल सकते

- दिनेश भाई त्रिवेदी
सांसद (राज्यसभा), जद

किसी भी व्यक्ति को इन छोटी-छोटी बातों पर विवाद नहीं करना चाहिए कि 'वन्दे मातरम्' में फलीं पंक्ति आपत्तिजनक है या पहले 'जन गण मन' हो वन्दे मातरम् नहीं। लेकिन आज यदि ऐसी छोटी-छोटी बातों पर विवाद होता है तो इसका कारण है कि हमारे मन छोटे हो गए है। 'वन्दे मातरम्' के गीत को बचपन से हम आजादी की लड़ाई से जोड़कर देखते आ रहे हैं। उस समय यह गीत मौलाना अबल कलाम आजाद भी गाया करते थे, उन्हें तो इसमें कोई आपत्ति नजर नहीं आई। भई यह तो हमारी परम्परा रही है। हम देश को माता मानते हैं, माता का स्वरूप सबसे प्रिय होता है। माता के आहवान पर हम बलिदान दे सकते हैं, ऐसा हमें सिखाया जाता है, इसलिए हम माता की पूजा करते हैं। मैं नहीं समझता कि कोई भी सही सोच का आदमी माता की वन्दना का विरोध करेगा। कुछ लोग यदि विरोध करते भी है तो करने दीजिए। उनके विरोध के कारण हम अपनी परम्पराएं तो नहीं बदल सकते।

*****

मुस्लिम लीग के विरोध से कोई फर्क नहीं पड़ता

- चतुरानन मिश्र,
सांसद, भाकपा

हमको तो पता नहीं कि वन्दे मातरम् का विरोध हो रहा है! हम स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी हैं। हम तो बहुत बहले से 'वन्दे मातरम्' गाते आ रहे है। यह 'जन गण मन' तो आजादी के बाद आया है, राष्ट्र गीत कहिए या राष्ट्र गान पहले तो सब कुछ 'वन्दे मातरम्' ही था।

*****

व्हाट नॉनसेंस दिस दुर्गा एण्ड काली?

भाकपा नेता बलराम उवाच

दरअसल, उस दिन राज्यसभा की सामान्य कामकाज समिति की बैठक हो रही थी। राज्यसभा में भी लोकसभा की तरह 'वन्दे मातरम्' गाया जाए, जब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस पर चर्चा चली तो भाकपा नेता एन.ई. बलराम ने कहा 'व्हाट नॉनसेन्स इज दिस दुर्गा एण्ड काली' (दुर्गा और काली! यह क्या बकवास है?) श्री बलराम द्वारा इतना कहते ही माहौल गर्म हो गया। सूचना और प्रसारण मंत्री अजित पांचा ने श्री. बलराम को बताया कि वन्दे मातरम् में दुर्गा और काली शब्दों का प्रयोग मां दुर्गा और मां काली के नहीं किया गया बल्कि भारत माता के गुणों के वर्णन के लिए प्रतीक रूप में किया गया है। लेकिन श्री. बख्त अपने गुस्से को काबू में नहीं रख पाए। उन्होंने श्री बलराम को लताडते हुए कहा, 'आपको शर्म आली चाहिए, आप उस राष्ट्रीय गीत के लिए इतनी हल्की बाद कर रहे है, जिसको गाते-गाते देश को आजाद करने वाले शहीद हो गए। 'वन्दे मातरम्' से हमारी राष्ट्रीयता जुड़ी हुई है। देश की इज्जत और आबरू है 'वन्दे मातरम्' और आप इस पर ऐतराज कर रहे हैं। क्या यही सेकुलरिज्म है। आज ओवैशी और ये सुलेमान सेत, जो सन ४२ से पहले जिन्ना की मुस्लिम लीग के साथ थे और देश को बांटने का षड्यंत्र करते थे, आज 'वन्दे मातरम्' नहीं गाने की बात करेंगे और आप उसे धर्मनिरपेक्षता कहकर मान जाओगे? कुध अपने आपको सेकुलरिज्म (पंथनिरपेक्षता) का सर्टिफिकेट (प्रमाण पत्र) देने वाले, आप कम्युनिष्ट हिन्दुओं की सहनशीलता का फायदा उठाकर अब तक उनके खिलाफ बोलते रहे, कोई बाद नहीं। लेकिन आज आप 'वन्दे मातरम्' की भी खिलाफत कर रहे हो, शर्म आनी चाहिए।'

*****

आज 'वन्दे मातरम्' तो कल जय हिन्द का विरोध होगा

- शंकर दयाल सिंह
सांसद जनता दल

राज्यसभा की सामान्य कामकाज समिति की बैठक में जब कुछ लोगों ने 'वन्दे मातरम्' का विरोध किया तो जनता दल के सांसद श्री. शंकरदयाल सिंह ने गुस्से में कहा, 'आज ये लोग 'वन्दे मातरम्' का विरोध यह कहकर कर रहे हैं कि इसमें मातृभूमि की वन्दना की बाद है, कल यही लोग 'जय हिन्द' का यह कहकर विरोध करेंगे कि इसमें भारत की जय कही कई है। ऐसे कब तक चलेगा?' फिर उन्होंने भाजपा सांसद श्री विष्णुकान्त शास्त्री को सम्बोधित करते हुए कहा, 'शास्त्री जी आप 'वन्दे मातरम्' शुरु करें, हम आपके साथ गाएंगे।'

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट

ऋषि बंकिम चंद्र

- श्री. अरविन्द घोष

बहुत से लोग इस महान और प्राचीन राष्ट्र के अतीत वैभव की याद करके रुदन करते हैं। वे कुछ इस प्रकार चर्चा करते हैं मानो चिंतन और सभ्यता के प्रेरक प्राचीन ऋषि हमारे गौरव काल के चमत्कार थे और हम पतित लोगों और हमारे विपन्न वर्तमान में उनका पुनरागमन संभव नहीं है। यह एक भूल है, बारम्बार भूल है। हमारा देश शाश्वत है, लोग शाश्वत हैं, धर्म शाश्वत है, इनकी शक्ति, महानता, पवित्रता कभी-कभी धूमिल हो सकती है किन्तु कभी भी एक क्षण के लिये भी शेष नहीं होती। नायक, ऋषि, सन्त हमारी भारत की मिट्टी के सहज सुफल हैं कोई भी ऐसा युग नहीं है जिसमें ये पैदा नहीं हुए। उदाहरण के लिए हमें उत्तर काल के ऋषियों में उस व्यक्ति का नाम भी सम्मिलित करना चाहिये जिसने यह संजीवन मंत्र दिया जो नये भारत का सृजन कर रहा है - वन्दे मातरम् का मंत्र।

ऋषि संत से भिन्न होता है। सम्भव है उसका जीवन श्रेष्ठता, पवित्रता से या उसका चरित्र आदर्श से परिपूर्ण न हो। वह स्वयं क्या था इस कारण नहीं, बल्कि अपनी वाणी के कारण महान है। किसी राष्ट्र को या मानवता को एक महान या संजीवन सन्देश दिया जाना है, और ईश्वर ने एक मुख विशेष का चयन किया है जिस पर शब्दों और सन्देश का निर्माण होना है। एक महत्त्वपूर्ण दिव्य दर्शन का प्राकट्य होना है और प्रभु ने सर्व प्रथम उसकी आंखें खोली है उसे जो सन्देश प्राप्त हुआ है, जिस दिव्य दर्शन की उसे कृपापूर्ण झाँकी मिली है, वह अपनी समस्त शक्ति के साथ उसे विश्व के सामने उद्घोषित करता है, प्रेरणा के चरम क्षण में वह उसे ऐसे शब्दों में व्यक्त करता है जिनके उच्चारण मात्र से मानवों के अन्तरतम में स्पन्दन होने लगता है, मन स्वच्छ हो जाते हैं, हृदय अभिग्रहीत हो जाते हैं और वे ऐसे कर्म करने को प्रेरित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करते हैं जो सामान्य क्षणों में असम्भव ही होते। ये शब्द हैं मंत्र जिन्हे प्रकट करने को उसका जन्म हुआ और उस मंत्र का वह ऋषि हैं।

हम आज बंकिम के नाम की पूजा किस कारण करते हैं ? उसने हमें क्या संदेश दिया है या उसने कौन सा दिव्य दर्शन किया था, जिसे देखने में उसने हमारी सहायता की है। वह महान कवि था, सुन्दर भाषा का आचार्य था और कल्पना - जगत में सुन्दर लावण्यमयी स्वप्न - प्रतिमाओं का सृष्टा था, किन्तु आज बंगाल कवि, शैलीकार या उपन्यासकार के रूप में उसका सम्मान नहीं करता। संभव हैं कि भविष्य में साहित्य आलोचक 'कपालकुंडला', 'विषवृक्ष' और 'कृष्णकांतेर विल' को उसकी उत्कृष्ट कलाकृतियां मानें और सापेक्ष प्रशंसा के साथ 'देवी चौधुरानी', 'आनन्दमठ', 'कृष्णचरित्र' या 'धर्मतत्व' की चर्चा करें। फिर भी इन्हीं बाद में लिखी कृतियों का स्रष्टा बंकिम आधुनिक भारत के निर्माताओं की श्रेणी में रखा जायेगा। पूर्वोक्त बंकिम केवल कवि और शैलीकार था - दूसरा बंकिम ऋषि और राष्ट्र निर्माता था।

किन्तु कवि और शैलीकार के रूप में बंकिम ने एक चरम राष्ट्रीय महत्व का काम किया जो सारे भारत के लिये या केवल अप्रत्यक्षरूप से समूचे भारत के लिये नहीं, बल्कि बंगाल के लिये था जिसकी नियति थी भारत का नेतृत्व, राष्ट्रीय विकास में अग्रणी की भूमिका। अपने विकासशील नव रूप में बिना विचारों और भावनाओं को स्थायी रूप देने वाली भाषा के, जो नयी प्रेरणा को तीव्र गति और उल्लास सहित सभी की चेतना में बैठा सके, तदर्थ अभिव्यक्ति के संतोषप्रद माध्यम को पाये बिना कोई भी राष्ट्र विकसित नहीं हो सकता। यह बंकिम द्वारा भारत की पहली सेवा थी कि उसने अग्रणी जाति को ऐसा पूर्ण और संतोषप्रद माध्यम प्रदान किया। बंगवाणी की पवित्रता को दूषित करने का उस पर दोषारोपण किया गया हैं, किन्तु प्राचीन कवियों की शुध्द बंगला केवल रूढ़ और अप्रगतिशील बंगाल के अलावा और कुछ अभिव्यक्त न कर पाती। जाति बढ़ रही थी, बदल रही थी और उसे परिवर्तन और परिवर्द्ध को अभिव्यक्त कर सकने वाले माध्यम की आवश्यकता थी। उसे पंडितों की श्रेष्ठ साहित्यिक बंगला के स्थान पर मिश्रित लोकभभाषा को जो न तो पांडित्यपूर्ण भाषा थी, न अच्छी लोक भाषा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थापित करने का दोषी ठहराया गया है। किन्तु पंडितों की बंगाली की हठीली अनन्य बोझिलता ने विकासशील बंगाल-प्रतिभा की प्रचुरता, विविधता और मुक्तदोलिता को विदाई दे दी होती। सम्मानपूर्ण प्रबन्धों और पांडित्यपूर्ण रचनाओं के सृजन के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिये भी हमें एक भाषा की आवश्यकता थी। हमें एक ऐसी भाषा की जरूरत थी जिसमें संस्कृत की शक्ति और कमलकांत सौंदर्य के साथ देशी भाषा की ऊर्जस्विता और उत्साह हो, जिसके एक छोर पर चरम देशीय गतिशीलता हो तो दूसरे पर गुंजायमान गुरुता। बंकिम ने हमारी आवश्यकता का अनुमान किया और उसे पूर्ण करने को अनुप्रेरित हुआ, बंगाल की आत्मा अपने आपको अभिव्यक्त कर सके उसने हमें ऐसा एक माध्यम दिया।

जैसे उसने देश के भविष्य के लिये भाषाई आवश्यकता की परिकल्पना की, उसी प्रकार उसने उसकी राजनीतिक आवश्यकताओं का भी अनुमान किया। हमारे इस महान प्रथम विधिवेत्ता ने अपने समय में चल रहे राजनीतिक आन्दोलन की निरर्थकता और अनुपयोगिता को समझा और अपने 'लोकरहस्य' तथा 'कमलाकान्तेर दफ्तर' के निर्मम व्यंग द्वारा उसका पर्दाफाश किया। किन्तु मात्र विध्वंसात्मक आलोचना मात्र से वह सन्तुष्ट नहीं था, देश के उद्धार के लिये किस चीज की जरूरत है इसके बारे में उसकी एक अस्त्यात्मक दृष्टि थी। उसने देखा कि ऊपरी ताकत का सामना नीचे से अधिक शक्तिशाली प्रततिकारक ताकत से करना चाहिये। उसने हमें निर्देश दिया कि कुत्ता आन्दोलन के तरीके छोड़ कर सिंहवृत्ति अपनाओ। उसके दिव्यदर्शन में माँ ने अपने द्विसप्त कोटि हाथों में तीक्ष्ण खड्ग धारण किया है संन्यासिनी का खप्पर नहीं। 'आनन्दमठ' और 'देवी चौधुरानी' में प्रस्तुत चरित्रों में आवरण के अन्दर से उन्होंने इसी शक्ति के कठोर पाठ का प्रचार किया है। इस भौतिक शक्ति के पीछे खड़ी रहने वाली नैतिक शक्ति का भी उन्हें प्रेरणाप्रद निर्दोष दर्शन मिला था। उन्होंने देखा था कि नैतिक शक्ति का प्रथम तत्व 'त्याग' होना चाहिए देश के लिये सम्पूर्ण आत्मनिष्ठा। उनके मातृभूमि के कार्यकर्ता और सैनिक राजनीतिक बैरागी हैं, जिनके मन में माँ के प्रति अपने कर्तव्य के अलावा और कोई विचार नहीं है और जो सबब कुछ कम प्रिय तथा कम मूल्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का मान कर अपने पीछे छोड़ आये हैं और मां का काम होने के बाद ही वे उन्हें पुनः प्राप्त करेंगे। जो भी अपने आपको या पत्नी या बच्चे या सम्पत्ति को देश से अधिक प्यार करता है वह दरिद्र और अधूरा देशभक्त है और उसके द्वारा महान कार्य सम्पादित नहीं हो सकते। पुनः उन्होंने देखा कि नैतिक शक्ति के लिये आवश्यक दूसरा तत्व आत्मानुशासन और संगठन होना चाहिये। इस सत्य की अभिव्यंजना उन्होंने देवी चौधुरानी के कार्य हेतु विशद् प्रशिक्षण में, 'आनन्दमठ' के संगठन के कठोर नियमों में, और इन पुस्तकों में वर्तमान आदर्श संगठन के चित्रों में की है। अन्त में उन्होंने देखा कि नैतिक शक्ति का तृतीय तत्व देशभक्ति के कार्यों में धार्मिक भावना या समावेश होना चाहिये। देशभक्ति का धर्म ही बंकिम के कृतित्व का प्रधान विचार बिंदु है। इसका पूर्वाभास 'देवी चौधुरानी' में वर्तमान है। 'धर्मतत्व' में विचार धारा और 'कृष्ण चरित' में आदर्श बहुमुखी कर्मयोग का चित्र अंकित हैं और इसका लक्ष्य बिंदु है अपने देश या अपनी जाति के लिये कार्य करता। 'आनन्दमठ' में यही विचार सम्पूर्ण पुस्तक का मूल स्वर है और संयुक्त भारत का राष्ट्रगान बन गये उस महान गीत में इस विचार को संगीतमय पूर्ण अभिव्यंजना मिली है। बंकिम की अपने देश के लिये की गयी दूसरी महान् सेवा यह है कि उसने देश को मुक्ति का मार्ग प्रदर्शित किया और उसे देशभक्ति का धर्म प्रदान किया। इस नयी चेतना के जो राष्ट्र को पुनरुत्थान और स्वातन्त्र्य की ओर ले चल रही है, वे ही प्रेरक और राजनीति गुरु हैं।

बंकिम की तीसरी और अन्यतम राष्ट्रसेवा यह है कि उसने हमें अपनी माँ का दर्शन कराया। मातृभूमि की नयी बौद्धिक कल्पना अपने आप में कोई प्रबल प्रेरक शक्ति नहीं है और स्वतंत्रता की वांछनीयता की स्वीकृति मात्र कोई प्रेरक उद्देश्य नहीं है। आज बहुत कम भारतीय है, राजनीतिक विचारों से चाहे वे राजभक्त, नरमदल के या राष्ट्रवादी हो, जो यह नहीं समझते कि देश का उन पर कुछ दावा है या कि अमूर्त रूप में स्वतंत्रता वांछनीय वस्तु है। किन्तु हम में से अधिकतर लोग, जब प्रश्न देश के दावे के मुकाबले दूसरे दावों का उठता है तो व्यवहार में हम देश की सेवा को वरीयता नहीं देते, और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ड़ाँ बहुत से लोग भले ही यह चाहते हों कि देश स्वतन्त्र हो जाय पर कुछ लोगों उसे सम्पादित करने का संकल्प होता है। अनेक चीजें ऐसी हैं जिन्हें हम धिक प्रिय मानते हैं, और स्वतन्त्रता के संघर्ष में या उसकी उपलब्धि में इनके तरे में पड़ जाने का हमें डर लगता है। जब जब तक मातृभूमि धरती ा एक टुकड़ा या जन समूह मात्र से अधिक कुछ हो कर मन ो आँखों के आगे साकार नहीं होती, जब तक वह दिव्य तृशक्ति मन पर छा जाने वाली, हृदय को बांध लेने वाली न्दर्यमयी के आकार में रूपायित नहीं होती, तब तक ये क्षुद्र मन ौर आशाएँ अपनी माँ और उसकी सेवा के चित्ताकर्षक नोभाव में डूब नहीं पाते। ऐसा होता है तब मरणासन्न राष्ट्र की रक्षक और मत्कारी देशभक्ति का जन्म होता है। यह दिव्यदर्शन कुछ लोगों को सौभाग्य मिलता है और वे इसे दूसरों को दिखाते हैं। बत्तीस वर्ष पूर्व बंकिम ने अपना ह महान गीत लिखा था और कुछ ही लोगों ने उसे सुना, किन्तु लम्बी हनिद्रा से आकस्मिक जागरण के क्षण में बंगाल के लोगों ने सत्य के लिये र-उधर देखा और उसी सौभाग्य क्षण में कोई "वन्दे-मातरम्" गा उठा। मंत्र या गया और एक दिन में समूचा राष्ट्र देशभभक्ति के धर्म ा अनुयायी बन गया। माँ ने अपनी दिव्य दर्शन दिया था। जहाँ ोगों को वह दर्शन मिला, फिर आराम नहीं था, शांति नहीं थी, ब तक मंदिर बन कर तैयार न हो जाय, मूर्ति प्रतिष्ठापित न जाय और बलि अर्पित न कर दी जाय, पुनः निद्रा की बात नहीं। एक महान राष्ट्र जो यह दिव्य दर्शन पा चुका है पुनः भी भी किसी विजेता के चरणों के नीचे नहीं आ सकता।

१७ वीं अप्रैल १९०७
(अनुवाद : भानु मेहता)

****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बंकिमचंद्र जीवनपट

जन्म	-	काठालपाडा - बंगाल
जन्म २६ जून १८३८	-	मृत्यु - ८ अप्रैल १८९४
सन् १८५८	-	बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण
सन् १८५८	-	डिप्टी मॅजिस्ट्रेट - डिप्टी कलेक्टर
सन् १८६९	-	बी.एल्. परीक्षा उत्तीर्ण
सन् १८९१	-	स्वेच्छा सेवानिवृत्ति
सन् १८९२	-	रायबहादूर उपाधि
		सी.आय.ई. उपाधि
		ऋषि बंकिमचंद्र - सर गुरुदास बॅनर्जी

साहित्य लेखन -

उपन्यास :-

* दुर्गेशनंदिनी * मृणालिनी * विषवृक्ष
* चंद्रशेखर * सीताराम * देवी चौधुराणी
* राजसिंह * कपाल कुंडला * इंदिरा
* आनंदमठ * युगलांगुरीय * राधारानी.
* रजनी
* विविध प्रबंध भाग - १
  भाग - २
* कृष्ण चरित्र * कमलाकांतेर दप्तर
* बंग दर्शन का प्रकाशन १८७२ सं प्रारंभ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् में बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा)

वंदे मातरम् के 'त्वं ही दुर्गा दशप्रहरण धारिणी'; तथा 'कमला, कमलदल विहारिणी' इन विशेषणों से मुस्लीम बांधवों को मूर्तिपूजा की गंध आने लगी और इस गीत का अवमान करना, अवहेलना करना प्रारंभ हुआ। व्यथित होकर मौलाना रेजाउल करीमजी ने लेख लिखा। वह पाठकों के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है - करीमजी जैसा तर्क किसीने नहीं दिया था। आपने लिखा है -

'वन्दे मातरम् जैसे निर्दोष और सर्वांग सुन्दर गीत को भी साम्प्रदायिक कहते हैं, पर जिनके पास उदार दृष्टि है, उन्हें वन्दे मातरम् गीत को समग्र दृष्टि से देखना चाहिए। वे देखेंगे कि उसमें बुतपरस्मी का कहीं दोष नहीं है। हमें यह देखना है कि इस्लाम किसको बुतपरस्ती कहता है और इसकी सीमा कहां है।'

इतिहास

प्रथम युग में अरब के कोरेश घोर बुतपरस्त थे। उनकी बुतपरस्ती को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के कठोर कानून या नियम बनाने की आवश्यकता हुई थी। वह यों था - कोई मूर्ति या प्रतीक बनाकर उसे ईश्वर या खुदा मानकर पूजा करने की प्रथमा उन लोगों ने स्वीकार नहीं की। सिर्फ यही नहीं, किसी सृष्ट जीव को ईश्वर या खुदा के रूप में विशिष्ट मानने की मनाही हो गई। खुदा के सामने जैसी प्रार्थना की जाती है, सृष्ट जीव के निकट वैसा नहीं किया जा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकता। वर्तमान स्थिति में यही है इस्लाम की दृष्टि में बुतपरस्ती। खुदा सर्वशक्तिमय है - इस विश्वास को चोट न पहुंचे तो ऐसा कोई भी काम बुतपरस्ती के अंतर्गत नहीं है।

मां

इसके बाद एक प्रश्न और उठता है, देश को 'मां' कहकर संबोधन किया जा सकता है या नहीं? माननीय मौलाना अकरम खां साहब ने वन्दे मातरम् गीत का विरोध किया है, लेकिन उनकी मुख्य कृति 'मोस्तापाचारित' में पृष्ठ १५७५ पर जहां अरब देश का भौगोलिक वर्णन है, वहां पहले ही लिखा हैं -

धरियाछे वक्षे मा गो कार पद लेखा
हे अरब मानवेर आदि भूमि।

अर्थात् कवि ने अरब को 'मां' कहकर संबोधन किया है।)

उक्त कविता ने लेखक मुसलमान हैं और जिन्होंने उद्धृत किया है, वे भी एक विख्यात मौलाना हैं। देश को मां कहना अगर आपत्तिजनक होता तो वे लोग ऐसा कभी नहीं लिखते या मौलाना साहब उद्धृत न करते।

देश को 'मां' कहकर संबोधन करने की प्रथा अरबी-फारसी के अनेक कवि तथा लेखकों की रचनाओं में प्राप्त है। अगर इन सभी शब्दों का प्रयोग आपत्तिजनक होता तो बंगला ही क्यों, विश्व की किसी भी भाषा की काव्यकला अचल हो जाती। अरबी और फारसी साहित्य के अनेक मुसलमान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेखकों ने बुतपरस्ती के भाव वाली अनेक कविताएं लिखी हैं। इक़बाल, हाफिज, रूमी, उमरखैयाम भी बाकी नहीं बचे हैं। उम्मुकोरा (ग्राम्य जननी), उम्मुल मोमेनीन (विश्वासियों जी जननी) और उम्मुल केताव (ग्रंथ जननी) आदि शब्द उल्लेखनीय हैं। वन्दे मातरम् भी वैसा ही शब्द हैं।

बुतपरस्ती समझकर जो वन्दे मातरम् जैसे सर्वांग सुन्दर संगीत को नापसंद करते हैं, मेरे विचार से उनका उद्देश्य पवित्र नहीं है। 'वन्दे मातरम् की भाषा तो बहाना मात्र है। असली कारण राजनीतिक है। प्रकृतिस्थ होकर किसीने भी इस मामले पर गौर नहीं किया है, क्योंकि इसके लिए उदार दृष्टि, संस्कार-मुक्त-हृदय और अन्य के प्रभाव से मुक्त स्वाधीन चिंतन की आवश्यकता हैं।

इस्लाम के किसी आदर्श की दुहाई देकर वे कहते हैं कि वन्दे मातरम् बुतपरस्ती के अभाव से परिपूर्ण है। मैं यह पहले ही कह चुका हूं कि इस देश में रहते हुए इस देश की भाषा में कहने पर शब्दों को साधारण अर्थों में ग्रहण करना पड़ेगा। प्रचलित अर्थ स्वीकार करने पर वन्दे मातरम् गीत किसी भी एकेश्वरवादी की दृष्टि में आपत्तिजनक नहीं हो सकता।

विश्लेषण

सबसे पहले वन्दे मातरम् ध्वनि पर विचार किया जाए। इसका अर्थ स्पष्ट है - हे देश माता, मैं तुम्हारी वंदना करता हूं। उर्दू के लोगों ने इसका अनुवाद यों किया हैं - 'ऐ मादर, तुझे सलाम करता हूं।' अर्थात् हे माता, तुझे सलाम करता हूं। इसमें आपत्ति करने लायक तो कुछ भी नहीं हैं। मुल्क को आजाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करना हमारा लक्ष्य हैं। इस लक्ष्य के लिए पहला काम है कि देश के प्रति आम लोगों के मन में प्यार उत्पन्न किया जाए। देश को प्यार करने पर उसका सौंदर्य, महिमा और श्रेष्ठता क्या-क्या हैं, इसे ध्यान में लाना होगा। बार-बार देश की वंदना करना, उसका अभिवादन करना या सलाम करने को खुद मी मन करेगा। 'वन्दे मातरम् इवादत या ईश-पूजा का गीत नहीं है। इसमें यह नहीं कहा गया है कि देश, तुम्हें साप्टांग प्रणिपात (सिजदा) करता हूं अथवा ईश्वर के निकट जो प्रार्थना की जाती है, देश-माता के निकट उस प्रकार की कोई प्रार्थना भी नहीं की गई है। वन्दे मातरम् हृदय में ऐसी भावना का उद्रेक करता है जो सभी सम्प्रदायों के हृदय में गहराई तक स्पर्श करती है।

'सुजलां सुफलां' से प्रारंभ कर परवर्ती कई छंदों के प्रति दृष्टिपात करने पर क्या ज्ञात होता हैं ? वन्दे मातरम् कहते हुए जिस देश का अभिवादन किया गया है, जिस देश की वंदना की गई है, जिस देश को याद किया गया है, इन शब्दों में उसके बाह्य रूपों का वर्णन किया गया है। यही है मेरा देश, जो देश सुजलां-सुफलां है, जिस देश का प्रत्येक प्रांतर मलयानिल से सुशीतल है, जिसका आकाश मधुर है, बाताश मधुर है, जिस देश की भूमि द्रुमदलों से सुशोभित है, हम अपनी उसी भूमि को सलाम करते हैं, अभिवादन करते हैं, उसकी वंदना करते हैं। हमारा यह पुण्य देश इस तरह सुरक्षित है कि वह दुश्मनों का मुकाबला कर सकता है। वह इस देश की स्वाधीनता को हमेशा क्षुब्ध रखेगा।

इस प्रकार देश की शक्ति, सौंदर्य और महिमा के वर्णन में कौन-सा दोष देखा जा सकता है, यही मेरी समझ में अभी तक नहीं आया। नदी, पानी, पेड़ों के फल, जमीन में उगी घास, चिड़ियों के कलरव आदि में कहां बुतपरस्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की गंध है? परन्तु वस्तुतः वन्दे मातरम् गीत के प्रथम दो छंदों में केवल मातृभूमि की वंदना है। प्रत्येक पंक्ति स्वदेश प्रेम, उद्दीपन और जीवनीशक्ति वृद्धि करने लायक उपयोगी शब्दों द्वारा ग्रथित हुई है। इसकी झंकार अपूर्व शब्द निर्वाचन और अनवद्य सुर किसी भी श्रोता को मुग्ध करेंगे, धमनियों में उत्साह और प्रेरणा की अनल उत्पन्न करेंगे।

अगला छंद

अब हम अंतिम छंदों पर विचार करें। 'त्वं हि दुर्गा दश प्रहरणधारिणी' को भ्रमवश हिंदू देवियों - दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती - की स्तुति समझ लिया गया है, पर उसमें ऐसी बात नहीं है। यह हिंदू देवी-देवताओं की स्तुति नहीं है बल्कि प्रकारांतर से बुतपरस्ती के प्रति वक्रोक्ति है - हिंदू देवी-देवताओं के प्रति व्यंग्य है। इस गीत में देश-माता को देवी-देवता से ऊंचा स्थान दिया गया है। हिंदू जिन देवी-देवताओं दुर्गा, कमला, सरस्वती आदि की पूजा करता है, इस गीत में कहा गया है कि इन सबसे कहीं अधिक बड़ी है - देश-माता। देवी-देवताओं की अपेक्षा हमारे निकट देश-माता बड़ी है। देश ही मेरी दुर्गा है। देश ही मेरी लक्ष्मी है, देश ही मेरी सरस्वती है। साफ-साफ शब्दों में सप्तकोटि कंठ से घोषणा की गई है कि यह देवी-देवता मेरे निकट कुछ भी नहीं है, देश ही मेरे निकट सब कुछ है, सम्पूर्ण साधना का श्रेष्ठ धन है।

वन्दे मातरम् के प्रति आपत्ति पूर्णतः अयोक्तिक। बुतपरस्ती में विश्वास रखने वाले, तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं की पूजा करने वाले हिंदू अगर इस गीत के प्रति आपत्ति करते तो एक बात होती। वे कह सकते थे कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्या हमारे देवी-देवता कुछ नहीं हैं? दुर्गा कुछ नहीं है? देश ही सब कुछ है? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। देश दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती से बड़ा नहीं हो सकता। लेकिन हिंदुओं ने कोई आपत्ति नहीं की। इस गीत में वे देश-माता को दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती से ऊंचे सिंहासन पर बैठाकर उसकी वंदना करते हैं। यह बात आनंदमठ के नायक महेन्द्र के आचरण से समझ में आ जाती है। महेन्द्र के सामने जब इस मां का वर्णन किया गया तब वह चकित रह गया। कहा, 'यह तो देश है, मां नहीं।'

हिंदुओं के ज्ञान, विश्वास, संस्कार और धार्मिक मतानुसार महेन्द्र ने ठीक प्रश्न किया था। उत्तर में भवानंद ने कहा, 'हां, यही मेरी मां है, जन्मभूमि ही मेरी मां है, अन्य देव-देवी, अन्य मां को हम नहीं मानते, हम लोगों का अन्य धर्म नहीं है जाति नहीं है एकमात्र जननी जन्मभूमि ही हम लोगों के लिए सब कुछ है।' वास्तव में जो लोग आजादी के लिए सर्वस्व न्यौछावर करते हैं, उनके निकट देश ही सब कुछ है। देश के लिए वे मौत को भी चुनौती दे सकते हैं।

वन्दे मातरम् का मूल उद्देश्य बुतपरस्ती की जय कहना नहीं है, बल्कि बुतपरस्तों की देवियों दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की अपेक्षा देश-माता बड़ी है, इस गीत में यही बताया है।

दुर्गा, कमला और सरस्वती शब्दों से चौंकने से कहीं काम चलता है? हमें यह देखना होगा कि ये शब्द-समूह पूजा के आस्पद भाव में वर्णित है या नहीं? शब्द-प्रयोग इतिहास का अध्ययन करने पर ज्ञात होगा कि संसार की प्रत्येक भाषा में इस तरह की बुतपरस्ती वाले शब्दों का प्रयोग होता है। यहां तक कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुसलमान साहित्यिकों ने भी ऐसा किया है। क्यूपिड को प्रेम का देवता, जौहरा की संगीत की देवी, अजराइल को मौत के फरिश्ते तथा मिकाइल को वर्षा के फरिश्ते के रूप में मुसलमानों ने स्वीकार किया है। क्यूपिड, जौहरा, अजराइल, मिकाइल शब्दों के प्रयोग से अगर कोई बुतपरस्त नहीं होता तो दुर्गा, कमला, वाणी शब्दों को उपमा के रूप में करने से बुतपरस्ती नहीं हो सकती।

वन्दे मातरम् गीत को समग्र रूप से पढ़ने पर साफ समझ में आ जाता है कि देश-धर्म की श्रेष्ठता को प्रतिपन्न करने के लिए ही उसकी रचना हुई थी। उसका मुख्य उद्देश्य है - आम लोगों में देश-प्रेम जाग्रत करना। वन्दे मातरम् का यह उद्देश्य काफी हद तक सफल हुआ है, यह बात हम अनायास कह सकते हैं। भवानंद की तरह आज भारत के हिन्दू, मुसलमान, करोड़ों नर-नारी दहाड़कर कहना सीख गये हैं, हम लोग अन्य मां को नहीं मानते हैं, हम मानते हैं देश-माता को, देश-माता ही हमारे लिए सब हैं, इससे बढ़कर अन्य कोई देवता हमारे निकट नहीं है। जब तक मुल्क आजाद नहीं होगा तब तक देश ही मेरा धर्म, देश सेवा ही मेरी सबसे बड़ी साधना होगी। इसके अलावा अन्य किसी साधना को हम नहीं जानते, नहीं समझते और न मानते हैं।' वन्दे-मातरम् गीत यही कहता है, यही कहा है और वह भी स्पष्ट तथा द्विविधाहीन भाषा में।

इसके पूर्व भारत के प्रत्येक सभा में यह गीत गया जाता था और वन्दे मातरम् ध्वनि भी सर्वत्र की जाती थी। मगर यह गीत इस्लाम विरोधी होता तो खिलाफत-युग में मौलाना आजाद, मौलाना मुहम्मद अली, शौकतअली, जाफर अली, हसरत मोहानी आदि नेता इसके विपरीत जरूर बोलते। जिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सभाओं में ये लोग मौजूद रहते थे और भाषण देते थे, तब बिना किसी प्रकार का प्रतिवाद किए उक्त संगीत के सम्मानार्थ खड़े होते थे। मुसलमान परिपूर्ण ईमान लेकर अल्लाह ताला में प्रगाढ़ विश्वास रखते हुए वन्दे मातरम संगीत गाते थे। ऐसा करने से उनके ईमान में जरा भी ठेस नहीं पहुंचती थी।"

१. बंकिमचन्द्र ओ मुसलमान समाज, श्री. मौलाना रेजाउल करीम, प्रथम संस्करण, पृष्ठ ९ से १०२ तक; पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित १८ मई, १९४४.

****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विदेशों में वंदे मातरम्

वंदे मातरम् की उस बेला में भारतीय जहाँ कहीं भी गये वंदे मातरम् साथ लेकर गये।

तुर्कस्तान

तुर्किस्तान में अदन शहर में लगभग ५० हिंदी मुस्लिम रहते थे। बंग मुस्लिमों की वहाँ मस्जिद थी। उसपर तुर्की भाषा में वंदे मातरम् लिखा हुआ था। मस्जिद पर हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय झंडा बड़ी शान से लहर रहा था। प्रत्येक शुक्रवार मस्जिद की सफाई की जाती थी। प्रथम वंदे मातरम् कहकर बाद में नमाज पढ़ते थे। वहाँ के विद्यालय के बच्चे आते-जाते मस्जिद पर लिखे वंदे मातरम् शब्द पढ़कर एक दूसरे से वंदे मातरम् कहते थे।

विएना

जन प्रवासी रामनाथ विश्वास प्रवास के चक्र में विएना पहुँचे। वहाँ अमेरिकन असोसिएशन में भाषण करने का सुअवसर उन्हें मिला। भाषण समाप्त होते ही अमेरिकन लोगों ने हिप-हिप हुर्रे तथा हिन्दी लोगों ने ' वंदे मातरम् ' घोष कर आनंद व्यक्त किया।

अनंतनाग में भी (चीन) एक वृध्द पंजाबी मुसलमान रहते थे। हिन्दुस्तान लौटने के लिये उनका हृदय तड़प उठा। गदर पार्टी के सदस्य होने के कारण वे स्वदेश नहीं आ सकते थे। अपनी माँ के गोद में लोट-पोट होने के सौभाग्य से वंचित थे। जैसे-जैसे बुढ़ापा बढ़ रहा था वैसे व्याकुलता भी बढ़ रही थी। एक दिन चीनी लोगों का राष्ट्रीय जुलुस निकला था। वह देखते-देखते वृध्द महानुभाव तीसरी मंजिल से ' वंदे मातरम् ' का उद्घोष करने लगा।

आप ऐसा क्यों कर रहे हो? रामनाथ विश्वास ने उनसे प्रश्न पूछा।

मेरा देश हिन्दुस्थान है। स्वदेश जाने के लिये मेरा मन व्याकुल है - जब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जब ये इच्छा प्रबल होती है, मन अधीर बनता है तब वंदे मातरम् यही एक देववाणी मुझे समाधान देती है, मेरे मन की आग शांत करती है।

तेहरान

रामनाथजी के सभी अनुभव बड़े रोचक हैं। तेहरान में शिया जाति के मुस्लिम से उनकी भेंट हुई ये सज्जन लखनऊ के थे। अपने व्यवसाय में उन्हें काफी नुकसान पहूँचा था। रामनाथजी एक रात उनके साथ रहे। रात को रास्ते से एक जुलुस राष्ट्रीय गीत गाते जा रहा था। ये भी उत्स्फूर्तता से अपना राष्ट्रगीत अर्थात् वंदे मातरम् गाने लगे। दो तीन दिन पश्चात् उसने बताया हिन्दी लोगों का ये इरानी, तुर्की, अरब द्वेष करते हैं। भारतीयत्व प्रकट करने के लिये मेरे पास वंदे मातरम् के अलावा कोई शब्द नहीं है। बाबूजी ये तोंदिल व्यापारी फिर ये मुस्लिम हों, पारसी हों उन्हें मजदूरों के हित की परवाह नहीं उनका केवल पैसा ही अल्लाह है। वंदे मातरम् की याद कभी नहीं आयेगी परंतु हिन्दु मजदूर दुनिया में जहाँ भी पहुंचा तो उसके साथ वंदे मातरम् अवश्य पहुंचेगा।

बगदाद

बगदाद के अनुभव - रामनाथजी सैर करते-करते बगदाद गये। सायकल से इधर-उधर घूमते-घूमते उन्हें सूरत का व्यापारी मिला उसकी दुकान थी।

माखन खाओगे भैय्या ? उसने प्रश्न पूछा आप क्या मूल्य लेंगे ये पहले पता तो चले ? रामनाथजी जेब टटोलते हुए बोले -

वंदे मातरम् भैय्या मैं आप से एक पैसा नहीं लूँगा। अरब लोगों ने उसे बहिष्कृत किया था आप हिन्दुस्तानी हैं, मैं भी हिन्दुस्थानी हूँ।

इधर-उधर की बातें हुई माखन खाना हुआ और जब वे लौटने लगे तो सलाम-आलेकुम के स्थान पर वंदे मातरम् कहकर उसने बिदाई दी।

इराक

इराक में भी यही स्थिति थी। रेलगाड़ी में कुछ हिन्दी फकीरों से उनकी भेंट हुई। वंदे मातरम् कहते हुए उन्होंने भिक्षा मांगी। वे बड़े अचंभित हुए। फकीर भी वंदे मातरम् बोल रहे हैं। थोड़ी भिक्षा देकर उनके भाव जानने की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोशिश की - सहानुभूति के उन शब्दों से अंतःकरण की वेदना द्रवित हुई और मानों हृदय के पुराने घाव फिर से हरे हो गये। वे बोले भाई जी यहाँ के मुसलमान हिन्दी मुस्लिमों का अत्यधिक द्वेष करते हैं। हम इराक में 'अलीक वास्ते' यह कहकर भीख मांगते थे परंतु ये हमें भिक्षा तक देने के लिये तैयार नहीं। उनसे बदला लेने के लिये हमने भी अलीक के वास्ते बोलने की यहाँ की पध्दति छोड़कर वंदे मातरम् गाने की अपनी पध्दति शुरु कर दी।

भावना फिर वह आनंद की हो दुःख की, वीरता की, बदला लेने की हो - इन सभी भावनाओं का प्रगटीकरण करनेवाला एक ही शब्द है - वंदे मातरम्।

--*

विवाद मत - खडा करिए

२२ नवम्बर को लोकसभाध्यक्ष ने सभी दलों के नेताओं की बैठक बुलाई। (संसद के प्रत्येक सत्र से पूर्व लोकसभाध्यक्ष सत्र के प्रमुख मुद्दोंपर चर्चा के लिए इस तरह की बैठक बुलाते है)। इस बैठक में इन्द्रजीत गुप्त, चन्द्रजीत यादव आदि ने यह मुद्दा उठाया और कहा, 'हालांकि हम लोग उस बैठक में (जिसमें निर्णय लिया गया) शामिल थे लेकिन तब इसकी गम्भीरता हमारे दिमाग में नहीं आई थी।'

लोकसभाध्यक्ष शिवराज पाटिल ने कहा, 'यह फैसला सर्वसम्मति से पारित हुआ था और बैठक से पूर्व इस विषय से सम्बन्धित कारवाई और पत्र आदि आप को भेज दिए गए थे। आप लोग गम्भीर नहीं थे यह आप इस बैठक में तो कह सकते है लेकिन जनता के बीच ऐसा भला कैसा कहेंगे। भारतीय संसद में राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान के गाए जानेपर विवाद की बात जब सब को मालूम होगी तो पूरे देश में और विदेशोंमें इस पर क्या प्रतिक्रिया होगी? इसलिए मैं हाथ जोडकर सबसे प्रार्थना करता हूँ कि इस विषय पर कोई विवाद मत खडा करिए।

(पांचजन्य दि. ६-१२-९२ के संस्करण से साभार)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनगणमन और रविंद्रबाबू

रविंद्रबाबू रचित जनगणमन यह राष्ट्रगीत बना। यह कैसी संजोग की बात है कि दोनों गीत राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान के जन्मदाता बंगाल के। दोनों भी विचार-प्रवर्तक, साहित्यिक। रविन्द्रबाबू ने 'शांतिनिकेतन' में स्वतंत्र शिक्षा पध्दति का आवासी-विद्यालय प्रारंभ किया। अनुशीलन समिति जैसी क्रांतिकारी संगठन का शुभारंभ उनके ही घर में हुआ। श्रेष्ठ प्रतिभा के धनी होने के कारण उन्हें नोबल पारितोषक प्राप्त हुआ। उनके गौरव से वे नहीं भारतमाता गौरवान्वित हुई। यदि वंदे मातरम् के बारे मे कोई अकारण बावेला न खड़ा होता तो रविन्द्रबाबू की यह प्रतिमा हमारे मन में अक्षुण्ण रहती।

१९३७ में वंदे मातरम् का विवाद प्रारंभ हुआ। राष्ट्रगीत के लिये बनायी गयी समिति के वे प्रमुख थे उनके सलाह से ही निर्णय लेना था। एक बार रविबाबू ने अपना अभिमान प्रकट किया - "वंदे मातरम् ध्वनि-इतिहास के लिये अगर कुछ कांट-छांट कर लिया गया तो कोई हर्ज नहीं है।"

रविबाबू का अभिमत प्रकट होते ही जन-जन की जुबान मानों जहर उगालने लगी। बंगाल के ख्याति प्राप्त लेखक श्री. नंदगोपाल सेन गुप्त का वक्तव्य इस दृष्टि से पर्याप्त स्पष्ट है। उन दिनों में वे रविबाबू के साहित्यिक सचिव थे। वे लिखते हैं — पर इसका परिणाम सुनकर आप सभी चकित रह जायेंगे। रविंद्रनाथ के विरुध्द सारा देश उठ खड़ा हुआ। उनके बारे में यह कहा गया कि चूंकि वे ब्राह्म है, इसलिये दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी आदि देवताओं का उल्लेख उन्हें मान्य नहीं हुआ। उनकी इच्छा है कि वंदे मातरम् गीत को हटाकर उनके गीत को मान्यता दी जाये। साथ ही यह भी प्रचारित किया गया कि जन-गण-मन गीत तो सम्राट पंचम जॉर्ज के अभिषक के अवसर पर दिल्ली दरबार के उपलक्ष्य में लिखा गया था। रविबाबू इस अफवाह के कारण बड़े क्षुब्ध हुएँ और उन्हें इसके विरुध्द लेखनी उठानी पड़ी।"

लोगों का यह अभिमत बनने के आधार ऐसे कुछ तत्कालीन वक्तव्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपलब्ध है - (1) Official report of the 28th session of the congress.

The proceddings commenced with a patriotic song compared by Babu Ravindranath Tagore. Offer this reports of messages received from friends & passing of the loyalty resolution moved from the chair. After that a song of welcome to their Imperial Majesties composed form the occasion was sung by the choir.

जनगणमन यह गीत सर्वप्रथम कलकत्ता के १९११ के कांग्रेस अधिवेशन में दूसरे दिन गाया गया। पहले दिन वंदे मातरम् का गायन हुआ। १२ दिसम्बर १९११ पंचम जॉर्ज ने दिल्ली में वंगभंग रद्द की घोषणा की थी। और कांग्रेस अधिवेशन के दो दिन पश्चात् वे कलकत्ता आनेवाले थे। उनके स्वागत हेतु एखाद् गीत की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। तभी रविंद्रबाबू का यह गीत उभर आया। स्वयं रविबाबू लिखते है - मेरे एक उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी मित्र पंचम जॉर्ज के स्वागातार्थ कविता लिखने के लिये सूचना की। उसके स्थानपर मैंने 'भारत भाग्य विधाता' कविता लिखी। वह पंचम जॉर्ज को नहीं ईश्वर को संवोधित थी।

सरकारी परिपत्र में कहा गया है महात्मा गांधी जन-गण-मन को मात्र एक गीत नहीं बल्कि भक्ति स्तवन बताते हैं। यह गीत एक राजनीतिक बैठक में पहली बार २७ दिसम्बर १९११ को गाया गया, कांग्रेस अधिवेशन के दूसरे दिन। पहले दिन परंपरानुसार वंदे मातरम् का गायन हुआ था।

When the proceddings of the Indian National Congress began on Wednesday 27the Dec. 1911, a Bengali song in welcome of the Emperor was sung. A resolution welcoming the Emperor & Empress was also adopted unanimously.

[India 29-11-1911]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस गीत के 'भारत भाग्यविधाता', राजराजेश्वर ऐसे कुछ विशेषणों से स्वाभाविक संभ्रम निर्माण हुआ। 'शनिवरेर चिठि' इस बंगाली पत्रिका के संपादकीय ने इस संबंध में लिखा है - It is impossible to justify this song as one addressed to God & not to the King".

विवादों के अंगारे कई दिनों तक भभकते रहे। वह सब पढ़ते-पढ़ते मन में आता है। रविबाबू ने १९११ में स्टेट्समन में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। २६ वर्षोंतक वे मौन रहें और १९३७ में प्रथम बार ऐसी प्रतिक्रिया प्रकट की ऐसा क्यूं?

परंतु अब ये प्रश्न प्रश्न ही रहनेवाले है। एक बात तो निश्चित है कि वह पंचमजार्ज के आगमन के समय गाया गया था। किसी का स्तुतीगीत - राष्ट्रगीत कैसे हो सकता है? वाचकों के सुविधा के लिये संपूर्ण गीत उधृत किया है -

जनगणमन-अधिनायक

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारतभाग्यविधाता।
पंजाब सिंधु गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल वंग
विंध्य हिमाचल,यमुना गंगा उच्छलजलधितरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगणमंगलदायक जय हे भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ।।

अहरह तव आव्हान प्रचारित, शुनि तव उदार वाणी
हिंदु बौद्ध शिख जैन पारसिक मुसलमान ख्रिस्टानी
पूरब-पश्चिम आसे तव सिंहासन-पाशे,
प्रेमहार हय गांथा।
जनगण-ऐक्यविधायक जय हे भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय; जय हे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पतन-अभ्युदय-बंधुर पन्था, युगयुगधावित यात्री,
हे चिरसारथि, तव रथचक्रे मुखारित पथ दिनरात्रि ।
दारुण-विप्लव-माझे, तव शंखध्वनि बाजे,
संकटदुःखत्राता ।
जनगणपथपरिचायक जय हे भारतभाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ।।

घोर तिमिरघन निविड़ निशीथे पीड़ित मूर्छित देशे,
जाग्रत छिल तव अविचन मंगल नतनयने अनिमेषे।
दुःस्वप्ने आतंके रक्षा करिले अंके,
स्नेहमयी तुमि माता।
जनगणदुःखत्रायक जय हे भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ।।

रात्रि प्रभातिल, उदिल रविच्छवि पूर्व-उदयगिरिभाले,
गाहे विहंगम, पुण्य समीरण नवजीवनरस ढाले।
तब करुणारुण-रागे निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा।
जय जय जय हे, जय राजेश्वर, भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।।

****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

New Activities

"Bande Mataram" Students. The outstanding event of the year was the admission to the University of about five hundred students who had to leave Osmania University in November-December, 1938, under circumstances connected with the prohibition of the singing of the "Bande Mataram". Heavy as was the responsibility of admitting students whose membership was so recently terminated by a sister University of a neighbouring state, the University felt - almost unanimously - that it would be proving false to the traditional ideals of a University, if it failed to respond to the appeal of these young men for completing their interrupted educational career. Accordingly, the University Court, by amendment of the Statutes, empowered the Academic Council hold certain examinations twice in the year 1939; technical difficulties relating to the admission of the students were removed by appropriate amendments of the Ordinances; changes were made in the lists of text-books, so as to give recognition, as far as possible, to the books studied by the students in Osmania University; they were admitted to the University College of Law, College of Science, Robertson College, the City College, and the Government Engineering School, the University offering to meet the financial deficit, if any, resulting from the admission in the case of the Government Colleges; and special courses were provided during February-June, 1939, to enable students in the final year of their course to complete their studies. No departure from the academic standard of the University was permitted and English remained the medium of their instruction and examination, as required by the University Ordinances.

Extract from the Annual Report of Nagpur University for the year 1938-39.

(नागपुर विद्यापीठ के सौजन्य से)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Pandit Jawaharlal Nehru on National Anthem of India and its Tune

Pandit Nehru, who was replying to Mr. V. C. Kesava Rao, said :

"This question was addressed to my colleague, the Home Minister. But as I have been largely concerned with this matter, I am taking the liberty of answering it myself. I am grateful to the Hon'ble Member who has put this question as this enables the Government to remove certain misapprehensions on the subject."

"This question of having National Anthem tune to be played by orchestras and bands became an urgent one for us immediately after August 15, 1947. It was as important from the point of view of our Defence Services and our foreign embassies and legations and other establishments. It was obviously not suitable for 'God Save The King' to be played by our army bands, or abroad, after the changeover to independence. We were constantly being asked as to what tune should be played on such occasions. We could not give an answer because the decision could only be made ultimately by the Constituent Assembly."

The 'Jana-Gana-Mana' tune, slightly varied, had been adopted as National Anthem by the Indian National Army in South-East Asia and had subsequently attained a degree of popularity in India also.

The matter came to a head on the occasion of the General Assembly of the United Nations in 1947 in New York.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Our delegation was asked for our National Anthem for the orchestra to play on a particular occasion. The delegation possessed a record of 'Jana-Gana-Mana' and they gave this to the orchestra who practiced it. When they played it before a large gathering it was very greatly appreciated, and representatives of many nations asked for a musical score of this new tune which struck them as distinctive and dignified. This orchestral rendering of 'Jana-Gana-Mana' was recorded and sent to India. The practice grew for our Defence Services bands to play this tune, and foreign embassies and legations also used it whenever occasion required. From various countries we received messages of appreciation and congratulation of this tune, which was considered by experts and others as superior to most of the National Anthems which they had heard. Many expert musicians in India and abroad, as well as many bands and orchestras practiced it, and sometimes slightly varied it, with the result that the All-India Radio collected quite a number of renderings.

Apart from the general appreciation with which this tune was received, there was at the time not much choice for us, as there was no proper musical rendering available to us of any other National Song which we could send abroad. At that stage, I wrote to all the Provincial Governors and asked their views about our adopting 'Jana-Gana-Mana' or any other song as the National Anthem. I asked them to consult their Premiers before replying. I made it perfectly clear to them that the final decision rested with the Constituent Assembly, but owing to the urgency of some directions being sent to foreign embassies and the Defence Services, a provisional decision had become essential. Every one of these Governors, except one (the Governor of the Central

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Provinces) signified their approval of 'Jana-Gana-Mana'. Thereupon, the Cabinet considered the matter and came to the decision that provisionally 'Jana-Gana-Mana'. Thereupon, the Cabinet considered the matter and came to the decision that provisionally 'Jana-Gana-Mana' should be used as the tune for the National Anthem till such time as the Constituent Assembly came to a final decision.

Instructions were issued accordingly to the Provincial Governors. It was very clear that the wording of 'Jana-Gana-Mana' was not wholly appropriate and some changes would be necessary. What was important was the tune to be played by bands and orchestras and not the wording.

Subsequently the new Premier of West Bengal informed us that he and his Government preferred 'Vande Mataram'.

That is the position at present. It is unfortunate that some kind of argument has arisen as between 'Vande Mataram' and 'Jana-Gana-Mana'. 'Vande Mataram' is obviously and indisputably the premier national song of India, with great historical tradition and intimately connected with our struggle for freedom. That position it is bound to retain and no other song can displace it. It represents the passion and poignancy of that struggle, but perhaps not so much the culmination of it.

In regard to the National Anthem tune, it was felt that the tune was more important then the words, and that this tune should be such as to represent the Indian musical genius as well as to some extent the western, so that it might equally be adaptable to orchestral and band music, and for being played abroad. The real significance of the National Anthem is perhaps more abroad than in the Home country. Past experience has shown us that 'Jana-Gana-Mana' tune has

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

been greatly appreciated and admired abroad. It is very distinctive and there is a certain life and movement in it. It was thought by some people that the 'Vande Mataram' tune with all its very great attraction and historical background was not easily suitable for being played by orchestras in foreign countries, and there was not enough movement in it. It seemed, therefore, that while 'Vande Mataram' should continue to be the national song par excellence in India, the National Anthem tune should be that of 'Jana-Gana-Mana'. The wording of 'Jana-Gaṇa- Mana' is to be suitably altered to fit in with existing circumstances.

This question has to be considered by the Constituent Assembly, and it is open to that Assembly to decide as it chooses. It may decide on a completely new song or tune if such is available.

A statement made in reply to a short notice question in the Constituent Assembly (Legislative), New Delhi, August 25, 1948.

- - - - -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[23rd September, 1937]

o

Member went out not by way of insult but in order to extricate himself from what he considered to be interference with his own religious feeling in the matter. He may be right or he may be wrong. I would ask you, Sir, to consider the whole position calmly and after hearing him later.

- - - - -

[21st December, 1937]

Mr. SPEAKER: – "The House was informed last night that Hon. Members were at perfect liberty to absent themselves at the time of prayer as it is done in all the Empire Parliaments. There is no obligation on any Member, either in the House of Commons or in any other Empire Parliament, to attend the prayer. So also, at any time, in any proceedings of the House, Members are not bound to take part. This point will be fully considered again by the whole House after the Conference has met and considered this matter. The matter will be given the longest time for consideration and best attention possible."

- - - - -

◇ [Tuesday, the 1st March 1938.]

THE HON. MR. C. RAJAGOPALACHARIAR: – "Sir, I would like, with your permission, to make a request, on behalf of Government, with reference to the procedure as to prayers before the conduct of the business of the House. We are aware of the deeply religious and patriotic motives as well as practical wisdom and respect for the general parliamentary practice of civilized nations on which was based the procedure you were hitherto pleased to direct. But unfortunately misunderstandings have arisen in certain quarters, so that

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

objections have been raised to what had been these twenty-five years and more practically accepted universally as an expression in song of prayerful devotion and love of motherland in which all classes and communities might share with equal fervour and which would be the best basis for corporate service to the State. We have been disappointed in our hope that the misunderstandings have been exploited to create increasing bitterness and hostility. We feel that the very object we have in view may be frustrated by such bitterness as we see fostered. We are firm believers in the policy of peace and mutual adjustment. We are, therefore, sure that in course of time these misunderstandings will clear away. I would, therefore, request you on behalf of Government to hold this matter in abeyance. Let us for the time being deprive ourselves of the inspiration and the joy of this joint prayer and national invocation, seeing that some of our colleagues persist in feeling unhappy over it. Those who have been intimately associated with or partaken in the national struggle can understand the feelings that have grown round the sacred words and the solemn tones of the Bande Mataram song. It may not be realized by all what supreme sacrifice it involves, but we can as a nation advance only by such sacrifices. Our action may be misconstructed as dictated by fear or weakness. But we should resist the temptation to be moved by such considerations when national interests demand a policy or a step to be taken in the cause of national harmony. We have faith enough to hope that these mists will clear away soon. I request of you, Sir, to hold the matter in abeyance until an understanding is reached."

THE MADRAS LEGISLATIVE ASSEMBLY
SECOND SESSION OF THE FIRST LEGISLATIVE ASSEMBLY
UNDER THE GOVERNMENT OF INDIA ACT, 1935.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

राष्ट्रगीत राष्ट्र का मानबिंदू है। परंतु धार्मिक श्रद्धा के आधार पर अगर कोई राष्ट्रगीत गाने से इंकार करता है तो उसको राष्ट्रगीत गाने के लिये बाध्य नही कर सकते है ऐसा निर्णय १९८६ में सर्वोच्च न्यायालय ने दिया। धर्म यह व्यक्तिगत चीज होने के कारण यह राष्ट्रीय कर्तव्य पालन में बाधा बन कर नही आना चाहिये। ऐसा होने पर धर्मनिरपेक्ष राज्य की जड ही उखड जायेगी। इस निर्णय का पुनर्विचार करने के लिये सर्वोच्च न्यायालय को हर राष्ट्रप्रेमी व्यक्ती ने व्यक्तिगत वा सामूहिक निवेदन करना चाहिये। विस्मृति की गर्त में पड़ा यह विषय आज भी स्थानस्थान पर राष्ट्रगीत के विरोध में उठ रहे आवाज के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय देते समय संविधान की धारा १९ (१) (अ) एवं २५ (१) का आधार दे कर कहा था कि राष्ट्रगीत गाना अनिवार्य करने पर इन धाराओं से प्रदत्त अधिकारों का हनन होता है एवं राष्ट्रगीत गाना अनिवार्य करने का निर्देश संविधान में नही है। ऐसा नियम बनाने पर भी उक्त धाराओं के कारण वह निष्प्रभ होगा ऐसा ध्वन्यर्थ निकलता है। कानूनी तज्ञों ने संविधान की धारा ५१ (अ)(अ) के परिप्रेक्ष्य में सर्वोच्च न्यायालय का यह निर्णय संविधान विरोधी है ऐसा प्रमाणित करने का समय आया है क्यों कि ऐसी सहूलत देना संविधान की धारा १४ व १५ (१) के विरोध में होगा।

सामान्य प्रजा के अनुसार अधिकार एव कर्तव्य एकही सिक्के के दो पहलू है। एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व ही नही हो सकता। कर्तव्य पालन के विना अधिकार प्राप्त करने की कल्पना करना सर्वथा अनुचित है। व्यक्ती के मूलभूत अधिकार से राष्ट्र के मूलभूत अधिकार श्रेष्ठ है अतः व्यक्ति को कर्तव्यपालन के लिये सरकार बाध्य कर सकती है। १९७१ में पारित राष्ट्रीय सम्मान निर्बंध के अनुसार राष्ट्रगीत गाने में बाधा लाने में बाधा लाना दंडपात्र अपराध माना गया है। सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय से नागरिकों में धर्म के आधार पर भेदाभेद करने का दोष आता है। यह तो राष्ट्र के धर्मनिरपेक्षता की नीति का ही सीधा सीधा अवमान है। राष्ट्र की एकता अखंडता, नागरिकों को समान अधिकार देने का आश्वासन को बाधा लाने वाले इस निर्णय का पुनर्विचार करने हेतु जनजागरण आवश्यक है।

****

<u>छपते छपते</u>

जनवरी ९४

दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराणा द्वारा सभी विद्यालयों मे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंदे मातरम् गीत गाना अनिवार्य किया गया

दि. २३ मार्च १९९४

नागपुर के महापौर श्री अटल बहादूर सिंग का मनपा के सभागृह का कार्य 'वंदे मातरम्' गीत से करने का निर्णय।

जालियनवाला बाग के हौतात्म्य को ७५ वर्ष पूर्ण हो रहे है। भगवतसिंह को ६३ साल पूर्व फांसी दी गयी- उनके हौतात्म्य को याद रखते हुए उनको अभिवादन कर कार्य का प्रारंभ वंदे मातरम् से करेंगे। 'वंदे मातरम्' पर प्रश्नचिन्ह लगाया जा रहा है, उसको संप्रदायिक बनाने का प्रयत्न हो रहा है इस लिये मैंने यह निर्णय लिया।

दि. १८-११-१९९३ *मुंबई तरुण भारत में प्रकाशित*

रा. से. समिति की पहल से आयोजित 'वंदे मातरम्' कार्यक्रम में खा. अटलजी-

'वंदे मातरम्' अर्थात राष्ट्र की धडकन। उसकी मुर्तिपूजा की आड में विरोध करनेवाले राजकीय दृष्टी से भून रहे है। नमाज अदा करने के लिये उनको धरती की आवश्यकता होती है। अप्रत्यक्ष रीती से वे धरती माँ को ही वंदन करते है। जो धरती हमारा पालनपोषण करती, आधार देती है उसका स्मरण कर उसका संरक्षण करने का विचार गलत कैसे हो सकते है?

****

"वंदे मातरम् हमारी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाता है।"

"सच्चा मुसलमान समस्त ब्रह्मांड की सृष्टी करनेवाले अल्लाह की ईबादत करता है। ईश्वर या अल्लाह की बनाई धरती, जल, अग्नी, सूर्य, चांद, सितारे या मानव आदि की उपासना करने की इजाजत 'इस्लाम' कभी नही देता। इसीलिए मुसलमान बंधू 'जन-गण-मन' तो गा सकते है, पर मातृभूमी की उपासना में गाया हुआ गीत 'वंदे मातरम्' गाने में हमें एतराज है। क्यों कि सर्वव्यापी 'अल्लाह' के अलावा किसी अन्य की पूजा आदि करने वाले का इस्लाम से नाताही टूट जाता है।"

"वंदे मातरम" में कवी मातृभूमी से कहता है कि तूही हमें जिलाती (जिवंत) है, खिलाती है, अपने आप में समा लेती है, हर चीज पर तेरा अधिकार है।"

(रहीम भारती - २४/४/९४ तरुण भारत)

****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाराष्ट्र विधानसभा में वंदे मातरम्

गुरुवार - दिनांक १५ मार्च १९७३, विधानसभा की बैठक, विधान भवन बंबई में प्रातः १०.३० को प्रारंभ हुई। अध्यक्ष श्री. शे.कृ. वानखेडे सभागृह में आसनस्थ होत ही सभी सदस्यों ने 'वंदे मातरम्' गीत गाना प्रारंभ किया। मा. अध्यक्षजी भी खडे होकर उसमें संमिलित हुएँ। गीत समाप्ति के पश्चात् 'भारत माता की जय' "वंदे मातरम्" घोषणाएँ हुई।

मुंबई महापालिका के ऊर्दू विद्यालयों से 'वंदे मातरम्' बोलने तथा गाने के लिये नकार दिया था - इस संदर्भ में सर्वश्री रा.गो. मिराशी, ग.शं. लोके, रा.का. म्हाळगी, कृ.धों. भेंगडे - इत्यादि महानुभावों द्वारा नियम २८२ के तहत प्रस्तुत प्रस्तावों से उध्दृत कुछ अंश (खंड ३७ क्रमांक २२ पृष्ठ क्रमांक २३४६, २३४७, २३५१, २३५४, २३५५, २३५६, २३५७, २३५८) प्रस्तुत हैं।

Shri F.M. PINTO : "There is no question of any compulsion, about the singing of Vande Mataram'. This national song stirred the hearts of millions of people and spurred them into action to participate in the freedom struggle. People while singing this song got inspiration and underwent sufferings, imprisonment and even had the courage to face death."

'Sir, the broad meaning of 'Vande Mataram', if I have understood the same, is 'Mother, I salute thee'. In good old days, when 'Vande Mataram' song was sung from the Congress platforms, it was sung with folded hands and people used to actually bow when the words 'Vande Mataram' were uttered. It was Pandit Jawaharlal Nehru who then gave a

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

directive that 'Vande Mataram' should be sung by standing in attention with head erect and without bowing down. Since then nobody bows down, but all give respect and reverence, to the national song which is on par with 'Jana Gana Mana'. There should be no objection to it from any section, even from the section of Muslims, who have raised this controversy.' ----------------------------------

Shri G.N. BANATWALA : 'To-day, when the August House commenced its proceedings with Vande Mataram, I too stood up in silence though I did not join in the singing. I did not join in the chorus. That shows, there is no question of our disrespect to Vande Mataram. The Muslim objection to the singing of it by themselves is based on the fact that the song is idolatrous in nature.' ----------------------

Further in the book "The Partition of India - Policies and Perspectives 1935-47", edited by C.H. Philips and Mary Doreen Wainwright, at page 328 says at page 328, and I quote :

"Before independence, the Indian National Congress adopted Vande Mataram as the national song of India, without regard to the fact the this song, which occurs in Bankim Chandra Chatterjee's Anandamath is written as a battle cry against the foreigner, including the Muslims." -----------

श्री. एस्.ई. हसनेन (रत्नागिरी) : 'इज्जत मआब सदर सबाह, गुझश्ता कई दिनों से चंद फिरकापरस्तों ने "वंदे मातरम्" को बहाना बनाकर बम्बई की इस पुर-अम्न फिजा को इस कदर, जहर-आलूद बना दिया कि नतीजे के तौर पर फसाद फूट पडा - दो बेगुनाह इन्सानों की जाने झाईया हो गई,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ लोग जख्मी हो गये, चंद बेगुनाह इन्सानोकी इमलाक को नुकसान पहुंचा, जिन फिरकापरस्तों की इश्तिआल अंगेझीयों से ये सब कुछ हुआ वे पिरकापरस्त हिंदु हों या मुसलमान हों मैं इन तमाम फिरकापरस्तों की सख्त से सख्त अलफाज में मझम्मत करता हूँ।' ----------------

वंदे मातरम् हमारा वह मेहबूब कौमी तराना है जिसको इस मुल्क के करोडो अवाम् निस्फ सदीसे भी ज्यादा अर्सेसे फखर के साथ गाते आये हैं और इतने बर्सों में वंदे मातरम् अगर इस्लाम के मुनाफी न हो सका तो अब इस वंदे मातरम् को इस्लाम के मुनाफी करार देकर ये
११-३० फिरकापरस्त क्यों सीधेसादे और भोलेभाले अवाम को इश्तिआल दिला रहे हैं।'

जंगे आझादी के दौरान हमारे मजाहिदीन-आझादी एक हाथ में तिरंगा झंडा लेकर और लबों पर वंदे मातरम् का तराना, गैर मुल्की ताकत के साथ जान की बाजी लगाकर अपने मुल्क को आझाद कराने के लिए टक्कर लेते रहे, गैर मुल्कीयों की पुलीस हमारे मजाहिदिन आझादी के हाथ तोड देते थे मगर फीर भी हातों से तिरंगा झंडा नहीं छुटता था। गैर मुल्की दरींदे-सिफत् पुलिस हमारे मजाहिदिन-आझादी के सरों को फोड डालते थे फिर भी दम तोडते वक्त भी इन बहादरों के लबों पर वंदे मातरम् का तराना ही हुआ करता था। ------

हमारे पैगंबरने हमे बताया है कि जन्नत माँ के कदमों में होती है याने जमीन पर है; तो हम यह पूछना चाहते हैं कि वह जमीन जो हमारी माओं को और करोडो अव्वाम को जिंदा रखने के लिए पानी और अनाज मुहय्या करती है हम सबोकी जिंदगी के लिए हर किस्म का सामान मुहय्या करती है वह हमारी मुकद्दस जमीन क्या हमारी माँ से कमतर है? (थंपिंग) --------------

हमारे प्यारे रसूल इसी मुकद्दस जमीन में मदफन हैं। हमारे अवलिया और बुजुरगाने दीन इसी जमीन में दफन हैं तो क्या ये जमीन हमारे लिए मुकद्दस नहीं है? --------------------------

अगर हम इस मुकद्दस जमीन का अहेतराम करते हैं तआजिम् करते हैं तो हम इस्लाम के खिलाफ किसी किस्म की कोई हरकत नहीं करते। ----

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"अभी अभी श्री बनातवाला सहाब ने फर्माया कि जब हमारे पैगंबर हिजरत फर्मा रहे थे तब उन्होंने मक्के की हर चीज यहां तक कि मदीना के पहाड़ों की भी तारीफ की। जहां तक मेरा ख्याल है पहाड़, मट्टी के बने हुए हैं इसलिहाजा अगर हमारे रसूल मट्टी के बने हुए पहाड़ों की तारीफ करते हैं तो हमने अगर इस मट्टी की, इस धरती माता की तारीफ की तो इसमें क्या हर्ज है?'

श्री. एस.ई. हसनेन् : जनाब बनातवाला सहाब ने अमरिका के एक फिरके का हवाला देते हुए कहा कि, "इस फिरके ने जब अमरिकी क्रौमी परचम् की सलामी से इन्कार कर दिया तब अमरिकी अदालत ने उनके नवक्कफ को तसलीम कर लिया।" "I am not interested in what happened in America, but I am concerned in what is happening in my country." (थंपिग) ------------------

सदरें मोहतरम्, मैं रोजाना देखते आया हूं कि जब भी श्री. बनातवाला असेंब्ली हॉल में तशरीफ लाते है तो सबसे पहले वे आपके सामने झुक्कर आदाब बजा लाते हैं, मैं पूछना चाहता हूँ सदर सहाब, कि आप मट्टी से बने हुए हैं और जब आप बजाते खुद इस धरतीमाता का एहतराम करते हैं तो आपके सामने झुकनेवाले श्री बनातवाला को आप जिस धरती के सामने झुकते हैं उस धरती के सामने झुकने में क्योंकर एतराज हो सकता है। (थंपिंग) ------------

जनाब सदर, अल्ला तालाने जब आदम को मट्टी से बनाया और शैतान को आग से बनाया तब शेतान और तमाम फरिश्तों को अल्ला ने हुकूम दिया कि वे आदम को सुजदा करें तब तमाम फरिश्तों ने मट्टी से बने हुए आदम को सुजदा किया, सिर्फ शैतान ने मट्टी से बने हुए आदम को सुजदा करने से इन्कार किया और खुदा की नाफर्मानी की। ----------------------

अगर मुसलमान मरता है तो एक इन्सान मरता है अगर हिंदु मरता है तो भी एक इन्सान मरता है, हमें फिरकापरस्ती का खात्मा करके इंसानों को बचाना है, इन्सानी जानों को बचाना है, इन्सानीयत का तहफ्फुज करना है, इन्सानी कदरों का तहफ्फुज करना है और इसलिए इन्सानीयत नवाज इन्सान का फर्ज है कि वह अपनी पूरी ताकत से फिरकापरस्तों का मुकाबला करके फिरकापरस्ती का खात्मा करे। मजहब, धर्म, सुबा और जबान के बहाने एक फर्द, जो दूसरे इन्सान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को किसी और इन्सान का लहू पीने के लिए उकसाता है वह इन्सान नही, हैवान होता है। ऐसे हैवानो का इस मुहज्जब इन्सानी समाज में कोई मकाम नही हो सकता। हिंदु, मुस्लिम, फारशी, सीख, इसाई, बुद्धीस्ट सब एकही अल्ला, परमेश्वर, गॉड के बंदे है और हम सबको एक दुसरे के साथ मिलकर ही प्यार मुहब्बत से इसी मुल्क में रहना है। फिरकापरस्त हैवान होते है, और इन्सान का मेल हो नहीं सकता. फिरकापरस्त खवा हो हिंदु हो या मुसलमान, सीख हो या ईसाई, पारसी हो या बुद्धिस्ट इनका इस देश में कोई मकाम नहीं है ऐसे फिरकापरस्तों को अरबी समंदरमे लेजाकर छोड दिया जाये या हिमालया की चोटी के उपसार उठाकर फेंक दिया जाये ताकि वे कभी इस देश में किसी भी इन्सान के जान या माल को नुकसान न पहुँचा सके। सब इन्सान एक सा है, बराबर है। न कोई उंच न कोई नीच। ---------------------

जनाबे सदर साहब, यहाँ पर मै. यह वाजे करना चाहता हूँ कि अगर किसी ने भी हमें वंदे मातरम् गाने से रोका तो ऐसा हुकूम चाहे वह किसी का भी हो हम हरगीज नहीं मानेंगे। हम वंदे मातरम गायेंगे। इस सिलसिले में हमने एक याददाश्त हमारे सदर श्री. व्ही.व्ही. गिरी साहब, हमारी मेहबूब वजीरे आझम श्रीमती इंदिराजी गांधी और हमारे प्यारे वजीरेआला श्री. वसंतरावजी नाईक साहब को फरवरी को पेश कर चुके है और हमने बताया है कि हमारा कौमी तराना वंदे मातरम् इस्लाम के मुनाफी नहीं है। अगर किसी ने हमको वंदे मातरम् गाने से रोकने की कोशिश की तो हम इसे बरदाश्त नहीं करेंगे। वंदे मातरम् गाने से हमें रोका गया तो हमारे कौमी जझबात को ठेस पहुंचेगी, हमारे हुब्बूलवतनी के जझबात को ठेंस पहुचेंगी। लिहाजा मोहतरम् सदर साहब हम आज फिर एक बार आपके जरिये हुकूमते महाराष्ट्र से अपील करेंगे कि हुकूमते महाराष्ट्र मरकजी हुकूमत से सिफारीश करें कि हमारे मेहबूब कौमी गीत वंदे मातरम् को तराना जन गन मन के बराबर दर्जा दिलाने के लिए तमाम जरूरी इकदामात उठाये। (थंपिंग) I warn the communalist once again: do not try to spoil the peaceful atmosphere of this city and our country. We shall never tolerate it. Communal harmony and national integration is more to me than my life. You communalists, hands off the innocents. *****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संदर्भ ग्रंथ सूचि

१) वंदे मातरम् इतिहास कथा - अमरेंद्र गाडगीळ

२) वंदे मातरम् का इतिहास - विश्वनाथ मुखर्जी

३) Vande Mataram - V. Rangrajan

४) Story of a song Ecstacy & Agony - Shiv Ramulu

५) Vande Mataram - Mooni Barachi

६) Vande Mataram - Amarendra Gadgil

७) Vande Mataram to Jana Gana Mana - V.H. Desai

८) वंदे मातरम् - श्री. प्रभाकर वैद्य

९) वंदे मातरम् - श्री. वसंत पोद्दार

१०) वंदे मातरम् स्मारिका - ज्ञानोदय प्रकाशन (वाराणसी)

११) वंदे मातरम् शताब्दि स्मारिका (कलकत्ता) - बड़ा बाजार पुस्तकालय

१२) वंदे मातरम् - सौ. सुशील अभ्यंकर

१३) एकता - ऑगस्ट १९६७

अन्य

१४) बखर कांग्रेसची - शिरीष सहस्त्रबुध्दे

१५) कांग्रेस के सौ वर्ष - मन्मथनाथ गुप्त

१६) क्रांति कथाएँ - श्रीकृष्ण सरल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१७)	कांग्रेस का इतिहास	-	पट्टाभिसीतरामय्या
१८)	India divided	-	Dr. Rajendra Prasad
१९)	A centenary History of the Indian National Congress	-	B.N. Pande
२०)	Nation in making	-	Surendranath Banerjee
२१)	मृत्युजंयाचा आत्मयज्ञ	-	श्री. वि.श्री. जोशी
२२)	अग्निपथावरील परागंदा	-	श्री. वि.श्री. जोशी
२३)	भारतीय स्वातंत्र्य का इतिहास	-	ना. वि. काकतकर
२४)	योगी अरविंद	-	एम.पी. पंडित
२५)	कथा महामानवाची	-	प्रा. शिवाजीराव भोसले
२६)	लाला लजपतराय		
२७)	लाला हरदयाल	-	प्रो. धर्मवीर
२८)	बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय	-	एस.के. बोस
२९)	टिळक भारत	-	य. गो. जोशी
३०)	विनायक दामोदर सावरकर	-	शिवकुमार गोयल
३१)	क्रांतिवीर बाबाराव सावरकर	-	प.न. गोखले
३२)	डॉ. हेडगेवार	-	मु.कृ. चौथाईवाले
३३)	भगिनी निवेदिता	-	सेविका प्रकाशन
३४)	गान हिरा	-	
३५)	बंकिम चंद्र	-	चेतन शर्मा
३६)	हैद्राबाद संग्रामाच्या आठवणी	-	स्वामी रामानंद तीर्थ
३७)	क्रांति के चरण	-	प्रयागदत्त शुक्ला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३८) और देश बँट गया - हो. वे शेषाद्रि

३९) हिंदु मुस्लिम ऐक्य - भ्रम आणि सत्य - ब. ना. जोग

४०) Our National Songs - Publications Division

४१) India's National Anthem - Prabodhchandra Sen

४२) आनंदमठ - श्री. बंकिमचंद्र

४३) राष्ट्र सेविका १९७५ - सेविका प्रकाशन

४४) प्रज्वलंत - १९७३

४५) केसरी - १९२४, १९३५, १९३६, १९३८, १९३९, १९४३, १९४७, १९४९, १९५०

४६) मराठा - १९०५ - १९२३

४७) लोकप्रभा - ६ डिसे. १९९२

४८) पांचजन्य, ऑर्गनायझर - ६ डिसे. १९९२

४९) तरुण भारत, नागपूर - २-१-९२, १८-११-९२, १-२-९३, २६-१-९३

५०) देवगिरी समाचार - ९-११-९२

५१) हरिजन - १-७-१९३९, २२-७-१९३९

५२) हरिजन सेवक - १५-१०-१९३८.

५३) मनोरमा इयर बुक - १९९३

५४) देवगिरी त.भा. - १९९२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारा राष्ट्रगीत

वंदे मातरम्
सुजलाम्, सुफलाम, मलयजशीतलाम् ।
सस्यश्यामलाम् ! मातरम् ! वन्दे मातरम् ।
शुभ्र-ज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीम्, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् ! मातरम् ! वन्दे मातरम् ।।१।।

कोटि कोटि-कंठ कलकल-निनाद- कराले
कोटि कोटि भुजैर्धृतखरकरवाले
अबला केनो माँ एतो बले
बहुबलधारिणीम्, नमामि तारिणीम् !
रिपुदलवारिणीम् मातरम् ! वन्दे मातरम् ।।२।।

तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि तुमि मर्म, त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहुते, तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
तोमारई प्रतिमा गडि मंदिरे मंदिरे ! मातरम्
वन्दे मातरम् ।।३।।

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी
नमामि त्वाम्, नमामि कमलाम्, अमलाम्, अतुलाम् ।
सुजलाम्, सुफलाम्, मातरम् ! वन्दे मातरम् ।।४।।

श्यामलाम्, सरलाम्,
सुस्मिताम्, भूषिताम्,
धरणीम्, भरणीम्, मातरम् ! वन्दे मातरम् ।।५।।

भारत माता की जय ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi